देवराज सुराणा :: अभयराज नाहर

अध्यक्ष मंत्री

श्री जैन दिवाकर दिव्य ज्योति कार्यालय
मेवाड़ी बाजार, ब्यावर (राजस्थान)

मुद्रक
बालकृष्ण उपाध्याय
श्री नारायण प्रिन्टिंग प्रेस
ब्यावर

श्री उपाध्याय महाराज के जीवन-चरित्र के सहायतार्थ देने वाले दान दाताओं की सूची—

१०१) शाह फूलचन्दजी भवरलालजी तालेड़ा कुष्टगी
६०) „ सुखराजजी सेसमलजी सोरापुर बेडर
५०) „ झुमरमलजी शांतिलालजी जैन गाव सेंदापुर
५०) „ मिट्ठालालजी कुशलराजजी छाजेड़ बैंगलोर
५१) „ इन्दरचन्दजी धोका गाव अघोनी
५०) „ हीरालालजी लालचन्दजी धोका गांव यादगिरी
१००) „ चौथमलजी वोहरा गाव रायचूर
५०) „ सोहनलालजी आचलिया गाव मसगी
५१) „ मनोहरचन्दजी देवराजजी गाव गजेन्द्रगढ़
५१) „ नेमीचन्दजी हीरालालजी गाव रायचूर
५०) „ कुनणमलजी पुखराजजी लूंकड़ बैंगलोर
५०) „ जालमचन्दजी माणकचन्दजी रायचूर
५१) „ मोतीलालजी अनराजजी वोहरा गाव इलकल
५०) „ नगराजजी लालचन्दजी खिवेसरा सिन्धनूर
५१) „ कालूरामजी चादमलजी रायचूर
५१) एस० पेमराजजी वजार रोड मेलापुर
१००) शाह मिश्रीलालजी राका की धर्मपत्नि मिसरी बाई यदूपेट मद्रास
५१) „ कालूरामजी केसरीमलजी कुपल
५१) „ भगवानचन्दजी मिट्ठालालजी कुपल
५१) „ पन्नालालजी गुलाबचन्दजी सकलेचा बैंगलोर
५०) „ हजारीमलजी मुलतानमलजी बैंगलोर

५०) शाह दुलराजजी मोहनलालजी बैंगलोर
५०) " भवानमलजी मोहनलालजी बैंगलोर
५०) " कुमरलालजी जैन मद्रास
५०) " सोहनलालजी चोपड़ा कुप्पल
५०) " कमलराजजी सुपुत्र लालचन्दजी बागमार रायचुर
५०) " माणकचन्दजी धनराजजी लोढ़ा पारनेर वाला
१००) " बख्तावरचन्दजी माणकचन्दजी बेताला बागलकोट
५०) " हीरालालजी जोरावरमलजी बेताला बागलकोट
५१) श्री संघ जावनी लिंगसुगुर जिला रायचुर

उपाध्याय श्री प्यारचन्द सिद्धान्तशाला रतलाम की अपील एवं दानदाताओं की शुभ नामावली

——— :o: ———

उपाध्याय प० रत्न श्री प्यारचन्दजी म० सा० का स्वर्गवास स० २०१६ ता० ८–१–१९६० को गजेन्द्रगढ मे हुआ। स्वर्गवास के समाचारों से रतलाम सघ मे महान शोक व्याप्त हुआ। श्री सघ ने समस्त व्यापार बन्द रख कर शोक सभा का आयोजन आदि किया। बाद मे धर्म-प्रेमी श्रद्धालु श्रावकों ने यह विचार किया कि उपाध्याय श्रीजी की स्मृति रूप ठोस कार्य किया जावे।

स्वर्गीय उपाध्यायजी म० सा० की जन्मभूमि रतलाम ही है और इनके गुरुदेव श्री जैन दिवाकर प्रसिद्ध वक्ता प० मुनि श्री १००८ श्री चौथमलजी म० सा० का स्मारक भी यहा पर है जिसमें जैन दिवाकर छात्रालय गत तीन वर्षों से सुचारु रूप से चल रहा है।

स्वर्गीय उपाध्यायजी म० सा० परम गुरु-भक्त थे एव उनका ध्येय श्रमण वर्ग को विद्या अध्यय कराने का अधिक रहता था। अतः उन्हीं के पवित्र विचारों को मान देने हेतु ' उपाध्याय 'श्री प्यारचन्द सिद्धान्त शाला" चालु करने का निश्चय किया है। इस सिद्धान्त शाला के लिए रतलाम शहर अधिक उपयुक्त है, कारण कि यहा पर-श्रमण वर्ग का आगमन होता ही रहता है, तथा यहां पर करीब ४० वर्ष से स्थिवर मुनिराज एव महासतियांजी म० विराजमान रहते ही हैं।

श्रमण वर्ग के विद्याध्ययन के लिए इस प्रान्त में कोई व्यवस्थित प्रबन्ध नहीं है इसलिए इस सस्था का यहा होना नितान्त आवश्यक है।

स्थानीय दानवीर बन्धुओं ने इस महान् शुभ कार्य के लिये अच्छा सहयोग देने के लिये आश्वासन दिये हैं अत बाहर से अभी तक जिन जिन दानी श्रीमन्तों से आर्थिक सहायता प्राप्त हुई उनकी शुभ नामावली नीचे दी जा रही है और हम उनका हार्दिक आभार मानते हैं और समाज के दानी श्रीमन्तों से हमारा अनुरोध है कि श्री उपाध्यायजी म० की स्मृति में उनके आदर्श व्यक्तित्व के आस्तित्व रूप सिद्धान्तशाला हेतु आप अपने उदारचित से सहयोग प्रदान करने की कृपा करें। ताकि इस भागीरथ कार्य में हमें पूर्ण सफलता प्राप्त हो। हमें इन दो माह के अल्प समय में जो सहायता प्राप्त हुई है, उससे हमें महान् प्रेरणा मिली है कि अब जल्दी से जल्दी इस महान् कार्य को मूर्त रूप दे रहे हैं।

चांदमल पानोदिया
उपाध्याय श्री प्यारचन्द सिद्धान्त शाला
रतलाम

सहायता भेजने का पता:—
लालचन्द चांदमल पानोदिया
धमालखाना
रतलाम (मध्य प्रदेश)

दान दाताओं की शुभ नामावली

—:★:—

१११११) श्रीमान् हेमराजजी लालचन्दजी सींघी मद्रास
१००१) श्रीमती जयलक्ष्मीबाई हीम्मतलालभाई डोसी बम्बई (माटु गा
१००१) श्रीमान् नाथालालजी माणकचन्दजी पारीख „
१००१) „ कस्तुरचन्दजी कुन्दनमलजी लुंकड़ बैंगलोर
== पुखराजजी लुंकड़ की धर्मपत्नी की तरफ से भेंट
५०१) श्रीमान् माणकचन्दजी मोतीलालजी गाधी बम्बई माटु गा
४०१) श्रीमती कञ्चनबाई धर्मपत्नी सेठ हीराचन्दजी सीयाल मद्रास
३११) श्रीमान् अमोलकचन्दजी धरमचन्दजी रांका बैंगलोर
३००) „ खीमराजजी चोरड़ीया मद्रास
३००) „ गुप्त भेंट बैंगलोर
२५१) „ समरथमलजी ताराचन्दजी सकलेचा मद्रास
२५१) „ सायदासजी मोतीलालजी बोरा „
२५१) „ हजारीमलजी मुलतानमलजी मडलेचा बैंगलोर
२५१) „ सम्भूलालजी कल्याणजी बम्बई माटु गा
२०१) „ मिठालालजी कुशालजी छाजेड बैंगलोर
२०१) „ चम्पालालजी चेतनप्रकाशजी डुंगरवाल „
२००) „ मोतीलालजी लखमीचन्दजी कोठारी „
२००) „ मिश्रीलालजी चम्पालालजी राका मद्रास
२००) श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक सघ सिन्धनूर
(जि० रायचूर)
१५१) श्रीमान् गजराजजी शान्तिलालजी मूथा मद्रास
१५१) „ धनराजजी जयवन्तलालजी सुराना „
१५१) „ लखुमलजी रामनाथजी जैन दिल्ली

१५१) श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ करमाला (जि० सोलापुर)
१५१) श्रीमान् एच० धीसुलालजी एन्ड सन्स् आरकाट
१०१) „ चम्पालालजी सचेती की मातेश्वरी मिमीबाई मद्रास
१०१) „ पुखराजजी साहब „
१०१) श्रीमती ननीकुंवर चनरामजी मेहता „
१०१) श्रीमान् रतनचन्दजी भावरचन्दजी चोरडिया „
१०१) „ पन्नालालजी रतनचन्दजी कांकरिया बैंगलोर
१०१) „ गणेशमलजी मानमलजी बोहरा „
१ १) मागीलालजी पारसमलजी मद्रास
१०१) „ मागीलालजी गुगलीयेन पांडुचेरी
१०१) श्रीमती गुलाबबाई एस सिरमलचंदजी चोरडिया मद्रास
१ १) श्रीमान् जालमचन्दजी पारसमलजी बोकडीया „
१०१) „ अमोलकचन्दजी किशनलालजी बरमेचा पोरमपुर
१ १) „ स्वर्गीय गणेशमलजी मकलेचा की धर्मपत्नि मद्रास
१००) „ अमरचन्दजी रतनलालजी बोरा „
१००) श्री व स्थानकवासी महिला समाज शिरपनूर
८४) श्री व स्थानकवासी श्रावक संघ
ह० श्रीमान भवरलालजी मागीलालजी डुगरवाल मद्रास
८०) श्रीमान उदयमलजी नाबेड़ „
५ 1) तनमलजी व हेमालालजी वेदमुथा चालीसगांव
५ 1) उमा तालजी दुगावत धर्मपत्नि राधाबाई „
५ 1) „ ... नाजजी श्रीकमचन्दजी कोपर गुवा „
५१) „ गजमलजी कुंवरलालजी वेदमूथा „
५१) सरनमलजी मारटर मद्रास

५१)	श्रीमान्	पेमराजजी	मद्रास
५१)	"	जयवन्तमलजी चोरडिया	"
५१)	"	सोहनलालजी मेहता	"
५१)	"	मिश्रीमलजी पीपाड़ा	"
५१)	"	हिम्मतमलजी माणकचन्दजी छाजेड़	बैंगलोर
५१)	"	नेमीचन्दजी चादमलजी सीयाल	"
५०)	"	के. जी कोठारी एण्ड कम्पनी	मद्रास
५०)	"	मिश्रीमलजी मोहनलालजी	बैंगलोर
५०)	"	कस्तुरचन्दजी कुन्दनमलजी	"
४१)	"	तेजराजजी घीसुलालजी बोहरा	विरञ्जीपुरम्
३१)	"	एस. पेमराजजी खीमेसरा	मद्रास
२५)	"	चुन्नीलालजी रूपचन्दजी खारीवाल	"
२५)	"	गुप्त भेट	"
२५)	"	भँवरलालजी जैन	"
२५)	"	अमीचन्दजी ए वसा	परेल (बबई)
२१)	"	मोहनलालजी पुखराजजी कोठारी	मद्रास
१५)	"	सरदारमलजी सिंघी धर्मपत्नि मोहन बाई	लानी गन्नी
११)	"	सोहनलालजी साकलचन्दजी काकरिया	कोलार
१०८६५)			

:: आभार-प्रदर्शन ::

स्वर्गीय उपाध्यायजी महाराज साहब का इस संस्था पर असीम उपकार है। यदि ऐसा कहा जाय कि "उपाध्यायजी महा० सा० संस्था के जीवन-दाता संरक्षक और प्राण-प्रेरक थे।" तो ऐसा कहना भी शत प्रतिशत रूप से सत्य है। उपाध्यायजी महा० सा० का आकस्मिक देहावसान सम्पूर्ण समाज के लिए एक असह्यतम आघात है। परन्तु दैव के आगे किसी का क्या चारा है ?

इतिहास के इन असाधारण क्षणों में हमारा यही कर्तव्य है कि हम समाज के सङ्गठन में और साहित्य के प्रसारण में अधिक से अधिक योगदान दें। ऐसा करके ही हम उपाध्यायजी म० सा० के गुणों को अपने जीवन में स्थान दे सकते हैं।

उपाध्यायजी म० सा० के प्रति श्रद्धांजलि के रूप में यह संस्मरणात्मक संकलन पाठकों की सेवा में प्रस्तुत करते हुए हम अपने कर्तव्य का ही पालन कर रहे हैं। एतदर्थ अखिल भारतीय चतुर्विध श्री संघ के आभारी हैं जिनकी सद्भावांजलियां श्रद्धां

जलियां, संस्मरणात्मक निबन्ध और कविताएँ यहां पर संग्रहित की गई हैं।

अनेक मुनि महात्माओं के तथा सेवाभावी मुनि श्री पन्नालालजी म० सा० के एवं सिद्धांत प्रभाकर मुनि श्री मेघराजजी म० सा० के हम आभारी हैं; जिनकी कृपा-दृष्टि से और सहयोग से यह प्रकाशन-कार्य सम्पन्न हो सका हैं। वे सहायता दाता भी धन्यवाद के पात्र हैं, जिनके आर्थिक सहयोग से यह जीवन-चरित्र प्रकाशित हो सका है। इसी प्रकार से जिन जिन महानुभावों का इसमे प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष योगदान प्राप्त हुआ है, वे सभी धन्यवाद के पात्र हैं। इति शुभम्

देवराज सुराणा
अध्यक्ष

अभयराज नाहर
मन्त्री

श्री जैन दिवाकर दिव्य ज्योति कार्यालय, ब्यावर।

— निवेदन —

आज प्रिय पाठकों के पुनीत हाथों में स्वर्गीय उपाध्यायजी महाराज सा० श्री १००८ श्री प्यारचन्दजी म० सा० के प्रति अखिल भारतीय स्थानकवासी चतुर्विध श्री संघ द्वारा प्रदत्त सद्‌भावांजलि और श्रद्धांजलि सूचक यह संस्मरणात्मक जीवन चरित्र प्रस्तुत करते हुए मैं अपना यत् किंचित् कर्त्तव्य पालन कर रहा हूँ

उपाध्यायजी म० सा० समाज की एक विशेष शक्ति थे इसमें दो मत नहीं हो सकते हैं। व्यावहारिक कुशलता संगठन शक्ति विचार चातुर्य विवेक-सम्पन्न मधुर भाषण और समयज्ञता आदि अनेकानेक गुणों के वे धनी थे

पूज्य श्री १ ८ श्री मन्नालालजी म० सा० की सम्प्रदाय को एक ही सूत्र में संचालित करने में और व्यवहार क्षेत्र में उसे एक सजीव संगठित रूप देने में आप ही प्रमुख कारण थे। महान आत्म तत्वज्ञ योगीराज स्वर्गीय पूज्य श्री १००८ श्री जवाहिरलालजी म० सा० की सम्प्रदाय के समकक्ष इस सम्प्रदाय को भी तद् धन् रूप प्रदान करने में आपकी ही शक्ति प्रमुख स्तम्भ थी। यह एक ऐतिहासिक तथ्य है।

प्रसिद्ध वक्ता जैन दिवाकरजी महाराज साहब के जीवन को इतनी अधिक प्रसिद्धि में लाने का अधिकांश श्रेय श्री उपाध्यायजी म० सा० को ही है।

स्थानकवासी श्रमण-वर्ग में साहित्य-प्रकाशन की परम्परा प्रस्थापित करने में भी आप विशेष कारण रूप थे।

स्वर्गीय शान्त स्वभावी पूज्य श्री १००८ श्री मन्नालालजी महा० सा० की सम्प्रदाय को विकसित करने में, पल्लवित करने में और फलान्वित करने में जैसा आपने बुद्धि का चमत्कार बतलाया है, वैसा ही पुनः सर्वा ग रूप से उसके समाप-वर्तन में भी बुद्धि का असाधारण चमत्कार बतलाया है।

उपाध्याय श्री १००८ श्री आनन्द ऋषिजी महा० सा० के नेतृत्व में सर्वाङ्ग परिपूर्ण रीति से अखिल सम्प्रदाय का समापवर्तन करना आपकी बुद्धि की चिर-स्मरणीय विचक्षणता ही कही जायगी तत्पश्चात् अखिल भारतीय श्री वर्धमान स्थानक वासी जैन श्रमण-संघ के रूप में उस अस्थायी समापवर्तन को सविकास करने में जिस विशाल दृष्टि का आपने समाज के सामने जो उदाहरण प्रस्तुत किया है, वह श्रमणवर्ग के इतिहास में एक महत्व पूर्ण घटना है, जिसकी कि आपकी चकोर दृष्टि के साथ घनिष्ट आत्मीयता है। अस्तु।

नित-नूतन पढ़ने मे, सर्व ग्राह्य भाग को संग्रह करने में

और कल्याण मय सामग्री प्रकाशित करने में आपकी हार्दिक अभिरुचि थी। इस संबंध में इतना ही पर्याप्त होगा कि चौंसठ वर्ष की आयु में भी रायपुर चातुर्मास में आप प्राकृत भाषा का नियमित प्रतिदिन अध्ययन किया करते थे। प्राकृत शब्दों को एक बालक विद्यार्थी के समान कंठस्थ याद किया करते थे।

महाराज सा० के जीवन की अनेक सूक्तियाँ और विविध संस्मरण इस पुस्तक के प्रत्येक पृष्ठ पर पाठकों को दृष्टि गोचर होंगे। इसके लिये मैं उन सभी कृपालु लेखक महानुभावों एवं कवि बन्धुओं का कृतज्ञ हूँ, जिनकी परिश्रम-साध्य रचनाओं का यहां पर उपयोग किया गया है।

संपादन संबंधी त्रुटियों के संबंध में सहृदय-सज्जनों से मैं क्षमा-याचना करता हूँ। श्री जैन दिवाकर दिव्य-ज्योति कार्यालय ब्यावर के संचालक बन्धुओं को भी धन्यवाद है, कि जिनकी सहृदयता के कारण से यह संस्मरणात्मक जीवन चरित्र प्रकाशित हो सका है। इति शुभम्।

श्री संघ का चरण-रज
विनीत—
रतनलाल संघवी
छोटी सादड़ी

विजया-दशमी
वि० २०१७
सिंघनूर

श्रद्धाञ्जलि के पुष्प

- पद्य-भाग -

ॐ

उपाध्याय श्री प्यारचन्दजी म० का

जीवन-चरित्र

:: गुरुदेव श्री की जीवन महिमा ::

—— :०: ——

(श्रद्धाञ्जलिकार:—श्री उदय मुनिजी सिद्धान्त-शास्त्री)

चौरासी लाख-जीव योनियों में सर्व-श्रेष्ठ योनि मानव जीवन की ही कही गई है। क्योंकि अन्य योनियों में आहार, निद्रा और भोग वृत्तियों की ही प्रधानता होती है, जबकि मानव- योनि में आत्म-ज्ञान प्राप्ति जैसे दिव्य-रत्न की प्राप्ति का सुन्दर संयोग रहता है।

जन्म ग्रहण कर लेना और अन्त में मृत्यु के शरण हो जाना यह प्रकृति का अनादि एवं अमिट स्वभाव है। बड़े से बड़े तीर्थंकर चक्रवर्ती सेनापति सम्राट ज्ञानी महात्मा तथा संत समुदाय भी अचिन्त्य शक्ति शालिनी प्रकृति के इस परिवर्तन शील स्वभाव के अपवाद नहीं हो सकते हैं, अर्थात् जन्म ग्रहण करने के पश्चात् उन्हें अवश्यमेव मृत्यु-शरण होना ही पड़ता है। यह एक ध्रुव सिद्धान्त है।

भगवान दीर्घ तपस्वी महावीर प्रभु ने फरमाया है कि ज्ञानी अपने ज्ञान से और चारित्र बल से इस प्रकृति के क्रम को भी उल्लंघन कर देते हैं और अजर अमर बनकर सिद्ध-प्रभु बन जाते हैं। जो महान् आत्मा प्रभु महावीर प्रदर्शित इस दिव्य-मार्ग का पथिक बनता है; उसीका जन्म-ग्रहण करना सार्थक है। उसी के पद चिह्न इस काल रूपी रेखा पर अङ्कित हो जाते हैं, जोकि अज्ञान रूप अन्धकार में भटकते हुए संसारी प्राणियों के लिये प्रकाश-स्तम्भ का काम देते हैं। और उन्हें गन्तव्य स्थान की ओर सदैव प्रेरित करते रहते हैं। इस प्रकार महान् पुरुषों का जीवन चरित्र आने वाली पीढ़ियों के लिये जाज्वल्यमान सूर्य-प्रकाश के समान होता है।

विश्व में विभिन्न उत्तम उत्तम वस्तुओं में जो भौतिक गुण धर्म होते हैं वे संग्रहित रूप से अथवा चरमा रूप से महात्माओं एवं संत-समुदाय के जीवन में भी दृष्टिगोचर होते हैं। जहां वस्तुओं में भौतिक गुणों का बाहुल्य है; वहां महापुरुषों के जीवन में आत्म गुणों का समुदाय विकास प्रकटित होता है।

उपरोक्त मर्यादा के अन्तर्गत स्वर्गीय गुरुदेव उपाध्याय पंडित रत्न, बालब्रह्मचारी श्री प्यारचन्दजी महाराज साहब का पावन-चरित्र भी समाविष्ट होता है। आप महामानव और महात्मा थे। आप में विविध गुणों का सुन्दर समन्वय हुआ था। प्रकृति से आप उदार थे। हृदय से सरल थे। विचारकला के धनी थे। व्यवस्था शक्ति मे आदर्श थे। कार्य शक्ति के सुन्दर संयोजक थे। गुणी और गुण-ग्राहक थे। प्रभावशाली वक्ता थे। साहित्य-प्रणेता के साथ २ सुन्दर साहित्य के संपादक एवं संयोजक भी थे। आपका चरित्र निर्मल था और यही कारण है कि आप यश कीर्ति से दूर रहकर एक साधक के रूप में कार्य किया करते थे। पूज्य गुरुदेव की मौलिकता और विशिष्टता आज इन पंक्तियों के रूप मे पाठकों के सामने रख रहा हूँ।

—: जन्म स्थान :—

मालव भूमि आर्यावर्त्त भारतवर्ष की पवित्र हृदय-स्थली है। भौतिक दृष्टि से धन-धान्य से परिपूर्ण है। सजल एवं शस्य-श्यामला है। साहित्यिक दृष्टि से महाकवि कालिदास और माघ जैसे दिग्गज पंडितों को जन्म देने वाली है। महाराज विक्रमादित्य और विद्या-प्रेमी भोज जैसे राजाओं की भी जन्म भूमि यही है।

इसी पुनीत भूभाग में स्थित रतलाम नगर ही हमारे चरित्र-नायक जी का भी जन्म-स्थान है।

रतलाम जैनियों की नगरी कहलाती है। यहां पर श्री पूनमचन्दजी सा. बोथरा रहते थे। आपकी धर्म पत्नि का शुभ

नाम सुश्री मानकुंवरी बाई था। दोनों ही धर्मशील निष्ठावान और श्रद्धावान् थे। इन्हीं माता-पिताओं के यहां हमारे चरित्र-नायकजी ने सम्वत् १९५२ में शुभ जन्म ग्रहण किया था। "होनहार बिर वान् के होत चिकने पात" अथवा पूत के लक्षण पालने में ही दिखाई देते हैं" के अनुसार हमारे चरित्र-नायकजी भी तेजस्वी और होनहार ही प्रतीत होते थे।

प्रकृति की लीला विचित्र है। भवितव्य के गहन अंधकार में क्या छिपा हुआ है ? इस रहस्य के पर्दे को मानव-बुद्धि भेद कर उसको पहले से ही जान ले ऐसी शक्ति उसमें नहीं है। हमारे चरित नायकजी अपने शैशव-काल के पांच वर्ष भी व्यतीत नहीं कर पाये थे कि इन पर विपत्ति का पहाड़ टूट पड़ा। चरित्र नायकजी के माता और पिता दोनों का स्वर्गवास हो गया। पांच वर्ष जितनी अत्यल्प आयु में अनाथ अवस्था जैसी भयानक कठिनाई सामने आ उपस्थित हुई।

मानव जीवन में अनेक दृष्टान्त ऐसे प्राप्त होते हैं कि प्रायः कठिनाइयां जीवन विकास में वरदान प्रमाणित होती है कठिनाइयों से कठोर कटु और सत्य अनुभव तो होते ही है साथ साथ में सहिष्णुता साहस पराक्रम और बुद्धि विशालता जैसे उच्च गुणों की प्राप्ति भी होती है। तदनुसार हमारे चरित-नायकजी में भी जीवन के सवाच काल से उत्तर काल तक अर्थात् संपूर्ण-जीवन क्षेत्र में जो व्यावहारिकता व्यवस्था शक्ति, संगठन-शक्ति, संचालन शक्ति एवं अन्य मानसिक तथा बौद्धिक विकसित होते हुए दिखाई देते हैं उनकी आधार भूमि वे बाल्य-जीवन-कालीन

कठिनाईया ही है, जिनके संघर्ष ने आपका जीवन-निर्माण किया था। अस्तु।

"अरक्षितो तिष्ठति दैव-रक्षितः" के सिद्धान्त के अनुसार आपकी गुणवती पूज्य दादी साहिबा ने आपका पालन-पोषण किया। धन्य है उन दादी साहिबा को, जिन्होंने कि एक प्रभाव-शालि रत्न जैन समाज को समर्पित किया।

—: वैराग्य :—

मानव जीवन में मुख्य रूप से दो वृत्तिया होती हैं। एकतो भोग वृत्ति और दूसरी वैराग्य-वृत्ति। भोग-वृत्ति हीनता और तुच्छता द्योतक है, जबकि वैराग्य वृत्ति उच्चता एव श्रेष्ठता द्योतक है। विश्व में आज दिन तक जितने भी महात्मा तत्वचिंतक दार्शनिक एव महापुरुष उत्पन्न हुए हैं, उन सभी ने एक स्वर से यही फरमाया है कि भोगवृत्ति का अतिम परिणाम भयकर ही है—दु.ख प्रद ही है, जबकि वैराग्य वृत्ति का परिणाम सदैव सुख प्रद तथा शाति दाता ही होता है। यह सिद्धान्त हमारे चरित नायकजी को रोचक हितकारी एवं अनुकरणीय प्रतीत हुआ।

भोग वृत्ति से जन्म-मरण की शृंखला बढती ही रहती हैं, कपायों का स्तर भी सघन से सघनतर ही होता जाता है, भोगवृत्ति से आत्मा कभी भी निर्मल और ज्ञानी नहीं हो सकती है। जैसे अग्नि का शमन इधन डालने से नहीं हो सकता है प्रत्युत अग्नि की ज्वाला अधिक से अधिक ही प्रज्वलित होती है। वैसे ही भोग-वृत्ति भी ज्यों ज्यों उप भोग परि भोग की सामग्री बढ़ती

जाती है त्यों त्यों विकसित होती रहती है। ये भोग किंपाक फल के समान होते हैं जो कि देखने में तो रमणीय तथा आकर्षक प्रतीत होते हैं किन्तु परिणाम में भयकर कष्ट दाता होते हैं—मृत्यु तक के दाने वाले होते हैं। इसके विपरीत वैराग्य वृत्ति से आत्मा में सभी गुणों का पूर्ण विकास होता है और एक दिन देखा जाता है जबकि आत्मा पूर्ण निर्मल बनकर—केवल ज्ञानी बनकर सिद्ध बुद्ध होजाता है। ऐसी विचारधारा में हमारे चरित-नायकजी रात दिन मग्न रहने लगे।

"यस्य भावना यादशी ता दशीफलं तस्य" के सिद्धान्त के अनुसार जैन दिवाकर प्रसिद्ध वक्ता पंडित रत्न मुनि श्री १००८ श्री चौथमलजी महाराज साहब अपने सहयोगी मुनि वृन्द के साथ उज्जैन से ग्रामानुग्राम विचरते हुए तथा जन समुदाय को प्रति बोधित करते हुए पुण्य भूमि रतलाम में पधारे। दिवाकरजी महाराज के व्याख्यानों का सुमधुर प्रवाह प्रवाहित होने लगा। जनता पर हृदय हारी प्रभाव पड़ने लगा।

जैसे सूर्य की किरण सूर्य मुखी कमल को पूर्ण विकसित कर देती हैं वैसे ही वदनीय दिवाकरजी म० की वाणी ने भी हमारे चरित-नायकजी की उद्भूत वैराग्य भावना को पूर्णतया जाग्रत कर दी। चरित-नायकजी ने संसार की नश्वरता को और निराशापूर्ण दु:खद परिणति को समझ लिया। इसके मन में वैराग्य की तरंग तरंगित होने लगी। विषय वासनाओं के प्रति ग्लानि अनुभव होने लगी। आत्म चिंतन के प्रति जिज्ञासा जाग उठी और प्रभु भजन की ओर भावना उन्मुख हो उठी। यों चरित नायकजी वैराग्य मय भावनाओं में संलग्न हो गये।

पूज्य गुरुदेव की सेवा मे उपस्थित हुए, तिक्खुत्तो के पाठ से वदना की और हाथ जोड़कर विनय पूर्वक निवेदन किया कि– "हे तरण-तारण के जहाज ! मुझे भी ससार-समुद्र से पार करदो ! इस अनन्त अगम ससार से पार उतार दो ! हे महाराज ! मुझे साधु-दीक्षा प्रदान करके अपना अन्तेवासी शिष्य बनाओ ।"

समयज्ञ पूज्य गुरुदेव ने किशोर आयु वाले हमारे चरित नायकजी का अपनी विलक्षण बुद्धि से निरीक्षण किया और तत्काल समझ गये कि यह किशोर बालक होनहार तथा प्रतिभा-शाली है एव दीक्षा के योग्य भी है। महाराज साहब ने फरमाया कि "हे भाई ! साधु-दीक्षा लड्डु-मोदक के समान तो नहीं है, जो कि स्वादिष्ट होता है और सरलता के साथ खाया जा सकता है, परन्तु साधु-दीक्षा में तो भूख-प्यास–ठंड-गरमी- निंदा-स्तुति सभी प्रकार के घोर दु ख सहने पड़ते है। इस लिये पहले तुम हमारे साथ साथ इसी गृहस्थ-वेश मे कुछ समय तक विचरो और पीछे अनुभव प्राप्त करके दीक्षा ग्रहण करना ।" यों पूज्य गुरुदेव के समयोचित वचनों का हमारे चरित नायकजी पर अच्छा प्रभाव पड़ा और महाराज साहब के साथ साथ उदयपुर तक पैदल पैदल विहार किया ।

–: वैराग्य परीक्षा :–

प्राय ऐसा होता है कि किसी किसी गाव में साधु महाराज सा० के साथ मे रहे हुए दीक्षार्थी वैराग्यशील-व्यक्ति के पहुचने पर वहा का कोई न कोई व्यक्ति कुतूहलता वश अथवा परीक्षा-दृष्टि से उस दीक्षार्थी व्यक्ति की कई प्रकार से परीक्षा लिया करता

है। ऐसी ही एक घटना हमारे चरित्र-नायकजी के साथ भी हो गई है।

हमारे चरित्र-नायकजी पूर्ण रीति से वैराग्य-रंग में रंग गये थे और दीक्षा-ग्रहण करने की पूर्ण भावना थी, इस हेतु ही वो कालीन क्रियाओं का अभ्यास करने के लिये ये नाना प्रकार के कष्टानुभव कर रहे थे, उनमें से एक नियम नियमित रूप से धोवन-पानी अथवा गरम पानी पीने का भी था। तदनुसार एक दिन की बात है कि उदयपुर निवासी श्रावक श्री गेरीलालजी सीमेसरा ने भोजन के समय चरित्र-नायकजी से पूछा कि— वैरागीजी! आप कौनसा पानी पीते हैं?' किशोर-युवक ने प्रफुल्लित चित्त से कहा कि— धोवन पानी अथवा गरम पानी पीता हूँ।" यह सुनकर सीमेसराजी ने परीक्षा की दृष्टि से गुप्त रूप से पानी की गिलास में नमक डाल दिया और पानी पीने के लिये सहज-भाव से वह गिलास हमारे विवेकी किशोर बालक के हाथों में प्रदान कर दी। होनहार बालक की दृष्टि तो समदृष्टि' थी पानी मीठा होवे तो क्या और खारा होवे तो क्या? रुचिकर होवे तो क्या और अरुचिकर होवे तो क्या? सम्यक् ज्ञानी किशोर-बालक वह पानी सरल और स्वाभाविक रीति से उसी प्रकार "घट घट करके" पी गया जिस प्रकार कि एक जिह्वा लोलुप-अधम-बालक औटाये हुए स्वादिष्ट दूध की गिलास को एक ही घूँट में पी जाता है।

शांत भाव से खारा पानी पीने के पश्चात् किशोर बालक से सीमेसराजी ने पूछा कि— 'भाई! पानी कैसा है। किशोर युवक ने सहज स्मित भाव से संतोष पूर्वक उत्तर दिया कि—

'धोवन-पानी कभी खारा भी होता है और कभी अन्य स्वाद वाला भी। जिस पानी का स्वाद, स्पर्श, वर्ण और गंध बदला हुआ होता है, वह पानी धोवन के अन्तर्गत आ जाता है, तदनुसार यह पानी खारा होने से निश्चय ही धोवन ही था। इसलिये मुझे तो यह संतोष जनक और पीने योग्य ही अनुभव हुआ, तदनुसार मैं सहर्ष आपका दिया हुआ पानी पी गया।" किशोर-बालक के ऐसे विवेक युक्त शातिमय वचन सुनकर खीमेसराजी अत्यन्त प्रसन्न हुए और जैन दिवाकर, परम पुज्य गुरुदेव की सेवामें उपस्थित हो कर हर्ष से रोमाञ्चित होते हुए निवेदन किया कि—"हे महाराज! श्री प्यारचन्दजी वैरागी की मैंने बुद्धि पूर्वक परीक्षा की है, और यह किशोर-बालक परीक्षा में खरा उत्तरा है। इस के हृदय में निश्चय ही वैराग्य-भावना जाग्रत हो गई है, इसलिये ये दीक्षा के योग्य है, ये होनहार और प्रभावक साधु प्रमाणित होंगे, इसलिये आप कृपा करके इन्हें अवश्य ही दीक्षित कर लें।" गुरुदेव ने खीमेसराजी के वचनों को मान दिया और उन्हें प्रामाणिक मानते हुए यही फरमाया कि—"श्रावकजी! जैसी द्रव्य क्षेत्र-काल भाव की स्पर्शना होगी, वैसा ही होगा। मैं आपके वचनों पर विश्वास करता हू और समय पडने पर सब अच्छा ही होगा।" खीमेसराजी इस उत्तर से अत्यन्त प्रसन्न हुए। इस प्रकार पूज्य गुरुदेव की विचार धारा ने यह निर्णय कर दिया कि "किशोर बालक-प्यारचन्द–दीक्षा के योग्य है और यदि यह दीक्षा ग्रहण करना चाहता है तो अवश्य ही इसे दीक्षित करलूँगा।"

प्रिय वाचक वृन्द! यह वह भूमिका है, जिसके आधार से "किशोर-बालक श्री प्यारचन्द" 'प्रभावक–उपाध्याय-मुनि श्री

प्यारचन्दजी के रूप में जनता के सामने प्रसिद्ध हुए और यशस्वी हुए।

— दीक्षा ग्रहण :—

उदयपुर विराजने के समय में ही एक दिन पूज्य गुरुदेव ने अपने भावी शिष्य किशोर कुमार को कहा कि— हे भाई! यदि तुम्हें दीक्षा ग्रहण करना ही है तो अपने कौटुम्बिक सम्बन्धियों से तथा अपनी पूज्य दादी मां साहिबा से दीक्षा ग्रहण करने की नियमानुसार आज्ञा ले आओ।" किशोर बालक यह सुनते ही अत्यन्त हर्षित हुआ और आज्ञा लेने के लिए उदयपुर से 'थाना-थुला' नामक गाव में आये, जहां कि उस समय में आपकी दादी मा रहती थी। आते ही दादी मां के पैरों में प्रणाम किया और हाथ जोड़कर नम्र शब्दों से निवेदन किया कि पूज्य मां साहिब! अपनी यह आत्मा अनादि अनन्त काल से जन्म मरण करती आ रही है संसार के अनन्तानन्त दुःख पीड़ा सहन करती आरही है। संयोग से आज आपके पुण्य प्रताप से मेरी आत्मा ने मानव भव पाया है। इस श्रेष्ठ संयोग का मुझे लाभ उठाने दो। मुझे आज्ञा दो कि मैं परम पूज्य गुरुदेव श्री १००८ श्री चौथमलजी महाराज साहब के पास दीक्षा लूं।

दादी मां को यह सुनते ही चक्कर सा आ गया और कुछ देर बाद शान्ति आने पर कहा कि बेटा तू मेरा आधार है; मैं तेरी दादी हूँ मेरी सेवा कौन करेगा? तू तो व्यापार आदि किसी काम में लग जाय जिससे मुझे भी आराम मिले और

तेरा भी जीवन शांति से बीते। धर्मध्यान ही करना है तो ससारी अवस्था मे भी किया जा सकता है; इसलिए मुझे निराधार मत छोड़।" दादी सा० के वचनों को किशोर-बालक ने ध्यानपूर्वक सुना और मिठास के साथ पुनः जवाब दिया कि "पूज्य दादी सा० ससार अवस्था विष बेलड़ी ही है। इसका फल हमेशा दुखदाता ही है। यह सुन्दर सयोग प्राप्त हुआ है; इसलिए मैं तो दीक्षा ग्रहण करुँगा ही, आप खुशी खुशी आज्ञा प्रदान करें।" इस पर भी दादी सा० ने तथा अन्य कौटुम्बिक बन्धुओं ने इन्हें दीक्षा ग्रहण करने की आज्ञा प्रदान नहीं की। हमारे चरित नायकजी कच्चे विचारों के नहीं थे; इसलिए आज्ञा के लिए उचित अव- सर की राह देखते हुए आप उस समय तो "धाना-सुता" गाव से रतलाम पधार गये। रतलाम आने के पश्चात् पूज्य गुरुदेव की सेवा में उदयपुर पहुचना जरूरी था परन्तु पास में खर्चे की कोई व्यवस्था नहीं थी; किन्तु जिनका भाग्योदय होना होता है; उन्हें अनुकूल संयोग प्राप्त हो ही जाते हैं। इस सिद्धान्त के अनुसार रतलाम निवासी श्री धूलचन्दजी साहब अग्रवाल की माताजी सुश्री हीराबाई ने हमारे चरित नायकजी को मार्ग व्यय देकर कहा कि "जाओ! पूज्य गुरुदेव की सेवा मे पहुँच जाओ।" किशोर-बालक तो आनन्द और उत्साह के सागर में आकण्ठ मग्न था, मार्ग व्यय की व्यवस्था होते ही गुरुदेव की सेवा में उदयपुर पहुँच गये। सारा वृत्तान्त निवेदन किया और विनती की कि—"मैं अवश्य दीक्षा ग्रहण करुँगा और आज्ञा भी प्राप्त कर लूंगा।" गुरुदेव ने आपकी बात को ध्यानपूर्वक सुनली।

महाराज सा० ने उदयपुर से विहार किया और आने

चित्तौडगढ पहुचा । महाराज साहब की सेवा मे आज्ञा-पत्र प्रस्तुत किया और तिक्खुत्तो के पाठ से तीन बार वन्दना करके हाथ जोड करके एव सिर नमा करके गद् गद् वचनों से निवेदन किया कि—"हे तरण तारण की जहाज ! हे जैन धर्म प्रभावक गुरु महाराज ! इस अकिंचन का उद्धार कीजिये, इसको साधु-दीक्षा प्रदान कीजिये और अपना प्रिय शिष्य बनाकर इसे कृतार्थ कीजियेगा। "तेजस्वी बालक की हार्दिक भावना के प्रति गुरु महाराज सा० को अच्छी तरह से विश्वास हो जाने पर यही फरमाया कि—"अब दीक्षा शीघ्र ही प्रदान कर दी जायगी।"

भारतीय-इतिहास में चित्तौड़गढ़ अपनी वीरता के कारण से सुप्रसिद्ध है और इसीलिये आदर की दृष्टि से भी देखा जाता है। रानी पद्मिनी आदि सैंकड़ों स्त्रिया धर्म की रक्षा के लिये जीवित ही इसी चित्तौड़गढ मे जौहर के रूप मे जलमरी थीं हजारों केशरिया वेशधारी योद्धा इसी चित्तौडगढ़ के कण कण को युद्ध-क्षेत्र मे अपने उष्ण रक्त के छींटों से लाल कर गये हैं। इस प्रकार यह इतिहास प्रसिद्ध चित्तौडगढ़ ही हमारे चरित-नायकजी के दीक्षा स्थल के रूप में सुप्रसिद्ध हुआ।

चित्तौडगढ़ श्री सघ की ओर से उद्घोषणा हो गई कि वैरागी भाई श्री प्यारचदजी की दीक्षा अपने ही नगर में होगी। इस उद्घोषणा से घर घर में प्रसन्नता छागई तथा श्री सघ की ओर से उत्साह-प्रदर्शक सभी प्रकार की व्यवस्थाऐं की गई।

अंत में सवत् १९६९ के फाल्गुन शुक्ला पचमी का शुभ-दिन आया। नगर मे उत्साह और आनन्द का वातावरण फैला

हुआ था, ऐसे मंगल मय मुहूर्त्त में जैन दिवाकर प्र० व० पंडित रत्न श्री १००८ श्री चौथमलजी महाराज सा० ने हमारे चरित नायक किशोर बालक-श्री प्यारचन्दजी को जैन धर्मानुसार साधु दीक्षा प्रदान करने के लिये नियमानुसार "करेमि भंते" के पाठ का उच्चारण किया और बालक श्री प्यारचन्दजी को "मुनि श्री प्यारचन्दजी" घोषित कर दिया। उपस्थित जनता "जय-जयकार" करने लगी और नव-दीक्षित मुनिराज की चिरायुष्यो के पाठ से वंदना करने लगी। तत्पश्चात् सारा समारोह उल्लास पूर्ण वातावरण में विसर्जित हुआ तथा जनता "धन्य धन्य" कहती हुई अपने अपने स्थान पर पहुँच गई।

पाठक वृन्द ! अब हमारे चरित-नायकजी गृहस्थ से सदीप मान साधु हो गये। जिनकी ज्ञान दर्शन की कलायें निरन्तर बढ़ती गईं और जो जैन साधु समाज में एक विचारक और कुशल संगठनकर्त्ता के रूप में प्रसिद्ध हुए।

— मुनि जीवन —

संवत १९५९ के फाल्गुण शुक्ला पंचमी से लगाकर संवत् २०११ के पोष सुदी ६ तक ५२ वर्ष १० महिना और १ दिन के साधु काल में हमारे चरित नायक-ज्ञान दर्शन और चारित्र के विकास में निरन्तर प्रयत्न शील तथा प्रगतीशील रहे।

एक युग स्थानक वासी समाज में ऐसा भी व्यतीत हुआ है जिसमें परस्पर सांप्रदायिक-भावनाओं का दुःखद अतिरेक अपना प्रचंड चक चला रहा था। खंडन मंडन तोड़ तोड़ मनुपूर्ण

और प्रतिकूल सभी प्रकार के प्रसंग परस्पर मे चला करते थे। एक ओर तो पूज्य श्री १००८ श्री जवाहिरलालजी महाराज सा० का साम्प्रदायिक वर्ग था और दूसरी ओर पूज्य श्री १००८ श्री मुन्नालालजी महाराज सा० का साम्प्रदायिक वर्ग था, ऐसे विलक्षण सयोगों मे हमारे चरित-नायकजी की पैनी दृष्टि ही दीर्घ-दर्शिता का काम किया करती थी। "हर-सयोगों में साधन जुटालेना और उन साधनों का उपयुक्त उपयोग करना"–इस कला में हमारे चरित नायकजी की विचक्षण-बुद्धि अनुपमसी प्रतीत होती थी। सारे समाज की गति-विधि आपसे छिपी नहीं रहती थी।

इस प्रकार की विरोधात्मक स्थिति अनेकानेक वर्षों तक चलती रही। अन्तमे हमारे चरित नायकजी ने इस छत्तीस के अङ्क के सदृश परिस्थिति को समन्वयात्मक ढङ्ग से त्रेसठ के अङ्क के सदृश संगठित कर दी। इसका सर्व प्रथम सुफल सम्वत् २००६ के चैत्र कृष्ण पक्ष में व्यावर में देखने को मिला जबकि श्री स्थानक वासी जैन समाज की पाच सम्प्रदायें बाल ब्रह्मचारी पडित रत्न श्री १००८ श्री आनन्द ऋषिजी महा० सा० के आचार्यत्व में एक ईकाई के रूप में सगठित हुई। जब हमारे चरित-नायकजी के ऐसे सफल प्रयत्न के समाचार समाज के अन्य महापुरुषों ने सुना तो उन्हें अत्यन्त प्रसन्नता हुई तथा यह प्रेरणा प्राप्त हुई कि यदि सभी संप्रदाय एक ही ईकाई के रूप में ही सगठित हो जाय तो कितना श्रेयस्कर कार्य होगा और कितना सुन्दर परिणाम समाज के सामने समुपस्थित हो सकेगा।

यह भावना समाज मे निरन्तर विकसित होती गई और हमारे चरित-नायकजी भी 'सगठनात्मक ऐतिहासिक स्थिति" को

हुआ था, ऐसे मंगल मय मुहूर्त में जैन दिवाकर म० व० पंडित रत्न श्री १००८ श्री चौथमलजी महाराज सा० ने हमारे चरित नायक किशोर बालक-श्री प्यारचन्दजी को जैन धर्मानुसार साधु दीक्षा प्रदान करने के लिये नियमानुसार "करेमि भंते" के पाठ का उच्चारण किया और बालक श्री प्यारचन्दजी को "मुनि श्री प्यारचन्दजी" घोषित कर दिया। उपस्थित जनता "जय-जयकार" करने लगी और नव-दीक्षित मुनिराज को तिक्खुत्तो के पाठ से वंदना करने लगी। तत्पश्चात् सारा समारोह उल्लास पूर्ण वातावरण में विसर्जित हुआ तथा जनता "धन्य धन्य" कहती हुई अपने अपने स्थान पर पहुँच गई।

पाठक वृन्द ! अब हमारे चरित-नायकजी गृहस्थ से नवीन मग्न साधु हो गये। जिनकी ज्ञान दर्शन की कलायें निरन्तर बढ़ती गई और जो जैन साधु समाज में एक विचक्षण और कुशल संगठनकर्त्ता के रूप में प्रसिद्ध हुए।

— मुनि-जीवन :—

संवत् १९६१ के फाल्गुण शुक्ला पंचमी से लगाकर संवत् २०११ के पोष सुदी ६ तक ४९ वर्ष १० महिना और ६ दिन के साधु काल में हमारे चरित नायक-ज्ञान दर्शन और चारित्र के विकास में निरन्तर प्रयत्न शील तथा भद्राशील रहे।

एक युग स्थानक वासी समाज में ऐसा भी व्यतीत हुआ है, जिसमें परस्पर साम्प्रदायिक-भावनाओं का दुःखद अतिरेक अपना प्रचंड चक चला रहा था। खंडन मंडन धोड़ तोड़ अनुकूल

पधारे, हमारे चरित्र नायकजी भी अत्यन्त विशुद्ध भावना के साथ और परम प्रसन्नता के साथ श्री १००८ श्री उपाचार्यजी महाराज सा० की इच्छा से इनकी सेवामें रह कर आपकी सभी प्रकार से वैयावृत्य करते हुए चातुर्मास करने के लिये उदयपुर पधारे। यह सयोग सवत् २००९ का है। इस चातुर्मास मे हमारे चरित्र नायकजी ने उपाचार्यजी महाराज सा० की मन-वचन और काया से, एव भक्ति पूर्ण भावना के साथ सेवा की तथा हर प्रकार से सहयोग प्रदान किया। श्रावक-वर्ग यह अनुभव कर आश्चर्य-चकित था कि "कहा वह छत्तीस के अङ्क की पूर्व स्थिति और कहां यह त्रेसठ के अङ्क का सुन्दर सम्मेलन।" जनता यह अनुभव नहीं कर पाती थी कि—"कभी पूज्य श्री १००८ श्री हुक्मीचन्दजी महाराज सा० की ये दो विशाल शाखाएँ परस्पर मे पृथक् पृथक थीं।" ऐसी अखण्ड और अविभाज्य सप-स्थिति पैदा करने में हमारे चरित्र नायकजी की ही बुद्धि-वैभव का चमत्कार पूर्ण प्रभाव था। इस प्रकार हमारे चरित्र नायकजी में अद्भुत पराक्रम, असाधारण संगठन शक्ति, विचक्षण बुद्धि और योग्य नेतृत्व आदि सभी गुणों के सुन्दर दर्शन होते हैं। जो कि हमारे लिये अनुकरणीय और चिन्तनीय है।

—: गुण पदवियां :—

आपकी प्रतिभा और विचक्षणता के कारण से समाज के प्रधान-प्रधान महात्माओं तथा महापुरुषों की दृष्टि सदैव आपकी ओर आकर्षित होती रही है, इसी कारण से यथासमय आप गणी उपाध्याय आदि शुभ शास्त्रीय पदवियों से अलकृत किये जाते रहे हैं इनकी सामान्य विवेचना इस प्रकार है:—

मूर्त रूप देने के लिये सतत प्रयत्न शील रहे। इसी प्रयत्न का यह शुभ परिणाम प्राप्त हुआ कि सम्वत् २००९ के वैशाख शुक्ला तृतीया को सादड़ी (मारवाड़) में अखिल भारतीय स्थानक वासी जैन श्रमण संघ का महासम्मेलन हुआ जिसमें गंभीर से गंभीर प्रश्नों पर विचार विनिमय हुआ वाद विवाद और कटु-प्रसंग भी उपस्थित हुए इन सभी परिस्थितियों में कार्यों में समझौता वार्ता में एवं शास्त्र समाधान में हमारे चरित्र-नायकजी ने गंभीर एवं समतामय अभिभावक के रूप में कार्य किया तथा सम्मेलन को सफल और यशस्वी बनाने में पूरा पूरा योग दिया। जिसका सफल परिणाम यह प्राप्त हुआ कि अखिल भारतीय श्री स्थानकवासी जैन समाज की अधिकांश संप्रदायें एक ही आचार्य के आचार्यत्व में संगठित हो गई। जिसमें अखिल भारतीय श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण-संघ की निम्न व्यवस्थाएँ घोषित की गई —

प्रधान—आचार्य पूज्य श्री १००८ श्री आत्मारामजी महाराज।

उपाचार्य—पूज्य श्री १००८ श्री गणेशीलालजी महाराज।

प्रधान मन्त्री—श्री १००८ श्री आनन्दऋषिजी महाराज।

सह मन्त्री एवं मध्य भारत मन्त्री—श्री १००८ श्री प्यारचन्दजी महाराज।

सह मन्त्री एवं साहित्य मन्त्री श्री १००८ श्री हस्तीमलजी महाराज इत्यादि।

इस प्रकार सादड़ी—सम्मेलन के सफल होने पर वहाँ से विहार कर उपाचार्यजी महाराज सा० चातुर्मास के लिये उदयपुर

पधारे, हमारे चरित्र नायकजी भी अत्यन्त विशुद्ध भावना के साथ और परम प्रसन्नता के साथ श्री १००८ श्री उपाचार्यजी महाराज सा० की इच्छा से इनकी सेवामे रह कर आपकी सभी प्रकार से वैयावृत्य करते हुए चातुर्मास करने के लिये उदयपुर पधारे। यह संयोग सवत् २००६ का है। इस चातुर्मास मे हमारे चरित्र नायकजी ने उपाचार्यजी महाराज सा० की मन-वचन और काया से, एव भक्ति पूर्ण भावना के साथ सेवा की तथा हर प्रकार से सहयोग प्रदान किया। श्रावक-वर्ग यह अनुभव कर आश्चर्य-चकित था कि "कहा वह छत्तीस के अङ्क की पूर्व स्थिति और कहा यह त्रेसठ के अङ्क का सुन्दर सम्मेलन।" जनता यह अनुभव नहीं कर पाती थी कि—"कभी पूज्य श्री १००८ श्री हुकमीचन्दजी महाराज सा० की ये दो विशाल शाखाएँ परस्पर मे पृथक् पृथक थीं।" ऐसी अखण्ड और अविभाज्य सप-स्थिति पैदा करने में हमारे चरित्र नायकजी की ही बुद्धि-वैभव का चमत्कार पूर्ण प्रभाव था। इस प्रकार हमारे चरित्र नायकजी में अद्भुत पराक्रम, असाधारण सगठन शक्ति, विचक्षण बुद्धि और योग्य नेतृत्व आदि सभी गुणों के सुन्दर दर्शन होते हैं। जो कि हमारे लिये अनुकरणीय और चिन्तनीय हैं।

—: गुण पदवियां :—

आपकी प्रतिभा और विचक्षणता के कारण से समाज के प्रधान-प्रधान महात्माओं तथा महापुरुषों की दृष्टि सदैव आपकी ओर आकर्षित होती रही है, इसी कारण से यथासमय आप गणी उपाध्याय आदि शुभ शास्त्रीय पदवियों से अलकृत किये जाते रहे हैं इनकी सामान्य विवेचना इस प्रकार है.—

विक्रम संवत् १९९१ में इतिहास प्रसिद्ध प्राचीन नगर मन्दसौर में परमपूज्य श्री १००८ श्री खूबचन्दजी महाराज सा० की सम्प्रदाय में चरित्र नायकजी "गणी-पद" से अलंकृत किये गये। विक्रम सम्वत् २००३ में महाराणा प्रताप के रक्षक झाला मानसिंहजी के पाट नगर बड़ी सादड़ी (मेवाड़) में आपको उपरोक्त सम्प्रदाय में ही 'उपाध्याय' पदवी से सुशोभित किया गया। विक्रम सम्वत् २००९ में सादड़ी सम्मेलन में अखिल भारतीय श्री स्थानकवासी जैन श्रमण वर्ग की ओर से सम्पूर्ण श्रमण-संघ के "सह मन्त्री" और मध्य-भारत के 'मन्त्री" निर्वाचित किये गये।

इसी प्रकार से संवत् २०१२ में भीना शहर सम्मेलन में अखिल भारतीय श्री स्थानकवासी श्रमण-संघ के 'उपाध्याय पद' से विभूषित किये गये। इस प्रकार समय समय पर आपके गुणों की और आपके ज्ञान-दर्शन-चारित्र की भी श्रमण-वर्ग द्वारा तथा जैन समाज द्वारा प्रतिष्ठा की गई। आपने अपने सभी पदों को उत्तर दायित्व को और सौंपे हुए कार्य को अति योग्यतापूर्वक तथा प्रशंसापूर्वक निभाया एवं यशस्वी तथा सफल हुए।

— गुरु-सेवा —

स्वर्गीय जैन दिवाकर जगत्-वल्लभ प्रसिद्ध वक्ता पंडित रत्न गुरुदेव श्री १००८ श्री चौथमलजी महाराज सा० का स्वयं का व्यक्तित्व तो महान था ही परन्तु उस व्यक्तित्व को चतुर्मुखी कीर्तिशाली यशस्वी प्रभावक और प्रशंसामय बनाने में सर्वाधिक प्रयत्न हमारे चरित्र नायकजी का ही है। इसमें दो मत नहीं हो

सकते हैं। आपके विचार-शील क्रिया-कलाप के बल पर ही अपने गुरुदेव के साहित्य को, गुरुदेव के व्याख्यानों को, गुरुदेव के व्यक्तित्व को और गुरुदेव की अजस्त्र धाराओं मे प्रवाहित होने वाले प्रशंसारूप नद को फैलने मे तथा फूलने मे एव फलने में योगदान प्राप्त हुआ था।

हमारे चरित्र नायकजी पैंतीस चातुर्मासों में अपने पूज्य गुरुदेव की सेवा में ही रहे। सभी प्रकार से उनकी वैया-वृत्ति करते रहे और गुरुदेव के मनोनुकूल प्रवृत्तियों में ही हमारे चरित्र नायकजी ने अपना सपूर्ण जीवन ही लगा दिया था, ऐसा कहना जरा भी अत्युक्ति पूर्ण नहीं है।

हमारे चरित्र नायकजी ने अपने गुरुदेव के लिये, विश्व-सनीय शिष्य, निस्स्वार्थ मन्त्री, समयोपयोगी सलाहकार और हित चिंतक मित्र के रूप में अपने जीवन को उत्सर्ग कर दिया था। गुरुदेव भी अपने ऐसे अनन्य सेवक के रूप में सुयोग्य शिष्य को प्राप्त करके परम सतोष अनुभव किया करते थे। अपने शिष्य की कही हुई बात का गुरुदेव भी पूरा पूरा सन्मान किया करते थे। "सोने में सुगध के समान" गुरु–शिष्य की यह जोड़ी यावज्जीवन जैन-समाज में सूर्य-चन्द्र के समान ज्ञान-दर्शन-चरित्र का प्रकाश निरन्तर ही प्रसारित करती रही। निश्चय ही इसमें पूर्व-जन्मों में कृत सुपुण्य का ही योग होना चाहिये, जिसके कारण से ही ऐसे महात्माओं का सम्मेलन गुरु-शिष्य के रूप मे जनता के सामने प्रकटित हुआ।

गुरुदेव के साहित्य का और पुस्तकाकार व्याख्यानों का जो भारत-व्यापी प्रचार हो रहा है, उसमें मुख्य प्रेरणा दाता हमारे

चरित्र नायकजी ही हैं, इस प्रकार गुरुदेव की सेवा करने में उनकी यश-कीर्ति को फैलाने में और सभी प्रकार से समाधि बनाये रखने में एक सुयोग्य शिष्य को जो जो प्रयत्न करने चाहिए, उन सभी प्रयत्नों को हमारे चरित्र-नायकजी ने सफलता पूर्वक संपन्न किया। यह है हमारे चरित्र नायकजी की आजन्म मान सेवा का सुन्दर परिणाम, जिसके प्रति हम अपनी श्रद्धांजलि समर्पित करते हैं।

— अध्ययन और साहित्य सेवा —

'पढम नाणं तओ दया" इस आगम-सूक्ति के प्रति हमारे चरित्र नायकजी अत्यंत जागरूक और प्रयत्नशील रहते थे। आप मानते थे कि— 'साहित्य में महती शक्ति रही हुई होती है, मानव इतिहास के प्रवाह को पलटने की जैसी शक्ति साहित्य में होती है वैसी तोप तलवार और बम आदि हिंसक शस्त्रों में भी नहीं होती है। अतएव चरित्र-नायकजी सदैव सत्साहित्य के रचने पढ़ने और प्रसारण में संलग्न रहा करते थे।

जैन आगम न्याय काव्य व्याकरण छंद पिंगल, कोष आदि सभी अंगों का चरित्र-नायकजी ने अध्ययन किया था। जैन और जैनेतर सभी सिद्धान्तों से आप परिचित थे। प्राकृत साहित्य के अभ्यास करने की दृष्टि से आपने आचारांग आदि आगमों का अवलोकन किया था। संस्कृत में आपने लघुकौमुदी सिद्धान्त कौमुदी जैसे व्याकरण ग्रंथों का अध्ययन किया था। कोष ग्रंथों में अमरकोष तथा हेमचन्द्र कृत नाम माला का पठन

पाठन किया था। तर्क शास्त्र मे तर्क सग्रह एव न्याय दीपिका आदि पुस्तकें पढ़ी थीं। काव्य ग्रथों में नेमि निर्वाण और मेघदूत आदि का भी वाचन किया था। पिगल में श्रुतबोध एव अलकार मे वाग्भटालकार को हृदयगम किया था। प्राकृत में प्राकृत व्याकरण का तथा जैन-आगमों का तल-स्पर्शी अध्ययन किया था। अपने जीवन के अन्तिम चातुर्मास में कन्नड भाषा का भी अध्ययन किया था तथा व्याख्यान मे कन्नड भाषा के प्रभावशाली वाक्यों का धारा प्रवाह रूप से उपयोग किया करते थे। वृद्धावस्था में भी नित-नूतन भाषा का और नवीन-नवीन साहित्य का अध्ययन-अध्यापन करना आपकी मौलिक विशेषता थी। प्रति दिन सात्विक और उपयोगी साहित्य का सकलन करते रहना आपकी परिष्कृत-रूचिका ही द्योतक है। इस प्रकार हमारे चरित नायकजी हिन्दी, गुजराती, सस्कृत, प्राकृत और मराठी तथा कन्नड़ भाषा के ज्ञाता थे, प्रेमी थे, सग्राहक थे और इन-भाषाओं के व्याख्याता थे।

हमारे चरित्र नायकजी ने साहित्यानुरागी होने से निम्न प्रकार से साहित्य के निर्माण, सपादन, सग्रह और प्रसारण में सहयोग प्रदान किया.—

दशवैकालिक सूत्र, सुख-विपाक, नमिराय अध्ययन, पुच्छी सुण, ज्ञाता धर्म कथाग, अन्तकृताग सूत्र, कल्प सूत्र और प्राकृत व्याकरण आदि ग्रथों का एव आगमों का अनुवाद किया, सपादन किया, तथा सशोधन किया।

जैन-जगत् के उज्जवल तारे, जैन जगत् की महिलाऐं, पर्यूषण पर्व के आठ व्याख्यान, आदर्श-मुनि, मृगापुत्र, त्रिहार-

मधुर झरना सा प्रवाहित हो जाता था, जब कि चरित्र-नायकजी अपनी सकलित साहित्य राशि में से अनोखे अनोखे रत्नों को बटोर बटोरकर जनता के सम्मुख प्रस्तुत किया करते थे। जनता मन्त्र-मुग्ध होकर आपके भाषणों को सुना करती थी। इस प्रकार हमारे चरित्र नायकजी गम्भीर अध्ययेता, विद्वान्-व्याख्याता, कुशल साहित्यकार और विचक्षण साहित्य संग्राहक थे। इन्हीं साहित्यिक गुणों के कारण से साधारण जनता और विद्वत्-जन सभी आपकी ओर आकर्षित थे, तथा आपके साहित्य के अनुरागी थे। यों आपका जीवन और आपका साहित्य भव्य प्राणियों के लिये सदैव आकर्षक, प्रेरणा-प्रद मार्ग-दर्शक एवं तप त्याग का वर्धक ही साबित हुआ है तथा आगे भी सद्-गुणों का सवर्धक ही सिद्ध होगा, इसमें जरा भी सदेह नहीं है।

—: रचनात्मक-कार्य :—

ऐसे मानव-जीवन मे विशेषता मानी गई है, जिसमें स्व-आत्म-कल्याण के साथ साथ परोपकार-वृत्ति की भी विशेषता हो। यह एक उदार-सिद्धान्त है, जो कि महापुरुषों के जीवन का अङ्ग हुआ करता है। हमारे चरित्र-नायकजी का लक्ष्य भी ऐसा ही था कि आत्म-कल्याण की साधना करते हुए यदि परोपकार का प्रसंग पैदा होता हो तो परोपकार भी करना चाहिये। ऐसे ही विचारों के कारण से अनेक संस्थाएँ हमारे चरित नायकजी के मर्यादित एवं साधु-जनोचित सकेतों से ही जीवन-विकास कर सकीं हैं।

चरित्र नायकजी ने जैन दिवाकर गुरुदेव श्री १००८ श्री चौथमलजी महाराज सा० के समक्ष ही कई एक धार्मिक-सस्थाएँ

पथ विहारोपयोगी मध्य भारत का मान चित्र आदि अनेक साहित्यिक ग्रंथ एवं जनोपयोगी कृतियों की रचना की।

आपने आदरणीय गुरुदेव की श्रद्धांजलि के रूप में समर्पित की जाने वाली विराट कृति "अभिनंदन-ग्रंथ" के निर्माण में आपका प्रमुख और महत्वपूर्ण हाथ रहा है तथा निर्ग्रंथ प्रवचन का अनेक भाषाओं में अनुवाद करवा कर तथा संशोधन करके भारतीय-जनता के लिये सुलभ किया। उपरोक्त साहित्यिक सेवा के अतिरिक्त हमारे चरित्र नायकजी ने निम्नोक्त पुस्तकों की भी रचना की थी—

(१) गुरुगुण महिमा, जो कि स्तवनों का सुन्दर संग्रह है।
(२) महावीर स्तोत्र जो कि प्राकृत में होता हुआ संस्कृत-छाया सहित है तथा जिसमें हिन्दी शब्दार्थ, भावार्थ एवं अन्वयार्थ आदि है।
(३) सीता वनवास—जिसकी आपने प्रिय-सुबोधिनी व्याख्या तैयार की है।
(४) राम-मुद्रिका इसकी भी आपने प्रिय-सुबोधिनी टीका तैयार की है।

इसी प्रकार से व्याख्यान में काम आने लायक हजारों श्लोक कवित्त दोहे चुटकले कहावतें उदाहरण और ऐतिहासिक घटनाओं का संकलन तथा संग्रह किया था जिनका उपयोग समयानुसार हमारे चरित्र-नायकजी व्याख्यान में किया करते थे और जनता पर इसका हृदय स्पर्शी प्रभाव पड़ा करता था। उस समय में भक्तिरस वैराग्यरस करुण-रस तथा हास्य-रस का

चरित्र नायकजी की व्याख्यान शैली सभी जाति वालों के लिये और सभी धर्म वालों के लिए समान रूप से हित-कारिणी थी। हिन्दी, गुजराती, मराठी और कन्नड़ आदि विविध-भाषाओं में आपके प्रवचन हुआ करते थे। अहिंसा, सत्य, परोपकार, आत्मवाद, ईश्वरवाद, कर्मवाद आदि तात्विक, दार्शनिक, नैतिक, एव व्यावहारिक विषय ही आपके व्याख्यानों के प्रमुख अग हुआ करते थे। आपकी समयोचित व्यावहारिकता, वाक्य कुशलता एव विवेक-शीलता की सर्वत्र चर्चा की जाती थी। इस प्रकार आपका जीवन ठोस रचनात्मक प्रवृत्ति पर आधारित था, जो कि सोने मे सुगध के समान प्रतीत होता था।

—: विहार और चातुर्मास :—

हमारे चरित्र नायकजी ने राजस्थान, देहली प्रदेश, लखनऊ और कानपुर का इलाका, मध्य प्रदेश, मालवा, बम्बई प्रदेश, अहमदाबाद क्षेत्र, महाराष्ट्र, कर्नाटक, आदि आदि दूर दूर के क्षेत्रों तक विहार किया था। दिल्ली, कानपुर, लखनऊ, बीकानेर, जोधपुर, उदयपुर, कोटा, इन्दौर, उज्जैन, बड़ौदा, अहमदाबाद, बम्बई, हिंगणघाट, भूसावल, जलगाव, अहमदनगर, पूना सतारा शोलापुर, रायचूर इत्यादि इत्यादि नगरों को चरित नायकजी ने अपने चरण रज से पवित्र किया था। यों चरित नायकजी ने हजारों मीलों की पैदल-यात्रा कर सैंकडों ग्रामों को स्पर्शते हुए और लाखों पुण्यात्माओं को धर्म का स्वरूप समझाते हुए भारत-भ्रमण किया था। आपके एकान्त हित कारक भ्रमण से हजारों [सशयालु मानवों के हृदय में सम्यक् दर्शन की स्थायी जड़ जमी,

स्थापित करवाई थी। तत्पश्चात् भी आपकी प्रेरणा से अनेक धार्मिक संस्थाएँ स्थापित हुईं। नागौर और रतलाम में बोर्डिंग की स्थापना हुई एवं सिंघनूर (जिला-रायचूर) में धार्मिक पाठशाला के लिये आपके उपदेश से स्थायी फंड हुआ।

आप जहां भी पधारते थे, वहां पर धार्मिक-शिक्षण के लिये ही अधिक फरमाया करते थे। आपका उपदेश था कि धार्मिक ज्ञान तो प्रत्येक व्यक्ति को अनिवार्य रूप से सीखना ही चाहिये। आप स्वयं भी धार्मिक-ज्ञान की शिक्षा निरन्तर दिया करते थे। विहार काल में भी ठहरने के स्थानों पर सामायिक प्रतिक्रमण आदि सिखाया ही करते थे।

जैन शास्त्रों के अध्ययन अध्यापन में ही चरित्र नायकजी अधिक से अधिक समय लगाया करते थे। आवश्यक कार्यों से निवृत्त होकर पढ़ने लिखने के कार्य में लग जाया करते थे। पैंसठ वर्ष की आयु होने पर भी आपने एक जिज्ञासु के समान रायचूर चातुर्मास में नियमित रूप से कन्नड़-भाषा का अध्ययन प्रारम्भ किया था। यों आप अपने जीवन के एक एक क्षण का सदुपयोग किया करते थे।

आपके निष्कपट हृदय से प्रस्फुटित होने वाले मधुर-वचन श्रोताओं के हृदय को मन्त्रवत् मुग्ध कर दिया करते थे। श्रोता समुदाय आपके मुखारबिंद से निकली हुई आगम-वाणी से वैराग्य एवं त्याग के रस में आकण्ठ मग्न होकर महान् आनन्द का अनुभव किया करता था। कई पुण्यात्माएँ तत्काल ही विविध प्रकार के त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण किया करती थीं।

१४	१९८३	उदयपुर	गुरुदेव के साथ
१५	१९८४	सादड़ी (मारवाड़)	पृथक चातुर्मास
१६	१९८५	रतलाम	गुरुदेव के साथ
१७	१९८६	जलगांव	"
१८	१९८७	अहमद नगर	"
१९	१९८८	बम्बई (कादा वाड़ी)	"
२०	१९८९	मनमाड़	"
२१	१९९०	ब्यावर	"
२२	१९९१	उदयपुर	"
२३	१९९२	कोटा	"
२४	१९९३	आगरा	"
२५	१९९४	कानपुर	"
२६	१९९५	दिल्ली	"
२७	१९९६	उदयपुर	"
२८	१९९७	पालनपुर	पृथक् चातुर्मास
२९	१९९८	ब्यावर	गुरुदेव के साथ
३०	१९९९	मन्दसौर	"
३१	२०००	चित्तौड़गढ़	"
३२	२००१	उज्जैन	"
३३	२००२	इन्दौर	"
३४	२००३	सादड़ी (मारवाड़)	"
३५	२००४	ब्यावर	"
३६	२००५	जोधपुर	"
३७	२००६	रतलाम	"
३८	२००७	कोटा	"

लाखों पुरुषों के मन-मानस में धर्म की ज्योति जागृत हुई और सैंकड़ों प्रकार के त्याग-प्रत्याख्यान का निर्मल झरना प्रवाहित हुआ।

हमारे चरित नायकजी ने अपने साधु जीवन में सैंतालीस ४७ चातुर्मास किये जिनमें से १२ चातुर्मास तो अपने पूज्य गुरुदेव की सेवा में रहते हुए उनके साथ ही किये। एक चातुर्मास मर्द्धेय उपाचार्य श्री १००८ श्री गणेशीलालजी महा० सा० की सेवा में किया और ११ चातुर्मास आपने बड़ों की आज्ञा से सह चारी मुनि वृन्द के साथ पथक किये। चातुर्मासों की सूची क्रमिक रूप से इस प्रकार है:—

क्र.संख्या	संवत्	चातुर्मास-स्थान	विशेष
१	१९७०	नीमच	पृथक् चातुर्मास
२	१९७१	आगरा	गुरुदेव के साथ
३	१९७२	पालनपुर	"
४	१९७३	जोधपुर	"
५	१९७४	अजमेर	"
६	१९७५	ब्यावर	"
७	१९७६	दिल्ली	"
८	१९७७	जोधपुर	"
९	१९७८	रतलाम	"
१०	१९७९	उज्जैन	"
११	१९८०	इन्दौर	"
१२	१९८१	सादड़ी (मारवाड़)	"
१३	१९८२	ब्यावर	"

१४	१६८३	उदयपुर	गुरुदेव के साथ
१५	१६८४	सादड़ी (मारवाड़)	पृथक चातुर्मास
१६	१६८५	रतलाम	गुरुदेव के साथ
१७	१६८६	जलगाव	”
१८	१६८७	अहमद नगर	”
१६	१६८८	बम्बई (कादा वाड़ी)	”
२०	१६८६	मनमाड़	”
२१	१६६०	ब्यावर	”
२२	१६६१	उदयपुर	”
२३	१६६२	कोटा	”
२४	१६६३	आगरा	”
२५	१६६४	कानपुर	”
२६	१६६५	दिल्ली	”
२७	१६६६	उदयपुर	”
२८	१६६७	पालनपुर	पृथक् चातुर्मास
२६	१६६८	ब्यावर	गुरुदेव के साथ
३०	१६६६	मन्दसौर	”
३१	२०००	चित्तौड़गढ़	”
३२	२००१	उज्जैन	”
३३	२००२	इन्दौर	”
३४	२००३	सादड़ी (मारवाड़)	”
३५	२००४	ब्यावर	”
३६	२००५	जोधपुर	”
३७	२००६	रतलाम	”
३८	२००७	कोटा	”

लाखों पुरुषों के मन-मानस में धर्म की ज्योति जागृत हुई और सैंकड़ों प्रकार के त्याग-प्रत्याख्यान का निर्मल झरना प्रवाहित हुआ।

हमारे चरित्र नायकजी ने अपने साधु जीवन में सैंतालीस ४७ चातुर्मास किये जिनमें से ३५ चातुर्मास तो अपने पूज्य गुरुदेव की सेवा में रहते हुए उनके साथ ही किये। एक चातुर्मास श्रद्धेय उपाचार्य श्री १००८ श्री गणेशीलालजी महा० सा० की सेवा में किया और ११ चातुर्मास आपने बड़ों की आज्ञा से सहचारी मुनि-वृन्द के साथ पृथक किये। चातुर्मासों की सूची क्रमिक रूप से इस प्रकार है:—

क्र संख्या	संवत्	चातुर्मास-स्थान	विशेष
१	१९७०	नीमच	पृथक् चातुर्मास
२	१९७१	आगरा	गुरुदेव के साथ
३	१९७२	पालनपुर	„
४	१९७३	जोधपुर	„
५	१९७४	अजमेर	„
६	१९७५	ब्यावर	„
७	१९७६	बिस्की	„
८	१९७७	जोधपुर	„
९	१९७८	रतलाम	„
१०	१९७९	उज्जैन	„
११	१९८०	इन्दौर	„
१२	१९८१	सादड़ी (मारवाड़)	„
१३	१९८२	ब्यावर	„

—: संथारा और स्वर्गवास :—

चातुर्मास के पूर्ण होने पर रायचूर से विहार करके लिंगसूर की छावनी, मुद्गल, इलकल होते हुए गजेन्द्रगढ पधारे। समय से पहले कौन कह सकता था कि—"चरित नायकजी" के लिये यह अन्तिम स्पर्शन क्षेत्र है।

काल की महिमा अगम्य है। भविष्य के गर्भ मे क्या रहस्य निहित है ? इसको कौन बतला सकता है ? मृत्यु के आगे तीर्थंकर, चक्रवर्ती, साधु-महात्मा, ज्ञानी, ध्यानी, तपस्वी, राजा और रक किसी भी प्राणी का कोई भी प्रयत्न सफल नहीं हो सकता है, तो फिर हमारे चरित नायकजी के स्वर्गवास के आगत समय को भी कौन टाल सकता था भवितव्यता प्रबल और अनिवार्य ही होती है। अस्तु।

गजेन्द्रगढ मे हमारे चरित्र नायकजी के पांच व्याख्यान ही हुए थे। क्रूर काल का कुचक्र प्रतिक्षण नजदीक चला आरहा था, आसन्न भविष्य के गर्भ मे जो दुर्घटना घटने वाली थी, दैव का जो दुर्विपाक सामने अति शीघ्र ही समुपस्थित होने वाला था, उसके सम्बन्ध में सभी अज्ञात थे। क्या मालूम था कि-हमारे हृदय सर्वस्व हमारे से बिछुड ने वाला है ! हमारा जीवन आश्रय हीन होने वाला था। ता० ६-१-६० के दिन चरित नायकजी के सीने मे, छाती मे, दर्द होने लगा, दूसरे दिन ता० ७-१-६० को गजेन्द्रगढ के श्री सघ ने डाक्टर की व्यवस्था की, डाक्टर सा० आये, जाच पड़ताल की और आराम लेने को कहा।

३९	२००८	पाली	पृथक् चातुर्मास
४०	२००९	उदयपुर	श्री उपाचार्यश्री महा० के साथ
४१	२०१०	भूसावल	पृथक् चातुर्मास
४२	२०११	सिंगणघाट	"
४३	२०१२	कोटा	"
४४	२०१३	नागोर	"
४५	२०१४	बंबई (माटुंगा)	"
४६	२०१५	पूना	"
४७	२०१६	रायचूर (कर्णाटक)	"

अन्तिम चातुर्मास में रायचूर में बैंगलोर मैसूर हैदराबाद सोलापुर बेल्लारी कोप्पल सिंधनूर, बीजापुर इलकल और बागलकोट आदि अनेक स्थानों के श्री संघों ने अपने अपने क्षेत्र को स्पर्शने की हार्दिक विनंति की थी। महाराज सा० ने पांच आगार रखकर वहां से बैंगलोर की ओर "सुखे-समाधे" विहार करने का आश्वासन दिया था और फरमाया था कि चाहे कितनी ही दूर जाऊँ, फिर भी बैंगलोर की ओर विहार करने के भाव हैं। इससे प्रतीत होता है कि हमारे चरित नायकजी का पवित्र दृष्टिकोण कितना प्रेममय था कि जनता की विनंति को मान देने हेतु सब कुछ कष्ट सहने को तैयार थे। धन्य है हमारे चरित्र नायकजी के विशाल हृदय को और धन्य है आपकी प्रेम-दृष्टि को जिसके बलपर ज्ञानी मानी धनी सभी नत-मस्तक हो जाते थे और आपके दर्शनों से अपने को कृत कृत्य मानते थे। सचमुच में हमारे चरित नायकजी जैन-समाज के लिये महान् प्रभावक और अमिट ज्योति वाले रत्न थे।

का अनुभव करके और परम पूज्य गुरुदेव के अत्यधिक हार्दिक आग्रह को देखकर के ता० ८-१-६० के प्रात काल मे नव बजकर पन्द्रह मिनिट पर यावज्जीवन का सथारा करा दिया। उस समय के दृश्य की स्थिति अवक्तव्य थी हृदय भयकर वेदना से अभिभूत था, मस्तिष्क विभिन्न कल्पनाओं से, और इस अज्ञात वज्रपात से आक्रान्त था, सभी के मुखों पर घोर उदासी की कालिमामय छाया पडी हुई थी, सभी अस्त व्यस्त होकर आस पास में जा आ रहे थे। गजेन्द्रगढ के श्री सघ ने रायचूर आदि श्री सघों को हमारे चरित नायकजी के यावज्जीवन संथारे के समाचार पहुँचा दिये थे, संथारे की सूचना प्राप्त होते ही आसपास के क्षेत्रों की जैन अजैन जनता गुरुदेव के अन्तिम दर्शन करने की भावना से इस प्रकार उमड पड़ी, जिस प्रकार कि वर्षा काल में वर्षा के पानी से नदी उमड़ पडती है।

अत में ता० ८-१-६० पौष शुक्ला दशमी शुक्रवार के दिन के नव बजकर पैंतालीस मिनिट का वह घोर दु खद अशुभ क्षण उपस्थित हुआ ही, कि जिस क्षण मे प्रातः वन्दनीय गुरुदेव हम उपस्थित शिष्यों को विलखाते हुए छोड़कर एव "अरिहत अरिहंत" का निर्निमेप रूप से जाप करते हुए इस नश्वर शरीर का परित्याग करके और सथारे की निर्मल रीति से सीजाते हुए देवलोक की भव्य उपपात शैय्या पर जा विराजे।

धार्मिक वृद्ध, नर-नारी, अमीर-गरीब, जैन-अजैन, शिक्षित-अशिक्षित सभी के मुखों पर अभूत पूर्व गम्भीर दु ख की छाया व्याप्त हो गई। मानों ऐसा अनुभव होता था कि—आज जैन-समाज का देदीप्यमान हीरा खो गया है, सन्तों ने अपना सिर-

महाराज सा० को मानों अपने जीवन सूर्य के अस्त होने की बात विदित हो गई त्यों उस समय में उपस्थित पांचों साधुओं को उसी प्रकार की हित-शिक्षाएँ तथा आश्वासन देने लगे, जिस प्रकार कि एक सुयोग्य पिता अपने अन्तिम समय में आज्ञा कारी पुत्रों को दिया करता है। हम पांचों साधु—'तपस्वी श्री वसन्तीलालजी महाराज सिद्धान्त प्रभाकर श्री मेघराजजी महाराज व्याख्यानी श्री गणेश मुनिजी महाराज तपस्वी मुनि श्री पन्नालाल जी महाराज और इन पंक्तियों का लेखक गणेशमुनि में महाराज सा की सेवा में उपस्थित था हमें गुरुदेव की ऐसी अन्तिम शिक्षाओं से अत्यधिक खिन्नता और वेदना अनुभव हो रही थी। महाराज सा० ने फरमाया कि— 'ज्ञान-दर्शन चारित्र में वृद्धि करना और जीवन को निरन्तर निर्मल से निर्मलतर ही बनाते रहना।" ता० ८-१-६० के प्रातःकाल के पांच बजे महाराज सा के पुन सीने में-छाती में अत्यधिक पीड़ा होने लगी उसी समय में गुरु देव ने चौरासी लक्ष जीव-योनियों से क्षमा-याचना करते हुए हम पांचों मुनियों को कहा कि— अब मुझे यावज्जीवन का संथारा करा दो।" पांचों मुनिराज यों सुनते ही हत ज्ञान जैसे हो गये कि कर्तव्य विमूढ़ जैसे बन गये किन्तु महाराज सा० के अति आग्रह को देखते हुए यही विचार किया कि— यदि महाराज सा० ऐसी भावना ही प्रकट कर रहे हैं तो सागारी संथारा करवा दें।' और तदनुसार सागारी संथारा करवा दिया। गुरुदेव धर्म ध्यान की आराधना में संलग्न हो गये दशवैकालिक भक्तामर, आलोयणा पाठ आदि का श्रवण करते रहे। किन्तु वेदना तो प्रतिक्षण बढ़ती ही जा रही थी। शरीर शिथिल से शिथिलतर हुआ जा रहा था अन्त में समय तथा संयोगों की अति विषमता

का अनुभव करके और परम पूज्य गुरुदेव के अत्यधिक हार्दिक आग्रह को देखकर के ता० ८-१-६० के प्रात काल मे नव बजकर पन्द्रह मिनिट पर यावज्जीवन का संथारा करा दिया। उस समय के दृश्य की स्थिति अवक्तव्य थी हृदय भयकर वेदना से अभिभूत था, मस्तिष्क विभिन्न कल्पनाओं से, और इस अज्ञात वज्रपात से आक्रान्त था, सभी के मुखों पर घोर उदासी की कालिमामय छाया पडी हुई थी, सभी अस्त व्यस्त होकर आस पास मे जा आ रहे थे। गजेन्द्रगढ़ के श्री सघ ने रायचूर आदि श्री संघों को हमारे चरित नायकजी के यावज्जीवन संथारे के समाचार पहुँचा दिये थे, संथारे की सूचना प्राप्त होते ही आसपास के क्षेत्रों की जैन अजैन जनता गुरुदेव के अन्तिम दर्शन करने की भावना से इस प्रकार उमड पडी, जिस प्रकार कि वर्षा काल में वर्षा के पानी से नदी उमड़ पडती है।

अत मे ता० ८-१-६० पौष शुक्ला दशमी शुक्रवार के दिन के नव बजकर पैंतालीस मिनिट का वह घोर दु:खद अशुभ क्षण उपस्थित हुआ ही, कि जिस क्षण मे प्रातः वन्दनीय गुरुदेव हम उपस्थित शिष्यों को बिलखाते हुए छोड़कर एव "अरिहत अरिहत" का निर्निमेष रूप से जाप करते हुए इस नश्वर शरीर का परित्याग करके और सथारे की निर्मल रीति से सीजाते हुए देवलोक की भव्य उपपात शैय्या पर जा विराजे।

बालक वृद्ध, नर-नारी, अमीर-गरीब, जैन-अजैन, शिक्षित-अशिक्षित सभी के मुखों पर अभूत पूर्व गम्भीर दुःख की छाया व्याप्त हो गई। मानों ऐसा अनुभव होता था कि—आज जैन-समाज का देदीप्यमान हीरा खो गया है, सन्तो ने अपना सिर-

वास गुमा दिया है धर्म ने मानों अपना रक्षक ही खो दिया है। संघ आज एक कुशल सेना नायक से वंचित हो गया है साधर गन मानों अपने संरक्षक से हीन हो गये हैं, साधारण जनता ने अनुभव किया कि मानों आज हमारे से हमारा पथ प्रदर्शक ही छीन लिया गया है अजैन जनता ने अनुभव किया कि एक प्रकाश-स्तंभ की ज्योति ही बुझ गई है। यों सभी धर्मों की जनता दुःख के समुद्र में डूबी हुई घोर मानसिक पीड़ा का अनुभव कर रही थी।

गजेन्द्रगढ़ श्री संघ की ओर से जीवन के अन्तिम समय के अनुरूप रथ यात्रा की तैयारी की गई जिसका वर्णन भेरु लाल श्री पावेचा ने इस प्रकार किया "आकर्षक वैकुण्ठी बनाई गई और महाराज सा० के पुद्गलमय शरीर को जिस समय में उस मनोरम वैकुण्ठी में स्थापित किया, उस करुणा जनक समय में क्या जैन और क्या अजैन सभी के नेत्रों में असह्य वियोग से उत्पन्न होने वाली वेदना मय आंसुओं की धारा फूट पड़ी।

आस पास के क्षेत्रों की जनता यह हृदय विदारक समाचार सुनते ही गजेन्द्रगढ़ की ओर दौड़ पड़ी। बीजापुर, बागल कोट गुलेदगढ़ इरकल मुद्गल; रायपुर सिंधनूर कुष्टगी कोप्पल कुकनूर गदग धारवाड़ हुबली और नेसिंगपुर आदि अनेक क्षेत्रों का जनता हजारों की संख्या में इस अन्तिम यात्रा में सम्मिलित हुई।

हमारे चरित नायकजी के पुद्गल मय शरीर की यह अन्तिम रथ यात्रा शोक-समुद्र में डूबी हुई होने पर भी जनता के

प्रेम मय व्यवहार से एक उल्लेखनीय स्थिति वाली हो गई थी। गजेन्द्रगढ़ मे जैन अजैन, हिन्दू-मुसलमान आदि प्रत्येक कौम के सभी व्यक्ति, बाल वृद्ध, नर-नारी, आदि बच्चा बच्चा इस समारोह में सम्मिलित था। सारे कस्बे में पूर्ण हड़ताल रही। शव यात्रा मे सम्मिलित जनता की सख्या कहते हैं कि लगभग बीस हजार जितनी थी। चरित्र नायकजी के जय नाद के साथ श्मशान की ओर जुलूस रवाना हुआ। आगे आगे चरित्र नायकजी के प्रति सन्मान प्रकट करने के लिये बैंड बाजा था, पीछे कर्णाटक जनता की भजन मण्डली थी, जो वाद्य विशेष बजाती हुई एवं गायन गाती हुई चल रही थी। तत्पश्चात् चरित्र नायकजी का सजाया हुआ चमकता हुआ विमान था। विमान के चारों ओर हजारों की सख्या मे जनता चल रही थी। सबसे पीछे कर्णाटकी महिलाऐं अपनी भाषा मे भजन-गायन करती हुई और चरित्र-नायकजी की जय जयकार करती हुई चल रही थीं। जुलूस दिन के लगभग तीन बजे से रवाना हुआ था, जोकि यथा स्थान पर लगभग पाच बजे के बाद में पहुँचा। सम्पूर्ण मार्ग में "जय जयनन्दा जय जय भद्दा" के विजय घोष से एव चरित्र नायकजी के जय जय कारी निनाद से आकाश गूंज उठता था। सैंकड़ों रुपयों की चिल्लर मार्ग-भर में न्यौछावर स्वरूप फैंकी गई। यों समारोह पूर्वक एव ठाठ-पाट के साथ यह अन्तिम यात्रा यथा स्थान पर पहुँच कर समाप्त हुई।

अन्त में अर्थी चुनी गई, मणों की तादाद मे खोपरा, नारियल, चन्दन आदि बिछाया गया, घृत-कपूर आदि भी पूरे गये और चरित्र-नायकजी का अंत में पुद्गलमय शरीर जय जय कार के साथ उस पर लैटाया गया, उसमें अग्नि प्रविष्ट की गई,

थोड़ी ही देर में अग्नि की ज्वालाओं ने देखते-देखते ही अपना काम समाप्त कर दिया।

परम आराध्य और श्रद्धेय चरित्र नायकजी अब नहीं रहे, यह लिखते हुए हृदय फटा जारहा है परन्तु यह मोह की महिमा है। वास्तव में देखें तो चरित्र नायकजी ने अपना जन्म ही सफल कर दिया और मन वचन-काया से जीवन-पर्यंत समाज की सेवा की और आम जनता की ज्ञान-दर्शन-चारित्र द्वारा सेवा करते रहे, यही उनका हमारे सामने आदर्श है और इसीमें हमें संतोष भी है। आपका सेवामय जीवन ज्ञानमय चारित्र प्रेममय त्याग, व्यवहारमय विवेक और त्यागमय साहित्यिक प्रवृत्ति आदि गुण सदैव के लिये हमें प्रकाश स्तम्भ समान मार्ग-प्रदर्शित करते रहेंगे।

स्मशान-यात्रा से लौटने के पश्चात् रात्रि में आगत एवं सम्मिलित सभी कस्बों के तथा शहरों के श्रावकों की एक मीटिंग सभा हुई। इसमें स्वर्गीय आत्मा के प्रति विविध भावना मय श्रद्धांजलियां समर्पित की गई तथा चारित्र नायकजी की स्मृति में एक फंड योग्य कार्यों में खर्च करने के हेतु एकत्र किया गया, तत्काल लगभग १३०००) तेरह हजार जितने का फंड हुआ और संरक्षक रूप से मी सज्जनों की एक कमेटी बनाई गई। तत्पश्चात् दूसरे दिन श्री संघ की ओर से और तीसरे दिन भी स्थानीय म्युनिसिपैलिटी की ओर से शोक सभायें की गई जिसमें महाराज सा के यशोगान के साथ २ जीवन रिवायें ग्रहण करने की प्रेरणायें की गई तथा शोक प्रस्ताव पास किये गये। उसी दिन भारत के सभी प्रमुख प्रमुख कस्बों एवं शहरों के श्री संघों को

तार से सूचना दी गई थी। गजेन्द्रगढ़ के तार घर से लगभग ६४ तार दिये गये थे, इसके अतिरिक्त बंबई से भी अनेक तार विभिन्न शहरों को दिये गये थे। बम्बई से ऑलइन्डिया रेडियो को भी चरित्र-नायकजी के स्वर्गवास के समाचार भारत भर में प्रशारित करने के लिये सूचना की गई थी भारत-भर के स्थानक-वासी-समाज मे एवं प्रेमी जनता में पूज्य गुरुदेव के अचानक ही स्वर्गवास हो जाने के समाचार से उदासी की और शोक की भारी लहर फैल गई थी। अनेक स्थानों पर मुनिराजों ने अपने-अपने व्याख्यान बन्द रक्खे तथा चार-चार लोगस्स का ध्यान किया-और कराया। सैंकड़ों की सख्या में विभिन्न स्थानों पर शोक-सभाएँ की गई, अनेकानेक तार और पत्र तथा शोक-प्रस्ताव प्राप्त हुए। जिनकी सूची और सार भाग इसी जीवन चरित्र में आगे दिया जा रहा है। यों पूज्य गुरुदेव का आज भौतिक-शरीर विद्यमान नहीं है, किन्तु उनका यशः-शरीर अवश्यमेव विद्यमान है उनके चारित्र से मिलने वाली शिक्षाएँ विद्यमान है, अतएव अत में श्रद्धाजलि रुप से शासन-देव से यही विनति है कि गुरुदेव की पवित्र-आत्मा अनंत शाति का अनुभव करे और हम अनुयायी गण उन्हीं के प्रदर्शित मार्ग पर चलें। जिससे कि समाज में ज्ञान दर्शन चारित्र की वृद्धि हो और सकल जनता परम शाति का अनुभव करे।

—: गुरुदेव का शिष्य-समुदाय :—

स्वर्गीय गुरुदेव का शिष्य-समुदाय सम्बन्धी आवश्यक विवरण निम्न प्रकार से है:—

(१) सेवा भावी श्री मन्नालालजी महाराज सा०—आपका जन्म ब्यावर में हुआ आपके पिता श्री जी का शुभ नाम श्री फौजमलजी था श्री श्रीमाल था आपकी दीक्षा संवत् १९९२ में पौष मास में हाथरस में हुई। आप गायन कला में एवं साहित्य-प्रचार में विशेष दक्ष हैं। आपका संसारी नाम श्री मांगीलालजी था।

(२) तपस्वी श्री बख्तावरसिंहजी महाराज सा०—आपका जन्म उदयपुर में सीसोदिया गोत्र में हुआ था। आपकी दीक्षा ब्यावर में संवत् १९९८ के मगसर मास में हुई थी। चित्तौड़गढ़ में संवत् २००० में आपका स्वर्गवास हो गया। आपने दीक्षा के प्रथम वर्ष में ११ की तपस्या द्वितीय वर्ष में ४५ की तपस्या और तृतीय वर्ष में ३७ की दीर्घ तपस्या करके अपने जीवन को सफल बना लिया था।

(३) व्याख्यानी श्री गणेश मुनिजी महाराज सा०—आपका जन्म ब्यावर में संवत् १९८० के मगसर सुदी पंचमी बुधवार को हुआ आपके पिता श्री जी का शुभ नाम श्री जवानमलजी संकलेचा था और माता श्री जी का शुभ नाम श्री हंजा बाई था। आपकी दीक्षा संवत् २००२ के चैत्र मास के कृष्ण पक्ष की पंचमी को बड़ी सादड़ी (मेवाड़) में हुई। आप प्रकृति से भद्र हैं। सेवा भावी हैं। आपका पूर्व नाम श्री रतनलालजी था।

(४) तपस्वी श्री पन्नालालजी महाराज सा०—आपका जन्म कुक्षी ग्राम (मध्य प्रदेश) में मुरड़िया—गोत्र में हुआ था। आपके पिता श्री जी का शुभ नाम श्री चुन्नीलालजी था और माता श्री जी का नाम सुश्री हमीर बाई था। आपकी दीक्षा संवत् २००३ के

चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की १२ को डूंगला ग्राम में हुई थी। आप उग्र तपस्वी हैं। दीक्षा ग्रहण करने के बाद आप ने निम्न प्रकार से बड़ी-बड़ी तपस्याएँ कीः—

पहली तपस्या अट्ठाई, दूसरी ३१, तीसरी ४१, चौथी ३०, पांचवीं ४५, छट्ठी ४४, सातवीं ४७, आठवीं ४८, नवमीं २०, दशवीं ३६ ग्यारहवीं ३८, बारहवीं ३८, तेरहवीं ३७, और चौदहवीं ३५ तपस्याएँ की। आप सरल हृदयी हैं। आप की तपस्या आदर्श है। आपका ससारी नाम श्री फूलचन्दजी था।

(५) शास्त्री-मुनि-उदय—इन पंक्तियों का लेखक और श्रद्धाजलिकार ही "उदय-मुनि" है। जन्म-स्थान विरमावल (मध्य-प्रदेश) है। सवत् १९८५ के ज्येष्ठ मास की कृष्ण पक्ष की दशवीं तिथि ही जन्म दिवस है। पिता श्री जी का शुभ नाम श्री पन्नालालजी सा० सोनी है और माता श्री जी का शुभ नाम सुश्री नाथी बाई था। सवत् २००८ की वैशाख शुक्ला अक्षय-तृतीया ही दीक्षा तिथि है। एव दीक्षा-स्थल विरमावल ही है। ससारी नाम गेंदालाल था।

प्रसगवश लेखक की भावना है कि इस जीवन चरित्र के लिखने में यदि छद्मस्थ-अवस्था वशात् न्यूनाधिक कुछ लिखने में आया हो तो क्षमा प्रार्थी है।

—: प्रार्थना :—

हे प्रभो! आज मेरे गुरुदेव नहीं हैं, किन्तु आपका त्रिकाल सत्य शासनरूप जैन धर्म विद्यमान है गुरुदेव ने मुझे

आपके इस निवृत्ति प्रधान धर्म में दीक्षित किया और मुझे कृत कृत्य किया। इसी में मैं अपना जन्म सफल मानता हूँ और आपसे प्रार्थना करता हूं कि मेरे जीवन में निरन्तर ज्ञान दर्शन चारित्र का विकास होता रहे और वह शुभ दिन प्राप्त हो-जब कि मैं भी आपके समान ही मुक्त हो जाऊँ। जैन धर्म की जय और स्वर्गीय गुरुदेव उपाध्याय श्री १००८ श्री प्यारचन्दजी महाराज साहब की जय।

:: जीवन के मधुर क्षणों से ::

—— ·o: ——

(ले० उपाध्याय कविरत्न श्री अमरचन्दजी म०)

उपाध्याय श्री प्यारचन्दजी महाराज आज हमारे मध्य में नहीं रहे, परन्तु उनके सद्गुणों की मधुर स्मृति आज भी जन जन के मानस पर अङ्कित है। उनके पावन जीवन की मधुरता, सुन्दरता एवं सरसता स्वयं अपने आप में एक पवित्र संस्मृति है। क्योंकि सन्त जीवन स्वयं अपना चिरन्तन-स्मारक होता है। फिर भी उसके दिव्य गुणों का समादर करने के लिए तथा उसके प्रति अपनी

श्रद्धा को अभिव्यक्त करने के लिए उनके अनुगामी अपनी भक्ति के पुष्प अर्पण किया करते हैं। करना भी चाहिए।

श्रद्धेय प्यारचन्दजी म० के साथ मेरा प्रथम परिचय अजमेर सम्मेलन के अवसर पर हुआ था परन्तु वह एक अल्प परिचय था। उनके मधुर व्यक्तित्व का स्पष्ट परिचय छोटा मंडी आगरा में हुआ था जब कि वे अपने पूज्य गुरुदेव दिवाकरजी म० की सेवा में थे और कानपुर का वर्षावास समाप्त करके आगरा लौटे थे उस अवसर पर मैं भी दिल्ली से आगरा आया था। कतिपय दिवसों का वह मधुर मिलन आज भी मेरे जीवन की मधुर सस्मृतियों में से एक है जिसको भूलना-भुलाना-सहज सरल नहीं है। वे मधुर क्षण जिन्हों ने गहन परिचय की आधार शिला बन कर दो व्यक्तियों को निकट से निकटतर लाने का महान कार्य किया कैसे भुलाए जा सकते हैं?

सादड़ी सम्मेलन से पूर्व विजयनगर में और अजमेर में मैंने पण्डित प्यारचन्दजी म० के समग्र जीवन का एवं उनके विचारों का निकट से अध्ययन किया था। समाज संगठन में उनका अमित विश्वास था। बिखरे समाज को एक सूत्र बद्ध देखने का उनका चिर स्वप्न था। वे हृदय के अन्तर से यह चाहते थे कि स्थानकवासी समाज मिलकर एक हो और इस संकल्प की पूर्ति के लिए वे बड़े से बड़े त्याग के लिए सदा तैयार मिलते थे जैसा कि ब्यावर में पांच सम्प्रदायों का समीकरण किया भी था।

सादड़ी सम्मेलन तथा सोजत सम्मेलन मे मेरे द्वारा जो कुछ भी सघ सेवा हो सकी उस पवित्र कार्य मे निरन्तर एवं उन्मुक्त भावना से उनकी ओर से जो सक्रिय सहयोग मिला, तदर्थ मैं अपने आपको सौभाग्यशाली समझता हूँ। उक्त दो अवसरों पर उनके विचारों की बुलदी का अन्तरग परिचय मुझ को मिला। उपाध्याय प्यारचन्दजी म० वस्तुतः समाज के एक महान् मूक सेवक थे। सब कुछ करना, फिर भी उस कार्य के फल से अपने आपको मुक्त रखना उनके सुन्दर जीवन की एक विशिष्ट कला जो हर किसी पदवी धर में प्रायः नहीं मिलती। वे कार्य कर्त्ता थे, पर उस सत्कर्म के फल-भोक्ता नहीं थे। मैं समझता हूं यह उनके सन्त जीवन की सर्वतो महती विशेषता थी, जो उन्हीं के युग के दूसरे व्यक्तियों में प्राय सहज-सुलभ नहीं है।

भीनासर सम्मेलन में समाज के बिखराव को देख कर वे अपने आप में अत्यन्त सन्तप्त थे। भीनासर से लौट कर, जब वे अजमेर से नागोर को वर्षावास के लिये जा रहे थे, तब कुचेरा में वे मुझे मिले थे, यह उनका अन्तिम मिलन था। उस समय वे समाज विरोधी तत्त्वों की उखाड़–पछाड़ से अत्याधिक खिन्न थे। समाज-सघटन को छिन्न भिन्न करने वालों के प्रति वे कठोर नीति अपनाने पर विशेष बल देने की संयोजना बना रहे थे। वे नहीं चाहते थे, कि किसी भी कीमत पर समाज सघटन को हम

अपने सम्मुख बिगड़ते देखें। वे हृदय से निर्माता थे, समाज के भव्य निर्माण में उनका अमिट विश्वास था। मैं अपने अन्दर एक गहरी वेदना का अनुभव करता हूं अपने बुद्धि वादी और साथ ही सहृदय साथी के अभाव में। परन्तु क्या करें ?

कालस्य गहना गतिः।" यहां आकर व्यक्ति विवश है।

फिर भी यह एक ज्योतिर्धर महान् व्यक्तित्वशाली जो आज हमारे पास में भौतिक रूप में भले न रहा हो पर विचार रूप में आज भी वह हमारे मानस में स्थित है उनके समुज्ज्वल सद् गुणों के प्रति मैं अपनी ओर से श्रद्धा के दो चार पुष्प अर्पित करता हूं।

मंगलवार १०-८-६० } { रूकमणी भवन, कानपुर

:: श्रद्धांजलि ::

(ले०—मंत्री-मुनि श्री प्रेमचन्दजी महा. सा. पंजाब केशरी)
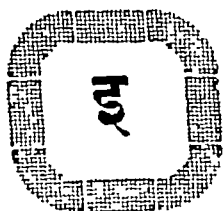
इस जगती तल पर सूक्ष्म और स्थूल अनन्त अनन्त प्राणी जीवन धारण कर आते है। अपने २ जीवन का स्वल्प या दीर्घ काल व्यतीत कर एक दिन चल बसते हैं। यह परम्परा अनन्त २ काल से चली आती है। वास्तव में उन्हीं धर्म परायण आत्माओं के जीवन का मूल्य आका जाता है जो भव्य आत्माएँ अपने पवित्र जीवन क्षणों से स्वपर का कल्याण कर जाती हैं। कुसुमोद्यान में

अनेक रंग बिरंगे कुसुम खिलाते हैं अन्तत वे अपनी सुन्दर छटा दिखला कर येन केन प्रकारेण नष्ट हो जाते हैं। इस पृथ्वी पर कोई भी ऐसा कुसुमोद्यान नहीं है जिसके पुष्प अविनाशी रूप से मुस्कराते हुए खिले ही रहते हों। एक उर्दू के कवि ने ठीक ही कहा है—

कुछ गुल तो दिखला के बहार अपनी हैं जाते
कुछ सूख के कांटों की तरह नजर आते।
कुछ गुल हैं फूले नहीं जामे में समाते
गु ने बहुत ऐसे हैं जो खिलने भी नहीं पाते॥

एक और कवि ने भी ऐसा ही कहा है—

आस है पत्ते के ऊपर दिन चढ़े ढल जायगी।
जो नमी बाकी रही वह धूप से जल जायगी॥

वास्तव में वे ही पुष्प धन्य हैं जो अपने पवित्र जीवन की सुरभि से विश्व को सुगन्धित कर जाते हैं। सुगन्ध हीन पुष्प खिलखिला कर धराशायी हो कर नष्ट हो जाते हैं उनके खिलने की किसी को खुशी नहीं होती और विनष्ट होने की गमी नहीं होती। इस संसार में सुगन्धित जीवन ही सम्मानित होता है। कहा है—

जिन्दगी ऐसी बना जिन्दा रहे दिलशाद तू
जब न हो दुनिया में तो दुनिया को आये याद तू।
मुर्दा रह के जो दिल में दूसरों का दर्द रखते हैं
वो मर के भी लब पे आह सरद रखते हैं॥

वास्तव में श्वासोश्वास रूप वायु के चढ़ाव उतार का नाम ही केवल जीवन नहीं है, यदि ऐसा होता तो लोहार की धमनी (धोंकनी) मनुष्य के श्वासोश्वास वायु से कहीं अधिक मात्रा में वायु ग्रहण करती है और छोड़ती है, किन्तु ऐसा होने पर भी उसमे जीवन सत्ता स्वीकार नहीं की गई है। इसका मूल कारण यही है कि उस धमनी के चढ़ाव उतार के वायु में स्व पर कल्याण की चेतना नहीं है। अपकार मय जीवन स्व पर के लिए हितावह नहीं होता बल्कि संसार के लिए भार-भूत होता है। सच्चा उपकारी जीवन अमर होता है।

उसमे विश्व हित और विश्व प्रेम की तरगें तरंगित होकर ठाठें मारती रहती है। कहा है:—

करो परोपकार सदा, मरे बाद रहोगे जिन्दा,
नाम जिनका जिदा रहे, उनका तो मरना क्या है?
'लगेंगे हर वर्ष मेले, शहीदों के मजारों पर,
धर्म पर मरने वालों का, यही बाकी निशा होगा।"

ठीक हमारे स्वर्गीय उपाध्याय श्री प्यारचन्दजी महाराज का पवित्र जीवन भी ज्योतिर्मय, विकसित, तप त्याग एव विश्व प्रेम की सुवासना से सुवासित एक अनूठा जीवन था, आपने छोटी अवस्था मे ही स्वर्गीय १००८ श्री जगत् विख्यात जगत् वल्लभ, हजारों मूक प्राणियों को अभय दान प्रदाता, जैन धर्म दिवाकर श्री चौथमलजी महाराज के पास दुनिया के मोह ममता के बधनों को तोड़कर जैन भागवती दीक्षा धारण की थी। जहा ये मोह-माया की आधिया बडे बड़े विद्वान और शूरवीर वीरों को भूमका

कर जड़ों से उखेड़ कर धराशायी कर देती हैं उस मायावी झंझा-
पात का आपके जीवन पर कुछ भी असर नहीं हुआ। आपने
सच्चे हृदय से गुरु सेवा कर संस्कृत प्राकृत हिन्दी आदि
भाषाओं का और जैनागमों का गहरा अध्ययन किया। आप जैन
दिवाकरजी के ज्येष्ठ शिष्य थे। वे आप पर बहुत ही प्रसन्न थे।
वास्तव में अपने गुरुजी की उपस्थिति में ही श्री दिवाकरजी के
साधु संघ के आप संरक्षक थे। आप साधुओं के साथ बड़े प्रेम
और सहानुभूति का बर्ताव करते थे। यदि आप को साधु संघ के
माता पिता के नाम से उपमित किया जाय तो कोई अत्युक्ति न
होगी। आपकी योग्यता और संघ वात्सल्य भावना के कारण
श्री दिवाकरजी महाराज अपने संघ की ओर से निश्चिन्त रहते
थे। वास्तव में उपाध्याय श्री जी का जीवन एक चमकता हुआ
सितारा था। जैसा आपका नाम था वैसा ही काम था। आपका
शुभ नाम प्यारचन्दजी था। वास्तव में आप प्यार के ही कान्तिमय
उज्ज्वल चन्द्र थे। चन्द्र में दो ही मुख्य विशेषताएँ होती हैं
शीतल और प्रकाश। शीतलता से संतप्त हृदयों को अपनी शीतल
किरणों से शान्ति पहुँचाता है और प्रकाश से अन्धकार का नाश
करता है। इसी प्रकार आपकी शान्तिमय जीवनी से अनेक संतप्त
आत्माओं को शान्ति प्राप्त हुई और आपके जीवन प्रकाश से
अनेक अन्धकारमय जीवनों को ज्ञान रूप प्रकाश मिला। जिससे
वे अपने जीवन को प्रकाशित कर सके। वास्तव में आपका दिव्य
जीवन के प्रकाशस्तम्भ था। आपने मारवाड़ मेवाड़ मालवा,
मध्यप्रदेश उत्तर प्रदेश महाराष्ट्र कर्नाटक आदि प्रान्तों में
विचरण कर अनेक भूली भटकी आत्माओं को सत्पथ का मार्ग
बताया और उस मार्ग पर लगाया।

मुझे भी आप श्री जी के सम्पर्क में रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। मैं यह अनुभव करता हूँ कि आप बहुत ही मिलनसार और प्रेम मूर्ति थे। यह ठीक है कि आप उपाध्याय श्री जी भौतिक जीवन से हमारे बीच मे नहीं हैं, किन्तु उनके प्रेममय जीवन की गुण गाथाएँ तो आज भी इस विश्व में अमर रूप से विचरण कर रही हैं और भविष्य में भी करती रहेगी।

आपके पावन जीवन के विषय मे जितना भी कुछ कहा जाय थोडा है। मैं अपने को उनके गुण वर्णन करने में असमर्थ पाता हूँ, अतः लेखनी बन्द करता हूँ।

४

: सन्त पुरुष के चरणों में :

(ले०—पंडित रत्न मुनि श्री सिरेमलजी (भीमराजजी) म सा

भारतीय संस्कृति में सन्त का सर्वोपरि स्थान रहा है। उसने जीवन के सभी क्षेत्रों को अपने चिंतन के प्रकाश से आलोकित किया है। इतिहास साक्षी है कि समाज एवं राष्ट्र सन्त के चिन्तन पर ही गतिशील था। वह समाज को भी दृष्टि देता था और राष्ट्र को राजा को भी अपने चिंतन का प्रकाश देता था। राजनीति के उलझन भरे प्रश्नों को सुलझाने की ताकत भी उसमें थी। राजनीति और समाज से अलग रह कर भी वह उससे सर्वथा अलग नहीं था। जब भी राष्ट्र पर विपत्ति आती उस समय वह उचित मार्गदर्शन करने से नहीं चूकता था। उसकी साधना केवल अपने हित के लिए नहीं विश्व हित के लिए थी। प्राणी जगत की

शान्ति के लिए थी। यदि भगवान् महावीर की भाषा मे कहूँ तो प्राणी जगत की रक्षारूप दया के लिए ही उसकी साधना थी। उसका प्रवचन उपदेश जनरञ्जन के लिए नहीं होता था। प्रतिष्ठा एव यश तथा मान पत्र या अभिनन्दन पत्र के पुलिन्दे इकट्ठे करने के लिए नहीं होता था। उसका उपदेश होता था केवल समस्त प्राणियों के हित के लिए, उनकी रक्षा के लिये-दया के लिये। इससे स्पष्ट है कि सन्त की साधना केवल अपने लिए नहीं थी। वह केवल अपने आप में कैद नहीं था। उसकी दृष्टि अपने व्यक्तिगत एव साम्प्रदायिक दायरे से भी ऊपर थी। वह केवल अपने को नहीं सारे विश्व को देखकर चलता था। यही कारण है कि उससे प्रकाश की किरणें पाने के लिए राजा भी उसके चरणों मे उपस्थित होता था। और एक सामान्य नागरिक भी उससे जीवन का प्रकाश पाता था। जीवन के सभी क्षेत्रों मे सन्त का वर्चस्व था। और सभी क्षेत्र उसकी साधना के आभारी हैं। आध्यात्मिक, धार्मिक एव दार्शनिक क्षेत्र में ही नहीं बल्कि राजनैतिक एवं सामाजिक क्षेत्रों में भी उसके चिंतन का प्रवाह प्रवहमान रहा है। भारतीय सस्कृति के समस्त पहलुओं पर भारतीय सन्तों ने सोचा विचारा है। चिन्तन मनन किया है। उनका साधना कोष समस्त चिन्तन एव विचार सम्पन्न था। इतिहास से मालूम होता है कि आगम, सूत्र, दर्शन शास्त्र से लेकर धर्म नीति राजनीति आदि के ग्रन्थ भी सन्तों की देन हैं। इसलिए हम कह सकते हैं कि भारतीय सस्कृति सन्त सस्कृति है। सतों ने ही इसका निर्माण किया है और वे ही इसे पल्लवित-पुष्पित करते रहे हैं।

सन्त भारतीय सस्कृति का प्रहरी रहा है। प्रत्येक युग में

उसने राष्ट्र का नेतृत्व किया है। राष्ट्र को मधुरता की किरणें दी हैं, राष्ट्र को सभ्य बनाने का प्रयत्न किया है। हम प्रत्येक युग में सन्त को अपने कार्य में व्यस्त देखते हैं। हम देखते हैं कि वे अपनी चिन्ता में नहीं घुल रहे हैं बल्कि दूसरों के दुःख को देख कर आंसू बहा रहे हैं।

संगम ६ महीने तक महावीर को भयंकर वेदना एवं कष्ट देता है। फिर भी महावीर के बदन पर दुःख की रेखा भी मलक दिखाई नहीं देती। संगम ६ महीने तक कष्ट देता रहा है, फिर भी अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो सका। महावीर को साधना पथ से डिगा नहीं सका। अन्त में वह पराजित होकर वापस अपने स्थान को लौट रहा है ज्योंही उसने अपना पैर उठाया कि महावीर की आंखों से वेदना की दो गर्म बूंदें ढुलक पड़ीं। संगम के बढ़ते हुए कदम रुक गये। वह वापिस मुड़ा और बोला— "भगवन्! अब तो मैं जा रहा हूँ। अब आपको कोई कष्ट नहीं दे रहा हूँ और न दूंगा।" महावीर ने कहा— संगम! मैं अपने दुःख से दुःखी नहीं हूँ।" संगम— फिर किसके कष्ट से पीड़ित हैं? भगवन्!"

महावीर—"तुम्हें मिलने वाले कष्टों की कल्पना से।"

संगम—"आश्चर्य! मुझे, यह कैसे भगवन्!"

महावीर—"संगम! मनुष्य जो कुछ करता है वह निष्फल नहीं जाता। तुम्हारा यह क्रूर कर्म जिस रूप में उदय आने वाला है उस समय तुम्हारी जो स्थिति होगी उसका कल्पना चित्र देख कर मेरा हृदय भर आया। तू मेरे पास आकर भी खाली हाथ

लौट रहा है। मधुर, स्वच्छ एवं शीतल जल से परिपूर्ण नीर सागर के तट पर पहुँच कर भी प्यासा जा रहा है। संगम! तुमने कभी सोचा है कि तुम्हारी भविष्य में क्या स्थिति होगी। बस, मेरे व्यथित होने का यही कारण है। तू अपने दुःख एव अन्धकार मय भविष्य को उज्ज्वल बनाने का प्रयत्न कर।" यह है सन्त हृदय। "कितना दयार्द्र, उदार एव विराट है-सत्य जीवन?"

वर्तमान मे भी सत जीवन का महत्व पूर्ण स्थान है। महात्मा गाधी का चिन्तन एक संत का चिन्तन कहा जा सकता है। उन्होंने सत के व्यापक दृष्टि कोण से सोचा था, विचारा था। सत्य, अहिंसा एव धर्म को राजनीति के साथ जोड़कर यह सिद्ध कर दिया था कि सत्य एवं अहिंसा का उपयोग केवल मन्दिर एवं धर्म स्थानों तक ही सीमित नहीं है। उसकी साधना जीवन के क्षेत्रों मे सर्वत्र की जा सकती है, और उसमें [illegible] ही होता है। उनके द्वारा सचालित अहिंसा आन्दोलन, सत्याग्रह, ने यह सिद्ध कर दिया कि बिना खून बहाए भी [illegible] दूर कर सकते हैं। आज विश्व के प्रमुख वैज्ञानिक [illegible] नेता इस बात को एक स्वर से स्वीकारते हैं कि [illegible] एव युद्ध से नहीं, अहिंसा से ही हो सकती है [illegible] एटम बम एव उद्जन बम का निर्माण [illegible] अभिशाप बन गया है। इसका कारण [illegible] के प्रधान मत्री पण्डित जवाहरलाल [illegible] "वैज्ञानिक के पास सत दृष्टि न होने [illegible] के लिए अभिशाप बन रहा है। यदि [illegible] लिए हुए होते तो विज्ञान का इतना [illegible]

वैज्ञानिकों के पास संत हृदय नहीं है तो इधर संतों के पास वैज्ञानिक दृष्टि का अभाव है। वैज्ञानिक दृष्टि का अर्थ है-वस्तु के यथार्थ स्वरूप को समझना। यह नहीं कि परम्परा से चले आरहे असत्य एवं रूढियों के बोझे को ही ढाए फिरना। इसी वैज्ञानिक दृष्टि के अभाव से आजकल संत सामाजिक एवं धार्मिक झगड़ों को नहीं सुलझा पाता। अतः यह आवश्यक है कि वैज्ञानिक संत बने और संत एक वैज्ञानिक। दोनों दृष्टियों के समन्वय से ही विश्व में शान्ति का सागर लहरा सकता है, अस्तु। सन्त जीवन की आज भी महती आवश्यकता है।

उपाध्याय श्री प्यारचन्दजी म० संत पुरुष थे मुझे उनके साथ काम करने का सुअवसर आया है, उनके करुणार्द्र हृदय का अच्छा परिचय मुझे हुआ है साधु सम्मेलन एवं श्रमण संघ के सम्बन्ध में उपाध्यायजी म० के साथ जब-जब विचार विमर्ष करने का सुअवसर आया तब तब अतीव सहानुभूति के साथ प्रेम पूर्वक मेरे जैसे छोटे साधु के साथ भी वे विचार-विमर्ष किया करते थ। सादड़ी सम्मेलन के बाद श्रद्धेय उपाचार्य श्री जी म० की सेवा में सर्व प्रथम चतुर्मास उदयपुर में उपाध्याय श्री जी म० ने किया था तब उपाध्याय श्री जी म० की सेवा का सुन्दर अवसर मुझे मिला। मैंने अनुभव किया कि उनकी मुझ पर असीम कृपा है। उसके बाद भी सोजत मन्त्री मण्डल की बैठक क समय एवं भीनासर साधु सम्मेलन के समय भी उनके दर्शन हुए। उनकी यह बड़ी भावना थी कि मैं श्रमण संघ के किसी पद पर आऊँ। उन्होंने कई बार मुझे समझाया कि मैं मन्त्री पद को स्वीकार करलू जो मन्त्री पद भीनासर सम्मेलन में मुझे दिया

जारहा था। परन्तु मैंने नम्रता पूर्वक इन्कार कर दिया। उनकी स्नेह स्मृति आज भी मेरे हृदय में ज्यों की त्यों उपस्थित है।

भीनासर साधु सम्मेलन के बाद श्रद्धेय उपाचार्य श्री की आज्ञा प्राप्त करके जब मैंने दक्षिण महाराष्ट्र की यात्रा प्रारम्भ की तब मार्ग के कई क्षेत्रों में मैंने उपाध्याय श्री जी महाराज के दर्शन किये। जहा जहा भी दर्शन हुए वहा वहा उनकी मगलमय कृपा ही मुझे प्राप्त हुई। कभी कभी वे अपने आंतरिक विषयों में भी जब मुझ से खुलकर बातें करते थे एवं मेरी राय मागते थे तब उस समय उनकी उस महान् उदारता को देखकर मैं उनके सामने नतमस्तक हो जाता था। उनकी अपनाने की उस वृत्ति को देखकर आज भी उनके प्रति गौरव की भावना मेरे दिल में उमड़ रही है।

माटु गा (बम्बई) चातुर्मास पूर्ण करके उपाध्याय श्री जी म० जब पूना पधारे थे तब मैं उनके स्वागत के लिए पूना से करीब १५ मील दूर चिंचवड तक गया था। पूना मे स्वागत एवं सेवा करने का सुअवसर मुझे मिला, वे क्षण आज भी अनमोल धरोहर के रूप में मेरे हृदय में जमे हुए हैं। उनकी वह स्नेहमयि मूर्ति जब आखों के सामने आती है तो हृदय श्रद्धा से झुक जाता है। वे ही श्रद्धा के फूल उनके चरणों में चढ़ाकर अपने को ऋण-मुक्त होने का स्वल्प-सा प्रयत्न किया है।

पूना.
ता० २८-८-६० } { पर्यूषण-पर्व

जीवन की सौरभ

(ले०—पं० मुनि श्री भानुऋषिजी म० 'सिद्धान्त आचार्य' धूलिया)

स जातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम्।
परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते॥ १॥

महा-पुरुषों के जीवन चरित्रों के अध्ययन से मनुष्य का जीवन उन्नत एवं प्रशस्त बन जाता है। इन महा-पुरुषों को हम मुख्यतः दो श्रेणियों में विभक्त कर सकते हैं—(१) प्रवृत्ति मार्ग पर चलने वाले (२) निवृत्ति मार्ग पर चलने वाले, संसार से विरक्त रहने वाले साधु सन्त महात्मा आदि।

राजनैतिक महापुरुषों के जीवन चरित्रों के अध्ययन से मनुष्य केवल ससार में प्रवृत्ति की ओर ही अग्रसर होता है। उनके कार्यों का अनुसरण कर अपने ऐहिक कल्याण मे तो समर्थ हो सकता है, पर पारलौकिक कल्याण नहीं कर सकता। इसके विपरीत सासारिक पदार्थों को तृणवत् तुच्छ समझने वाले सब प्रकार की एषणाओं से हीन विरक्त महात्माओं के जीवन चरित्र का अध्ययन कर मनुष्य लौकिक और पारलौकिक दोनों प्रकार का हित साधन कर सकता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि मानव जीवन-निर्माण के लिये महापुरुषों के जीवन चरित्र से बढ़कर और कोई वस्तु नहीं हो सकती।

आपका (अर्थात् श्री प्यारचन्दजी महा० सा० का) जन्म रतलाम शहर में हुआ था, इस शहर को "रत्नपुरी" भी कहते हैं। ऐसी रत्नपुरी से एक महान् रत्न को माता मैना बाई ने जन्म दिया। पिता का नाम पूनमचन्दजी था। ये ओसवाल वशीय थे।

बाल्यावस्था में आप श्री जी ने रत्नत्रय को ग्रहण किया और जैन दिवाकर जगत वल्लभ श्री चौथमलजी म० सा० के सुशिष्य पट्ट शिष्य बने। दिवाकरजी म० सा० के आप एक भुज स्वरूप थे। आपका जीवन सरसता, सरलता, निरभिमानता आदि गुणों से सम्पन्न था। ये गुण आपके जीवन में प्रचूर मात्रा मे विद्यमान थे। साधु साध्वी—श्रावक श्राविकाओं को कैसी सलाह देना और उन्हें सन्मार्ग पर स्थिर कैसे करना, इसमें आप सिद्धहस्त थे। इसी कारण से आप सादड़ी सम्मेलन मे वर्धमान श्रमण संघ के सह मन्त्री पद से विभूपित किये गये थे। वर्तमान

में आप उपाध्याय पद से सुशोभित थे। आप श्री जी जैन दिवाकरजी म० सा० के नेतृत्व में गणि और उपाध्याय पद से अलंकृत किये गये थे। सब सतियों के लिये पाप-माता के समान थे। चतुर्विध संघ का आपके गुणों के प्रति अत्यन्त अनुराग था। आप श्री जी के हर्षित प्रस्फुटित सहित मुख-मण्डल को देखकर जन जन के मानस विकसित हो जाते थे।

आप श्री जी ने अपने जीवन काल में अनेक ग्रन्थ लिखे और प्रकाशित कर सद्ज्ञान का प्रसार किया। आपका जीवन बहुत साहित्यमय था। निरन्तर चिन्तन मनन में निमग्न रहते थे। आप श्री जी के सत्प्रयत्न से जैन दिवाकरजी म० सा० के व्याख्यानों का संपादन कर सुप्रसिद्ध लेखक पंडित शोभाचन्द्र जी भारिल्ल द्वारा संपादित किये जाकर अठारह भागों की रचना की जा सकी है। यह सब आपके सुप्रयत्न का फल है।

मालव मालवा मारवाड़ दक्षिण पंजाब यू० पी० आदि प्रान्तों में भ्रमण कर इन भागों पर लगे हुए जैन समुदाय को सन्मार्ग में लगाया और जिन शासन की प्रभावना बढ़ाई।

:: पवित्र-स्मृति ::

—————— :o: ——————
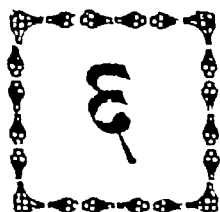
(ले० श्री मनोहर मुनिजी म० शास्त्री साहित्य रत्न)

विजन वन की डाल पर फूल खिलता है। उषा की मुस्कान में वह मुस्कराता है। दिन के मध्यान्ह में वह भी तपता है। संध्या को पनी सौरभ लुटाकर विश्व रंग मंच से विदा ले लेता है। फूल ी अमर नहीं है किन्तु उसकी सौरभ मनुष्य के मस्तिष्क में मर रहती है।

यही कहानी जीवन पुष्प की है। वह भी किसी ममतामय मां की सूनी गोद में जन्म लेता है। एक दिन उसका ललाट उदयाचल सा चमकता है किन्तु संध्या को वह भी ढलता है। वह ढले किन्तु उसकी जीवन सौरभ मानव-मन मस्तिष्क में अमिट रहे, तभी उसकी सार्थकता है।

श्रद्धेय उपाध्याय श्री प्यारचन्दजी म० भी समाज वाटिका के एक ऐसे ही सुरभित पुष्प थे। वे स्वयं महके और अपने आस पास के वातावरण को भी सुवासित किया। त्याग सेवा और सहिष्णुता में उनके जीवन की सौरभ देखी जाती है।

यद्यपि श्रद्धेय उपाध्याय श्री के साथ अधिक समय बिताने का मुझे सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ फिर भी अल्पकालीन सहवास जनित उनके स्नेह भरे हृदय की छाया आज भी मेरे मन में अंकित है। भीनासर सम्मेलन से लौटते समय अजमेर और मदनगंज में उनके साथ समय बिताने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। वहां आपने इतना प्रेम बरसाया कि उस प्रवाह में द्वैत मिट चला। आस पास के क्षेत्रों के लोग विनति के लिये आये तो महाराज श्री ने फरमाया कि "पं० नगिन मुनिजी म० और प्रिय वत्स विनय मुनिजी म० आना स्वीकार करें तो मैं आऊँगा।" हमें लम्बी दूर जाना था फिर भी आपका स्नेह हमें छोड़ नहीं सका। साथ ही हम हरमाड़ा गये। जब जब हमने विहार के लिये आदेश मांगा तब तब यही उत्तर दिया कि 'अभी तो बहुत दिन हैं कुछ और रुको।' आखिर चातुर्मास के निकट आते हुए दिनों ने हमें चलने को विवश कर दिया। विहार का वह दृश्य आज भी मेरी पलकों में घूम रहा है। करीब दो मील की दूरी तक वे

हमें पहुँचाने आये, अन्तमें प्रेम मय वाणी से बोले कि "अच्छा तो तुम हमें छोड़ जाओगे ?" यह वाक्य आज भी कानों में गूज रहा है। मागलिक सुनाते हुए तो उनका गला रुध गया। उस दिन ऐसा लग रहा था मानों गुरु से ही शिष्य विछुड़ रहे हों।

जयपुर पहुँचे तो सुना कि उपाध्यायजी महा० सा० उसी दिन वहां से विहार कर गये। हमें विदा देकर उपाध्यायजी म० गाव में लौटे तो श्रावकों से कहा कि "मेरे साधु चले गये इसलिये अब मेरा मन नहीं लगता।" वह प्रेम की मधुर छवि आज भी मेरी स्मृति मे सजीव है "प्यार" सचमुच प्यार की जीती जागती मूर्ति था।

आप श्रद्धेय जैन दिवाकरजी म० के शिष्य रत्न थे। दिवाकर की किरणों का पूरा तेज आपने पचाया था। साहित्य में आपका सर्वाधिक प्रेम था। श्रद्धेय दिवाकरजी म० की दिवाकर दिव्य ज्योति नामक व्याख्यान-सीरीज आपके ही प्रयत्नों का सुफल है। दूसरी ओर आपकी सूझ-बूझ नये-नये विषयों को खोजती रहती थी। दिवाकर वर्ण-माला ऐसी ही नई सूझ-बूझ है। जिसमें जैन जगत के विद्यार्थी बाल बोध के साथ अतीत के महापुरुषों का परिचय पाते हैं।

समाज के इतिहास को नया मोड देने की क्षमता आपमें थी। यही कारण था कि सम्मेलन की भूमिका मे आपकी उपस्थिति को महत्वपूर्ण समझा जाता था। सम्मेलन के संयोजन और उसकी सफलता मे आपका प्रभावशाली व्यक्तित्व सदैव सक्रिय रहता था। इसीलिये गुरुदेव प्रसिद्ध वक्ता श्री सौभाग्य

महासी म० हमेशा आपको अपना अभिन्न मानते रहे। सामाजिक समस्याओं को सुलझाने के लिये आपसे अनेक बार विचार विमर्श किया करते थे। जब कभी गत्यवरोध उपस्थित होता तब आपका सामयिक परामर्श अत्यधिक महत्वपूर्ण रहता। वह विचार मंथन समाज को नई गति प्रगति देता था।

पर आज 'प्यार' का चमकता नक्षत्र आँखों से ओझल हो गया जब कि समाज की उलझी गुत्थी को सुलझाने के लिये बहुत बड़ी आवश्यकता थी। मार्ग में सुना तो सहसा कानों पर विश्वास ही नहीं हुआ पर वह एक ऐसी चीज थी जिसे न मानकर कोई भी बस नहीं सकता। किन्तु उपाध्याय श्री जी का मोहक व्यक्तित्व स्मृति-मंजूषा का एक चमकता रत्न बनकर हमेशा कायम रहेगा।

बम्बई से विहार कर लुणावला पधारे; यहा पर दयाकुवर-
। महा० सा० से मिलना हुआ। वहा से विहार करने पर एव
वचवड पहुँचने पर समाज की गतिविधि का सूक्ष्माति सूक्ष्म
ीति से विचार विमर्श करने वाले एवं सामाजिक समस्याओं के
वेख्यात व्याख्याता पंडित राज श्री सिरेमलजी महा० सा० से
मिलना हुआ, सामाजिक त्रिकालवर्ती समस्याओं पर अच्छा विचार
विनिमय हुआ। यहा से पूना होते हुए घोड़नदी पधारे जहा पर
कि सुव्याख्याता महासतिजी श्री सुमति कुवरजी महा० सा० से
मिलना हुआ। वहा से अहमदनगर पधारे, यहा से विहार कर
वैजापुर पधारे, जहां कि औरंगाबाद श्री संघ का डेप्युटेशन
चातुर्मास की विनति हेतु आया था। तदनुसार चार मुनियों का
चातुर्मास औरंगाबाद मे हुआ।

अहमदनगर से मनमाड पधारे, जहा पर कि अक्षय-
तृतीया के शुभ दिवस मे जैन धार्मिक पाठशाला की स्थापना हुई।
मनमाड से मालेगाव होते हुए धूलिया शहर पधारे, जहा कि
स्थविर मुनि श्री माणकऋषिजी महा० सा० से तथा मुनि श्री
मोतीलालजी महा० सा० तथा श्री धनचन्दजी महा० सा० से मिल
कर प्रसन्नता का अनुभव हुआ। धूलिया से विहार कर गुरुदेव
ग्रामानुग्राम विचरते हुए और अनेक भव्य प्राणियों को प्रतिबोध
देते हुए संवत् २००६ का चातुर्मास करने के लिये स्वर्गीय गुरु
राज श्री १००८ श्री चौथमलजी महाराज सा० की सेवा में रतलाम
पधारे।

रतलाम चातुर्मास की समाप्ति पर आप अपने गुरुदेव के
साथ ही नागदा जंकशन पधारे, जहा पर कि स्थविर श्री किशन-

बनी रहेगी। इसी वास्तविक चिंतन के कारण से आप सदैव श्रमण-संघ के संगठन में क्रिया शील रहते थे।

सम्वत् २००४ का चातुर्मास रणबंका-राठौड़ों की भूमि जोधपुर में था। वहीं से आपने श्रमण संघ के संगठन हेतु विशाल प्रयत्न प्रारम्भ किये; और एक ही वर्ष में १५०० माइल का उग्रविहार करके एक तेजस्वी सन्त के रूप में समाज के रंग मंच पर अपना भव्य कर्त्तव्य निभाया।

जोधपुर से विहार करके पाली पधारे, वहां से शिवगंज होते हुए पालनपुर पधारे। वहां पर दरियापुरी संप्रदाय की महासतियोंजी से मिलना हुआ। वहां से विहार करते हुए अहमदाबाद पहुँचे। वहां कि पं मुनि श्री प्रतापमलजी महा सा० से तथा दरियापुरी संप्रदाय के आचार्य श्री ईश्वरलालजी महा सा० से मिलना हुआ और श्रमण संघ के संगठन के सम्बन्ध में बात चित हुई। वहां से बड़ोदा; और बड़ोदा से विहार करते हुए बम्बई पधारे। वहां पर कि स्वर्गीय महात्मा पंडित रत्न मुनि श्री ताराचन्दजी महाराज सा० और इनके सुशिष्य श्री १००८ श्री पुष्कर मुनिजी महा० सा० से तथा तत्त्व चिंतक मुनि श्री मोहन ऋषिजी महा सा से एवं प्रसिद्ध व्याख्याता श्री विनयऋषिजी महा० सा आदि सन्त वर्ग से मिलना हुआ और श्रमण संघ संगठन पर बातचित हुई। इनके अतिरिक्त लिंबड़ी सम्प्रदाय के स्वर्गीय पंडित रत्न शतावधानी श्री १० ८ श्री रत्नचन्दजी महा० सा के सुशिष्य शतावधानी श्री पूनमचन्दजी महा० सा० से भी मिलना हुआ। समाज की स्थिति पर विचार-विमर्श हुआ एवं साधु-संगठन की आवश्यकता अनुभव की गई।

गुरुदेव श्री प्यारचन्दजी महा०

—— :०: ——

(ले०—व्याख्यानी श्री गणेशमुनिजी महा०

इस अनित्य अनादि और अनन्त ससार में आज दिन तक अनन्तानन्त प्राणी उत्पन्न हुए हैं और काल-कवलित हो गये हैं तथा आगामी अनन्त भविष्य में भी यही क्रम रहेगा। इस प्रकार ऐसा जन्म-मरण कोई अर्थ नहीं रखता है, जब तक कि जन्म ग्रहण करके ज्ञान-दर्शन-चारित्र का विकास नहीं हो। पशु-जीवन में और मानव-जीवन में सभी प्रवृत्तिया समान हैं, परन्तु एक धर्म वृत्ति ही मनुष्य-जीवन मे पशु जीवन की अपेक्षा अधिक है, जिसके

मन पर मानव अपनी पशु-वृत्तियों से ऊपर उठकर देवत्व-वृत्ति का अधिकारी होता है।

इस सिद्धान्त के नाते हमारे स्वर्गीय गुरुदेव का जीवन ज्ञान-दर्शन और चरित्र के धारण से आदर्श सफल और कृत-कृत्य है। आप गुणों के भण्डार थे और क्रिया के आगार थे। उदारता क्षमा विनय, सरलता आदि आपके मौलिक गुण थे।

सम्वत् १६६१ में जब आप सत्तरह वर्ष के थे तभी एक दिन रतलाम में आपको जगत् वल्लभ जैन-दिवाकर प्रसिद्ध वक्ता पंडित रत्न स्वर्गीय गुरुराज श्री १००८ श्री चौथमलजी महा० सा० के दर्शन करने का और व्याख्यान सुनने का परम सौभाग्य मय अवसर प्राप्त हुआ। जैसे चौथे आरे में अल्पकर्मी आत्मा को सर्व प्रथम अवसर पर ही साधु-महात्मा के दर्शन करने मात्र से एवं एक ही व्याख्यान श्रवण करने मात्र से ही वैराग्य प्राप्त हो जाया करता था। वैसे ही हमारे चरित्र नायकजी को भी अपने गुरुराज के दर्शन करने मात्र से एवं एक ही व्याख्यान श्रवण करने मात्र से वैराग्य हो आया।

किसी भी प्रकार से अपनी दादी माँ साहब से तथा अन्य कौटुम्बिक बन्धुओं से दीक्षा-ग्रहण करने की आज्ञा प्राप्त करके संवत् १६६६ फाल्गुण शुक्ला पंचमी को गुरुराज श्री १००८ श्री चौथमलजी महा० सा० के पास चित्तौड़गढ़ में दीक्षा अंगीकार करली और आपके अनन्य सेवा-भावी शिष्य के रूप में अपना जीवन विकास करने लगे।

जिस दिन से दीक्षा अंगीकार की, उसी दिन से गुरुदेव

की शिष्य रूप से, मन्त्री रूप से, सलाहकार रूप से तथा अनन्य सेवक रूप से सेवा मे संलग्न हो गये।

सम्प्रदाय की व्यवस्था सभालने में, गुरुदेव रचित साहित्य के प्रसारण करने मे जैन-धर्म की हर प्रकार से प्रभावना करने मे और समाज मे रत्न-त्रय के विकास करने मे; इत्यादि ऐसी ही प्रवृत्तियों मे हमारे चरित्र नायकजी का सारा समय और सभी शक्तिया संलग्न हो गई थीं।

दीक्षा के पश्चात् अपने गुरुदेव के साथ साथ भारत के दूर दूर तक के प्रदेशों में विहार-करने के लिये सदैव आप उत्साहित रहते थे। इस प्रकार आपने विहार करके सपूर्ण राज-स्थान, दिल्ली-प्रदेश, मध्य प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, खानदेश, बरार और कर्णाटक प्रान्त को अपने चरण रज से पवित्र किया था।

आपके सुमधुर गुणों से आकर्षित होकर ही पुज्य श्री १००८ श्री मन्नालालजी महाराज सा० की सप्रदाय मे आप गणी और उपाध्याय पद पर आसीन किये गये थे। ब्यावर में पाच सप्रदायों का एकीकरण भी आपकी योजना का ही सुपरिणाम था। समाज की नाड़ी के आप गहरे पारखी थे, इस प्रकार ब्यावर का एकीकरण ही सादड़ी मे सम्पन्न श्रमण-सघ का अंकुर था। सादडी मे आप सहमन्त्री और मध्य भारत मन्त्री बनाये गये थे और भीनाशहर में श्रमण सघ के उपाध्याय पद से सुशोभित किये गये थे। आपने अपनी पदवियों के अनुरूप ही उत्तरदायित्व का सचालन भी उत्तम एव आदर्श ढङ्ग से ही किया था। आप

यहाँ कहीं भी पधारते थे, प्रत्येक स्थान पर धार्मिक-शिक्षण के लिये बल दिया करते थे। एवं आप स्वयं भी धार्मिक शिक्षण प्रदान किया करते थे। आपके उपदेशों से ही रतलाम तथा नागोर आदि स्थानों में जैन बोडिंग आदि धार्मिक-संस्थाओं की स्थापना हुई है। हमारे चरित्र-नायकजी ने अनेक ग्रन्थों का निर्माण, संपादन और अनुवाद किया था। कई एक काव्य-ग्रन्थों की सरल सुबोध टीका लिखी थी। आपकी प्रचार-शैली सभी जाति वालों के लिये और सभी धर्म की जनता के लिये थी। आप सत्य एवं अहिंसा के प्रखर प्रचारक सफल विवेचक और सुयोग्य प्रति पादक थे। आपकी प्रिय और मधुर वाणी से जनता सदैव आकर्षित होती थी, तथा वैराग्य-रस प्रधान व्याख्यानों को सुन-करके विविध प्रकार के त्याग प्रत्याख्यान ग्रहण किया करती थी।

ता० ६ १-६० के दिन गजेन्द्रगढ़ में आपके छाती में दर्द उत्पन्न हुआ। डाक्टर आया और आराम करने की संमति प्रदान की परन्तु कालका प्रबल योग सामने उपस्थित था वेदना बढ़ती ही गई पहले सागारी संथारा किया और तत्पश्चात् अधिक वेदना अनुभव होने पर यावज्जीवन का संथारा ग्रहण कर लिया। ता० ८-१-६० शुक्रवार को प्रातःकाल में नव बजकर पैंतालीस मिनिट पर आदर्श भावना भावते हुए इह-लौकिक जीवन को सफल करते हुए गुरुदेव स्वर्ग-वासी हो गये। सथारा पूर्वक स्वर्गवास के समाचार सुनते ही आस पास के तथा दूर स्थानों के हजारों की संख्या में जन प्रवाह अन्तिम दर्शन करने के लिये उमड़ पड़ा। उस समय के दृश्य का वर्णन नहीं किया जा सकता है। वह एक अभूत पूर्व दृश्य था।

लिखते हुए हृदय विदीर्ण सा होता है कि नाथ समान, रक्षक ममान पूज्य गुरुदेव आज इस ससार में नहीं हैं। मनुष्य कराल-काल के आगे विवश है। हृदय विदारक सयोगों मे धैर्यता एव गुण स्मरण ही एक सबल है, इस सिद्धान्त के नाते पूज्य गुरुदेव के गुणों को स्मरण करना और उन्हें अपने जीवन में स्थान देना तथा रत्न त्रय का विकास करना - यही आज हमारे सामने एक मात्र कर्त्तव्य शेष रह गया है।

मगलमय शासन देव से यही कर बद्ध प्रार्थना है कि-हमारा जीवन निरन्तर गुरुदेव द्वारा इङ्गित मार्ग की ओर ही बढ़ता चला जाय। तथास्तु।

६

विरल विभूति उपाध्यायजी म० .

(ले० राजेन्द्र मुनि सि० शास्त्री, संस्कृत कोविद नासिक सीटी)

विश्व के इस विराट पुष्पोद्यान के प्रांगण में नित्यप्रति अनेक की संख्या में विशेष पुष्प विकसित होते हैं और मुरझा जाते हैं। उनसे प्रकृति की सुन्दरता और मोहकता में कोई परिवर्तन नहीं होता। बहुतों के संबंध में तो संसार यह भी नहीं जानता कि वे कब विकसित हुए और कब मुरझा गये। न जानता कि, आंखों ने

उनका विकसित होना जाना और न मुरझाना। वे केवल कहने मात्र के पुष्प थे। उनके अन्दर जन-मन-नयन के आकर्षणार्थ अपनी कोई गध नहीं थी खुशबू नहीं थी।

पर गुलाब का पुष्प जब डाल पर विकसित होता है तो क्या होता है ? वह आख खोलते ही अपने दिव्य सौरभ दान से प्रकृति की गोद को सुगन्ध और सुवास से भर देता है। हजार-हजार हाथों से सुगन्ध लुटाकर भूमण्डल के कण-कण को महका देता है।

इसी प्रकार इस धरा धाम पर न मालूम कितने मानव जन्म लेते हैं और मरते हैं। ससार न उनका पैदा होना जानता है और न मरना। वे स्वार्थवासना के पतगे और भोग विलास के कीड़े ससार की अन्धेरी गलियों मे कुछ दिन रेंगते हैं और आखिर मे काल-लीला के ग्रास हो जाते हैं। उनके जीवन का अपना कोई ध्येय नहीं होता, कोई लक्ष्य नहीं होता। उनका जीवन इस साढे तीन हाथ के पिण्ड या अधिक से अधिक एक छोटे-से परिवार की सीमा तक ही सीमित रह जाता है। इसके आगे वे न सोच सकते हैं और न समझ ही सकते हैं।

परन्तु कुछ महा मानव धरणीतल पर गुलाब के फूल बनकर अवतीर्ण होते हैं। उन द्वारा आखें खोलते ही घर परिवार का बगीचा खिल उठता है। समाज का सूना आगन मुस्कराहट से भर जाता है और राष्ट्र प्रसन्नता तथा आशाओं की हिलोरें लेने लगता है। वे स्वय जागरण की एक गहरी अँगड़ाई लेकर सोई हुई मानवता के भाग्य जगाते हैं। उनको पाकर मानव जगत एक नई चेतना और एक नई स्फूर्ति का अनुभव करता है।

उपाध्याय श्री प्यारचन्दजी म० एसी ही एक चमकती हुई महान् विभूति थे। जो अपनी बाल्यावस्था में धन-वैभव को ठोकर मारकर त्याग वैराग्य तथा संयम के पुनीत पथ पर चले। उनका साधनामय जीवन का हर पहलू इतना स्वच्छ निर्मल और पावन पथ था कि आज भी वह हमें अपनी ओर आकर्षित कर रहा है।

उनका जन्म मानकुंवरी बाई की पवित्र कुक्षी से विक्रम संवत् १९५२ में रतलाम" में सेठ पूनमचन्दजी चोपड़ा (ओसवाल) के घर हुआ। जब उन्होंने आंख खोली तो धन-वैभव उनके चारों ओर बिखरा पड़ा था। कीर्ति और यश उनके आंगन में झूम-झूम खेलते थे। सुख तथा समृद्धि उन्हें पालना झूलाते थे। एक भरे पूरे और सम्पन्न वातावरण में उनका लालन पालन हुआ था। वे शैशवावस्था से ही सौम्य और शान्त स्वभाव के धनी थे।

उपाध्याय श्री को उपदेश सुनकर वैराग्य उत्पन्न हुआ। इसके पश्चात् अपने कुटुम्ब परिवार के समक्ष जाकर दीक्षा ग्रहण करने की आज्ञा मांगी। यह बात सुनकर उनके परिवार वालों ने काफी समझाया किन्तु इन्होंने जो दीक्षा अंगीकार करने के लिये दृढ़ संकल्प कर लिया था उस पर आप कायम रहे। फलस्वरूप परिवार वालों का विवश होकर दीक्षा के लिये स्वीकृति प्रदान करना ही पड़ी। अस्तु।

संयम अंगीकार करने के लिये अनुमति प्राप्त होते ही श्री प्यारचन्दजी ने जैन दिवाकर श्री चौथमलजी म० के चरण

कमलों में चित्तौडगढ़ में बड़ी धाम-धूम के साथ जैनेन्द्रीय दीक्षा धारण की।

वैराग्य मूर्ति श्री प्यारचन्दजी ने मुनि-दीक्षा लेने मात्र से अपने आपको कृतकृत्य नहीं समझा, "पढम नाणंतओ दया" प्रथम ज्ञान और बाद में आचार है। गुरुदेव की इस अन्तर्वाणी ने शिष्य के हृदय में विद्युत काम किया। विनय भाव से गुरु चरणों में बैठकर ज्ञान-साधना का श्री गणेश किया। जैनागमों और अन्य ग्रन्थों का गम्भीर अध्ययन तथा चिन्तन मनन किया। साथ २ में सस्कृत, प्राकृत और हिन्दी आदि का भी आपने अध्ययन किया। नम्रता, विनय भाव और महान् पुरुषार्थ के कारण उनका ज्ञान दिन दूना और रात चौगुना चमकता चला गया। इने-गिने वर्षों में ही ने एक अच्छे पण्डित, चोटी के आगमज्ञ और विद्वान् बन गये। आपने अपने जीवन में साहित्य सेवा, मुनि सेवा, गुरु सेवा आदि २ अनेक धार्मिक सेवाए की हैं। आपने जो अमूल्य सेवाऐं की, हम उन्हें भूल नहीं सकते हैं।

इस प्रकार सयम पालन करते हुए और ज्ञान दर्शन चारित्र की आराधना करते हुए बैंगलोर श्री सघ की त्रिनम्र विनति को ध्यान में रखते हुए आपका विहार रायचूर से बैंगलोर की ओर हुआ। परन्तु उधर रास्ते मे गजेन्द्रगढ़ पहुचने पर आपका शारीरिक स्वास्थ्य कुछ ठीक नहीं रहा। समाज इस ढलते हुए-अस्ताचल की ओर खिसकते हुए सूर्य के प्रति मंगल कामना करता रहा कि यह महान् सूर्य अभी कुछ दिनों तक और जगमगाता रहे। पर विधि को यह मजूर न था।

ता० ८-१-६० को पार्थिव शरीर का आवरण छोड़कर जैन जगत् की यह जाज्वल्यमान् ज्योति समाज की आंखों से ओझल हो गई।

भौतिक शरीर से न सही पर यशः शरीर से उपाध्याय श्री जी जन मन में आज भी जीवित हैं। जीवन की सही दिशा की ओर मूक संकेत कर रहे हैं। हमारा कर्त्तव्य है कि भक्ति भाव से उस महान् ज्योति के दिव्य गुणों को कोटि-कोटि नमन करें, और उनके बताये हुए मार्ग पर चलकर जगमग जीवन ज्योति जगायें।

:: उपाध्याय श्री प्यारचन्दजी महाराज ::

:o:

(ले०—श्री हीरा मुनिजी म० सा० जोधपुर)

प्यार पाना चाहता था हर मनुज,
क्योंकि उनके हृदय मे भी प्यार था ॥

गजेन्द्रगढ़ से तार द्वारा ज्योंही ये समाचार प्राप्त हुए कि उपाध्याय श्री प्यारचन्दजी महाराज का स्वर्गवास हो गया, त्योंही दिल दहल गया। जैन समाज पर वज्रापात हो गया, क्योंकि सन्त राष्ट्र की महान् विभूति होते हैं उनका दुःखद वियोग किस अभागे को नहीं खटकता है ?

समाज की वर्तमान स्थिति अत्यन्त विचारणीय है। ऐसे समय में श्रमण संघ के वरिष्ठ नेता उपाध्यायजी का स्वर्गवास हो जाना समाज के लिये खेद का विषय है। समाज को ऐसे महापुरुष की छत्र-छाया आवश्यक थी किन्तु असमय में उनके निधन से जो महती क्षति हुई है उसकी पूर्ति होना असम्भव है। आज जैन समाज को पुराने युग पुरुषों की तरह ज्ञान, दर्शन चारित्र में महान् संत तैयार करने हैं। यदि उसने इस ओर उपेक्षा बुद्धि रखी तो भविष्य मंगलयुक्त नहीं है ऐसा कहा जा सकता है।

जाने वाला जाता है और यह चुनौती देता है कि जीवन रूपी पतंग कटते ही लापता हो जायगी। इसलिये जगत जगत की पतंगों से उसे उलझाया न करो। त्याग वैराग्य के सहारे समता के दण्डे पर इसे लपेट लो यह अमर बनी रहेगी।

उपाध्याय श्री प्यारचन्दजी महाराज सदा त्याग वैराग्य की मूर्ति बन कर रहे। मैंने मेरे पूज्य गुरु स्वर्गीय श्री ताराचन्दजी महा० के श्री चरणों में रहते उनके दर्शन किये। बम्बई में सादड़ी सम्मेलन में एवं सोजत सम्मेलन में सेवा का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वह दिन मेरे जीवन का सुनहरा दिन था। उन दिन के चित्र आज इतने वर्ष व्यतीत हो जाने पर भी दिमाग की दिवारों पर अंकित बने हुए हैं। वह ऊँचा कद लम्बा ललाट और सिंह गर्जना सब मानस स्मृतिपट पर आती है। अहो! आश्चर्य! इस कराल काल के गाल में ऐसे अनन्त महापुरुष समा गये।

वे आज हमारे आंखों से ओझल हो गये मगर उनकी कृतियां हमारे जीवन को सुलझाने में समर्थ हैं। दिवाकर दिव्य—

ज्योति उन्हीं के बलबूते पर प्रकट होती थी। कुछ कृतियां मैंने मनन पूर्वक पढ़ी हैं। जनता के लिये जीवनस्पर्शी साहित्य है। यह दिवगत आत्मा का सफल प्रयास था ऐसे समाज के लिये उनकी अगणित देन है। जो मैं अपनी अल्प बुद्धि से नहीं गणना कर सकता हू।

स्वर्गीय उपाध्याय श्री जी का जीवन ज्ञान दर्शन चारित्र से खूब मजा हुआ था। प्रकृति से भद्रस्वभाव वाले तथा सरल होने से जहां भी पहुँचते, वहां जनता पर अभूतपूर्व प्रभाव डालते थे। आप जैन दिवाकर श्री चौथमलजी महाराज सा० के अन्तेवासी संत थे।

एक दिन आप ग्राम नगर के चौराहों पर प्रवचन सुनाते थे, आज वहीं पर आपके नाम की शोक सभाएं की जा रही है। यह है विराट विश्व की रूप रेखा। नाम और गुण अमर हैं, देह है विनाशवान्। सच्चे संत एव गुरु के गुणगान सदा कल्याण-कारी होते हैं। दिवगत आत्मा अमर है। उन्हें सदा अरिहन्त, सिद्ध, साधु एव जिन धर्म का शरण प्राप्त हो। यही मेरी अन्तः करण की भव्य भावना है। गुरु की पूजा सबसे बड़ी पूजा है। कहा भी है कि:—

लज्जा दया सयम वभचेर, कल्लाण भागिस्स विसोहि ठाणं।
जे मे गुरु सयय सासयन्ति, ते ह गुरु सयय पूजयामि॥
(दशवै कालिक सूत्र)

स्वर्गस्थ महात्मा की जय हो-यही मेरी हार्दिक कामना है।

११

.· उनकी प्यार भरी याद में .:

(लेखक—मुनि सत्यार्थी)

मनुष्य का कुछ यह स्वभाव ही है कि वह मकान से बाहर निकलता है तो अपनी वेष-भूषा में परिवर्तन कर लेता है। प्रति दिन पहनने के वस्त्रों में और कुछ नहीं तो स्वच्छता की दृष्टि तो रखता ही है। कुछ व्यक्तियों की इच्छा होती है, जितनी योग्यता है उससे अधिक बढ़ा चढ़ाकर कहने की। जितनी सम्पन्नता है उससे

अधिक प्रदर्शित करने की। किन्तु श्रद्धेय प्यारचन्दजी महाराज में यह बात नहीं थी। वे जो हैं, जितने हैं, उसका उतना ही प्रकाशन करने में विश्वास रखते थे।

आज प्रातः स्नेह मूर्ति पूज्य उपाध्याय मुनि श्री प्यारचन्दजी महा० के स्वर्गवासी हो जाने के कुसमाचार सुने तो दिल को गहरी चोट लगी पर विश्वास नहीं हुआ। स्पष्टीकरण की नियत से आगन्तुक सूचना देने वाले सज्जन से दुबारा पूछा "तुम्हारे पास गलत सूचना तो नहीं है ?" उसने स्पष्ट कहा "नहीं मुनिजी हमारे यहा तार आया है।" दुबारा पूच्छा कर लेने पर भी कानों में वही शब्द पड़े। बुद्धि ने कुछ मान लिया। थोड़ा-थोड़ा मन ने भी साथ दिया परन्तु हृदय बार बार इन्कार करता रहा इस बात को वह ठेलकर बाहर ही निकलना चाह रहा था "नहीं बात गलत है" क्या वे यथा नाम तथा गुण पूज्य प्यारचन्दजी केवल प्यार की स्नेह ही की बोली बोलना जानते थे अब इस ससार में नहीं रहे। असभव ! किसी ने गलत सूचना दी है। वह प्यारचन्दजी जो सम्प्रदायवाद की भेद भरी दिवारों से उपर उठे हुए थे। पानी मे कमल की तरह रहने वाले महा मुनि अब इस ससार में नहीं रहे सर्वथा असभव !! प्यार के देवता को, प्यार की हंस मूर्ति को काल की क्रूरता ने नष्ट करदी। हाय यह अकथ्य कहा से सुन-लिया ? नहीं नहीं ! वह महा सन्त जिसने छोटे बड़े का कभी भेद जाना ही नहीं था। वह अनेक बार मुझसे भी दिल मे पिता का प्यार लेकर मिला था। क्या वह पिता अपने पुत्र को छोड़कर चला गया कैसे माना जाय ? पर बराबर दो बार तीन बार चार बार अनेक बार सुन सुनकर मुझे अन्ततः यह विश्वास करना ही पड़ा कि "वे थे अब नहीं है।"

अस्तु ! वर्तमान से अतीत में गए उन मुनि के चरणों में मैं एक बार मैंने बैठकर जो सुख एक पुत्र को पिता की प्यारी गोद में मिलता है वह पाया । पवित्र चरणों में उस महा मुनि के आन्तरिक व्यक्तित्व को प्रकाशित कर अपनी श्रद्धाञ्जली अर्पित करना चाहता हूँ । उनके सही विचारों का व्यक्तिकरण ही उनके गुणों का स्मरण है ।

मुनि श्री प्यारचन्दजी म० से साक्षात्कार करके जो सुख पाया-जो प्यार पाया जो-मुहब्बत पाई इन्सानियत की जो राह पाई उसकाप्रकटी करण यह शब्द कैसे कर सकते हैं ? उसे तो भावना शील भावुकता का अधिपति ही अनुभव कर सकता है । अस्तु ।

अब कहना ही पड़ रहा है रोते दिल से- 'हँसना हँसना ही जिनकी जिन्दगी का काम था छिपाव और दुराव में जिनका कोई विश्वास नहीं था बाहर भीतर जो सरल था सरस था सजीव अनुभूति से सम्पन्न था ऐसे गुण सम्पन्न उनकी प्यारी याद में मेरे लाखों प्रणाम और मेरा यह भग्न हृदय अब उनके किस शिष्य के प्रति अपनी यह श्रद्धा टिकाए, जो उनके जैसे प्यार की भरी गहराइयों को जिन्दगी में उड़ेला सकेगा !

डुँगरसिंहजी म० और श्रद्धेय सद्गुरुवर्य तथा आप श्री का वहां मधुर-सम्मेलन हुआ। संगठन के लिए एक योजना बनाई गई और उस पर गहराई से विचार विनिमय भी किया गया।

आप श्री के दर्शनों का सौभाग्य अनेक बार प्राप्त हुआ और बहुत समय तक साथ मे रहने का अवसर भी। किन्तु जब भी मिले तब बड़े ही प्रेम से—स्नेह से। आप जैन दिवाकर प्रसिद्ध वक्ता श्री चौथमलजी म० के प्रधान शिष्य थे। उनके साहित्य के निर्माण मे आपका गहरा हाथ रहा है। आपके साहित्य-प्रेम के कारण ही श्रमण सघ ने भीनासर सम्मेलन मे आप श्री को उपाध्याय के महत्वपूर्ण पद से समलकृत किया। श्रमण संघ के प्रति आपकी असीम श्रद्धा थी। सगठन के प्रति तीव्र अनुराग था। और कर्त्तव्य के प्रति अप्रतिहत जागरुकता थी।

उपाध्याय प्यारचन्दजी म० के व्यक्तित्व की उपमा हम एक उपवन से दे सकते हैं। उनका जीवन रग बिरगे विविध प्रकार के गुण रूपी पुष्पों से सुवासित था। उनके जीवन की सौरभ उनके स्वय के जीवन तक ही सीमित नहीं थी। पर जो भी उस महासन्त के सान्निध्य मे आता वह प्यार (प्रेम) की सुगन्ध से आकर्षित हुए बिना न रहता।

श्रमण सघ सक्रान्ति के काल में गुजर रहा है। आचार्य, उपाध्याय व मन्त्री मण्डल के मुनियों से उपाचार्य श्री के मतभेद

प्यार" कितना मधुर शब्द है? कितनी सुरीली और सुहावनी है इसकी ध्वनि! विश्व के प्रायः सभी महामानव इसे केन्द्र बिन्दु मानकर इसके इर्द गिर्द घूमते रहे हैं। जैसे सूर्य और चन्द्र के चारों ओर नक्षत्र परिक्रमा किया करते हैं।

उपाध्याय पं० प्रवर श्री प्यारचन्दजी म० "प्यार" के साक्षात् रूप थे। उनके जीवन के कण कण में "प्यार" अठखेलियाँ कर रहा था। प्यार उनके जीवन का ध्रुव तारा था और उनका सारा जीवन इस महासाध्य की उपासना का एक अविरल स्रोत था। उनके रहन सहन का क्रिया कलाप का सारा ढांचा प्यार को केन्द्र मानकर निर्धारित किया हुआ सा लगता था 'प्यार' के लिए उस महासन्त ने अनेक प्रयत्न किये थे।

सन् १९४८ का वह पुण्य संस्मरण आज भी स्मृत्याकाश में आकाश दीप की तरह चमक रहा है। श्रद्धेय सद्गुरुवर्य महास्थविर श्री ताराचन्दजी म० के साथ हम घाट कोपर (बम्बई) का शानदार चातुर्मास समाप्त कर कांदावाड़ी पहुँचे; तब आप श्री भी जोधपुर से विहार कर वहां पधार गये। वहाँ पर आपका और हमारा घनिष्ठ प्रेम सम्बन्ध रहा। आपके अन्तर्मानस में स्थानकवासी जैन समाज की विविध सम्प्रदायों को देखकर और उनमें प्यार का अभाव देखकर खेद हो रहा था। आपने संगठन के हेतु योजना बनाने की भावना अभिव्यक्त की। उस योजना के सम्बन्ध में विचार विनिमय करने के लिए घाटकोपर में एक आयोजन किया गया जिसमें ऋषि सम्प्रदायस्थ महान् विचारक श्री मोहन ऋषिजी म० और विनय ऋषिजी म० तथा खीम्भाजी सम्प्रदायस्थ शतावधानी श्री पूनमचन्दजी म० व तपस्वी श्री

डुँगरसिंहजी म० और श्रद्धेय सद्गुरुवर्य तथा आप श्री का वहां मधुर-सम्मेलन हुआ। संगठन के लिए एक योजना बताई गई और उस पर गहराई से विचार विनिमय भी किया गया।

आप श्री के दर्शनों का सौभाग्य अनेक बार प्राप्त हुआ और बहुत समय तक साथ में रहने का अवसर भी। किन्तु जब भी मिले तब बडे ही प्रेम से—स्नेह से। आप जैन दिवाकर प्रसिद्ध वक्ता श्री चौथमलजी म० के प्रधान शिष्य थे। उनके साहित्य के निर्माण में आपका गहरा हाथ रहा है। आपके साहित्य-प्रेम के कारण ही श्रमण संघ ने भीनासर सम्मेलन में आप श्री को उपाध्याय के महत्त्वपूर्ण पद से समलकृत किया। श्रमण संघ के प्रति आपकी असीम श्रद्धा थी। सगठन के प्रति तीव्र अनुराग था। और कर्त्तव्य के प्रति अप्रतिहत जागरुकता थी।

उपाध्याय प्यारचन्दजी म० के व्यक्तित्व की उपमा हम एक उपवन से दे सकते हैं। उनका जीवन रग बिरंगे विविध प्रकार के गुण रूपी पुष्पों से सुवासित था। उनके जीवन की सौरभ उनके स्वय के जीवन तक ही सीमित नहीं थी। पर जो भी उस महासन्त के सान्निध्य में आता वह प्यार (प्रेम) की सुगन्ध से आकर्षित हुए बिना न रहता।

श्रमण सघ सक्रांति के काल में गुजर रहा है। आचार्य, उपाध्याय व मन्त्री मण्डल के मुनियों से उपाचार्य श्री के मतभेद

ने जो विषम स्थिति उत्पन्न की है वह अत्यन्त विचारणीय है, संघर्ष की चिनगारियां चमक रही हैं। ऐसी स्थिति में उपाध्याय श्री प्यारचन्दजी म० के स्वर्गवास से जो महती क्षति हुई है वह बड़ी ही खेद जनक है। मानों श्रमण संघ में से प्यार की न्यूनता देखकर ही "प्यार" हमसे रूठ कर चला गया है। "प्यार" गया किन्तु "प्यार" हमारे जीवन का लक्ष्य बना रहे, यही उस दिवंगत सन्त के चरणों में श्रद्धाञ्जलि है।

:: संस्मरण ::

—————— :o: ——————

(लेखकः—पं० रत्न श्री लक्ष्मीचन्द्जी महा० सा०)

स्वर्गीय जैन दिवाकर मुनि श्री चौथमलजी म० सा० के अनेक शिष्यों मे मुनि श्री प्यारचदजी म० सा० प्रमुख शिष्य थे। आप एक विद्वान् तथा साहित्यकार सत थे। आपकी छोटी बड़ी अनेक रचनाऐं पाठकों के सामने प्रस्तुत है। उनमे अन्तकृत्-दशांग सूत्र और कल्पसूत्र आपके द्वारा सम्पादित हैं।

आपकी इन रचनाओं से पाठकों को शास्त्र स्वाध्याय करने का अवसर मिला है। आपकी समाज में महती प्रतिष्ठा थी। आपका संयम काल भी पर्याप्त लम्बा रहा है। आपने गुरुवर्य की उपस्थिति काल में उनके निकट रही रह कर स्वाध्याय, चिन्तन, मनन और लेखन आदि शुभ प्रवृत्तियों में प्रगति की थी। आज आप हमारे समक्ष भौतिक शरीर से विद्यमान नहीं हैं, किन्तु साहित्य-रचना की दृष्टि से चिर-काल तक जनता के स्मृति पटल पर अंकित रहेंगे। आप श्रमण-संघ के सह मंत्री भी रहे, तथा बाद में आप उपाध्याय पद पर पहुँच गये। यद्यपि मुझे स्वर्गीय मुनि श्री प्यारचन्दजी म० सा० का सम्पर्क बहुत अल्प मिला।

सादड़ी सम्मेलन में जाने से पूर्व अजमेर में उपाध्याय श्री हस्तीमलजी म० सा० की सेवा में रहते हुए आपसे मिलने का सर्व प्रथम अवसर था। उसके पश्चात् भीनासर सम्मेलन में जाते हुए मोखा मंडी देशनोक, बीकानेर और भीनासर में यदा कदा मिलने का अवसर मिलता रहा। उस समय आपसे विशेष वार्तालाप करने का मौका मिला। तब ऐसा प्रतीत होता था कि आप साधु-समाज में बढ़ती हुई स्व-छन्दता तथा शिथिलाचार से खिन्न थे। उसका आप प्रतिकार करना भी चाहते थे।

आज उनके संस्मरण लिखते समय उनकी आन्तरिक भावना का समादर करना चाहिये। संत जीवन की शोभा एवं प्रतिष्ठा चारित्र तथा ज्ञान' में ही है। आचार शून्य-जीवन प्रभा-रहित शरीर के समान निस्तेज है। जैसा कि कहा भी गया है कि —

आचारः प्राणिनां पूज्यो; न रूपं न च यौवनम्।
वैश्या रूपवती निन्द्या, वन्द्या मासोपवासिनी ॥

अर्थः—मानव-जीवन में पूजा एव प्रतिष्ठा का कारण रूप तथा यौवन नहीं है। वैश्या स्त्री रूपवती होने पर भी निन्दनीय समझी जाती है, किन्तु एक तपस्विनी बाई रूप लावण्य न होने पर भी अभि-वन्दनीय समझी जाती है।

यह उसके सदा चरण का ही प्रभाव है।

ता० २४–८-६० } { टोंक (राजस्थान)

•' सफल-साधक श्री प्यारचन्दजी महाराज '•

(लेखकः—श्री मनोहर मुनिजी महा० सा० "सुधाकर")

इस भर्तान तलपर एक न एक ऐसे पुरुष होते हैं, जो कि अपने किये अपने कार्यों से महान् शब्द जुड़वालेते हैं। महान् कार्यों से उन महान् की प्रतिष्ठा ही प्रसरती है। यदि वे अपने जीवन से महान् कार्यों को अलग करदें तो वे भी सामान्य पुरुषों की समता में आजाते हैं। सामान्य और पुरुषों में अन्तर्भेद करने

वाले होते हैं-सामान्य विशेष कार्य ही। अन्यथा सभी पुरुष हैं, जोकि न सामान्य हैं और न विशेष ही।

उपाध्याय श्री प्यारचन्दजी महाराज जैन दिवाकर प्रसिद्ध वक्ता प० श्री चौथमलजी म० सा० के शिष्यों में से मुख्य शिष्य थे। यह है उनका सामान्य परिचय।

श्री जैन दिवाकर जी महा० की उपस्थिति मे वे न थे वक्ता और न थे प्रसिद्धि प्राप्त महान् पुरुष। वे थे श्री जैन दिवाकरजी महा० के अनन्य उपासक और वे थे उस समय मे अपनी सम्प्रदाय के सुदक्ष कार्य-कर्त्ता चाणक्य। श्री जैन दिवाकरजी महा० के समय मे मैंने प्राय. देखा था कि यदि प्रारम्भ में व्याख्यान प्रारम्भ करना होता तो भी वे दूसरों को आगे कर देते थे। बस उनका एक काम था। वह था निरन्तर कुछ न कुछ लिखते रहना। श्री जैन दिवाकरजी महा० की रचना जनता के पास कितनी जल्दी पहुँचे—यही था एक मात्र लक्ष्य। श्री जैन दिवाकरजी महा० का जितना भी साहित्य आज पाठकों के सम्मुख उपलब्ध है, वह सब उपाध्यायजी महा० की देन है।

जिस प्रकार भगवान् महावीर की वाणी श्री सुधर्माचार्य द्वारा हमे प्राप्त हुई, उसी प्रकार से श्री जैन दिवाकरजी महा० सा० का साहित्य—"गद्य-पद्य" जो भी है, वह श्री उपाध्यायजी महा० द्वारा ही पाठकों को अभी तक प्राप्त होता रहा। अब तो कुछ समय बाद यह सब स्वप्न समान होने जा रहा है। श्री जैन दिवाकरजी महा० सा० के स्मृति चिह्न स्थान स्थान पर जो है, वे सब स्वर्गीय उपाध्यायजी महा० के पुनीत प्रयास का ही फल है।

पाठकिय, अब हम स्व० उपाध्यायजी महा० की जीवन-गाथा को ठीक तरह से पढ़लें। ये य सुदक्ष कार्यकर्त्ता, वे य गणी, वे य मंत्री और ये थे उपाध्याय। जिस समय स्थानक वासी समाज में सम्प्रदायवाद अर्थात् अपनी-अपनी सम्प्रदाय का सर्वतोमुखी विकास की होड़ चल रही थी उस समय श्री प्यारचन्दजी महा० की सदा यह लगन रहती थी कि श्री जैन दिवाकरजी महा० की सम्प्रदाय की प्रतिमा कैसे बढ़ ? अपनी सम्प्रदाय के प्रभाव का केन्द्र-स्थान था श्री जैन दिवाकरजी महा । श्री जैन दिवाकरजी महा० सिद्ध थ तो श्री प्यारचन्दजी महा० थे साधक। इन सिद्ध-साधक ने ही श्री जैन दिवाकरजी महा० आचार्य न होते हुए भी "श्री जैन दिवाकरजी महा० की सम्प्रदाय के" यह पहचान कायम करदी। राजा और रंक के हृदय श्री जैन दिवाकरजी महा० के वाणी के स्थान बन गये थ। श्री प्यारचन्दजी महा ने अपने प्रयत्नों से श्री जैन दिवाकरजी महा० को राजा और गरीबों में अभिन्न स्थान प्राप्त कराया। वे निरन्तर इसी विचार एवं प्रयत्न में रहते थे कि श्री जैन दिवाकरजी महा० के व्यक्तित्व की प्रतिष्ठा ही सम्प्रदाय की प्रतिष्ठा है। अतः अपनी सम्प्रदाय का विकास उन्होंने उस समय में श्री जैन दिवाकरजी महा० के गुण गौरव के विकास द्वारा चरम सीमा पर पहुँचा दिया था। जिधर देखो उधर श्री जैन दिवाकरजी महा० की गूंज थी। उन्होंने अनेक प्रान्तों में तथा शहरों में श्री जैन दिवाकरजी महा० के साथ में रहकर अपनी सम्प्रदाय का दीपक समुज्ज्वलित रखने का सराहनीय प्रयत्न किया था। फलोक फल स्वरूप वे उस समय में गणी के रूप में सब प्रथम जनता के सामने आये।

गणी होने के बाद वे रुक सकते क्योंकि जमाने का रुख

बदल रहा था। मोड पर मुड़ना ही विशेषज्ञता है। भगवान् ने भी अपने मुनि को द्रव्य क्षेत्र काल और भाव के अनुकूल रहने का आदेश प्रदान किया है। गणीजी महाराज भी उस आदेश के अनुसार अपने आपको रखने वाले थे। वे प्रवाह के अनुसार चलने वाले थे; परन्तु युग-प्रवाह के प्रतिकूल चलने वाले नहीं थे। जब उन्होंने देखा कि अब समाज मे सम्प्रदायवाद के बादल बिखरने लगे हैं, अब जो भी सम्प्रदायवाद को आगे लेकर चलेगा वह बदली हुई हवा के सामने टिक नहीं सकेगा, तब सर्व प्रथम सम्प्रदायवाद की दीवारों को तोडने में ये अगुआ हुए। स० २००३ में जब किशनगढ़ कुछ दिन साथ में रहने का प्रसग आया तो उन्होंने मुझे फरमाया कि—"देखो ! समीर मुनि ! अब ये श्रावक लोग सम्प्रदाय वाद से ऊब गये हैं। मुनि-वर्ग इसको नहीं समझेगा तो समाज में मुनियों की प्रतिष्ठा अब खतम हुई समझो।"

उपाध्यायजी महा० सा० उस समय में पूज्य श्री हुक्मीचन्द-जी महा० की सम्प्रदाय के एकीकरण के विचार मे थे, परन्तु दूसरी ओर अभी समय को पहिचानने की दुर्बलता थी, जिससे वे विचार सिद्ध नहीं हो सके। लोक मानस बदलता जा रहा था। जो भक्त-गण सम्प्रदायवाद की भींत के निर्माता थे, वे ही अब उस भींत को गिराने लग गये थे। राजाशाही—जागीरदार शाही के समय के पक्के सुदृढ दुर्ग भी जब टूटने लगे तो फिर सकीर्ण विचारों की दीवार क्यों नहीं गिरे ? समय के साथ उसका गिरना भी आवश्यक था। श्री उपाध्यायजी महा० सा० की पैनी दृष्टि से जन मानस छिपा नहीं रहा और वे सम्प्रदाय के एकीकरण की गूँज में शामिल हुए। स० २००६ के साल में ब्यावर में पाच

सम्प्रदायों का एक सम्प्रदाय के रूप में लाने के प्रयत्न में श्री प्यारचन्दजी महा० सा० अगुआ थे।

जब पांच सम्प्रदायों की प्रगति और त्याग जनता के सामने आया तो जैन-जनता ने इस साहस का हृदय से स्वागत किया। स्थानकवासी जनता पारस्परिक-झगड़ों से घबरा गई थी। घबराई हुई जैन-जनता ने फिर चारों से मुनियों को पुकारा जिन्होंने कि अभी अपनी सम्प्रदायों को बनाये रखने का लोभ रक्खा था। जिसके परिणाम स्वरूप सादड़ी (मारवाड़) में वृहत् साधु-सम्मेलन हुआ और वहां आये हुए सभी सम्प्रदायों के गण नायकों ने यह समझ लिया कि— इच्छापूर्वक अथवा अनिच्छा-पूर्वक कैसे भी अब हमें इस सम्प्रदायवाद से बाहिर आना ही पड़ेगा।" स्थिति और समय आगे बढ़ रहे थे। लाचार सभी को एक स्वर से समय की मांग का स्वीकार करना पड़ा। उस समय में वैसा नहीं होता तो अपनी प्रतिष्ठा की सुरक्षा नहीं रह सकती थी। अस्तु।

उस समय में "श्री वर्धमान स्थानकवासी श्रमण संघ" के नाम से सम्प्रदायों का एकीकरण हुआ और श्री प्यारचन्दजी महा० सा० तब मन्त्री के रूप में प्रकट हुए।

सोजत एवं भीनासर सम्मेलन में भी वे (श्री प्यारचन्दजी महा० सा) पहुँचे। सादड़ी-सम्मेलन के बाद मन्त्री श्री प्यारचन्दजी महा ने श्रमण-संघ" को सुदृढ़ बनाने के प्रयत्न में कोई कमी नहीं रक्खी। भीनासर-सम्मेलन के समय में भी उन्होंने वही प्रयत्न जारी रक्खा। किन्तु वहां जो कुछ हुआ उससे

उनको बड़ा दु ख हुआ। अन्य जो भी विचारक वहा थे, उन्हें भी उस सम्मेलन की कार्यवाही से निराशा ही प्राप्त हुई। भीनासर-सम्मेलन में "जिन-(साधुओं) द्वारा प्रोत्साहित होकर कार्य में अगुआ हुए थे, उन (साधुओं) मे परस्पर मे बहुत जल्दी ही इतनी दूरी हो जायगी", यह किसी को मालूम ही नहीं था। खैर।

भीनासर-सम्मेलन में श्री प्यारचन्दजी महा० सा० मन्त्री पद से उपाध्याय पद पर आये। वहा की कार्यवाही से निराशा-प्राप्त उपाध्यायजी महा० सा० चन्द वर्षों मे ही सारी स्थानकवासी समाज को अपनी निराशा देकर चल बसे।

भीनासर सम्मेलन से लौटते हुए नागोर चातुर्मासार्थ रहे। चातुर्मास के बाद में मेवाड़ होते हुए मालवे में पधारे। तब तक मालवे की खटीक जाति मे जैन धर्म का प्रचार ठीक तरह से प्रारम्भ हो गया था। उपाध्यायजी महा० सा० जावद पधारे, तब मैं भी साथ मे ही था। खटीक जाति में प्रचार-कार्य करते हुए देखकर मेरे प्रति प्राचीन जैनों की अरुचि प्रारम्भ हो गई थी। लोगों की ऐसी नासमझी की बातें जब उपाध्यायजी महा० ने सुनी तो उन्होंने लोगों को समझाया कि -"यह प्रचार कार्य जैनधर्म के अनुकूल है, आप सभी को इसमें सहयोग देना चाहिये।"

मालवे से आप बम्बई, अहमदनगर और पूना चातुर्मास करके रायचूर गतवर्ष चातुर्मास रहे। रायचूर चातुर्मास के बाद आप बेंगलोर की ओर पधार रहे थे, सहसा मार्ग में ही गजेन्द्रगढ़ कस्बे मे ही आप अस्वस्थ हो गये। स्थानकवासी समाज को कल्पना ही नहीं थी कि—श्री उपाध्यायजी महा० सा० स्वर्ग पधार

जायेंगे, ऐसे अचानक समय में ही आप स्वर्गवास होने के समाचार मिले तो सभी के हृदय में वियोग-विषाद छा गया।

श्री उपाध्यायजी महा० सा० ने अपने संयम-काल में सम्प्रदाय एवं समाज के लिये जो कुछ किया—वह भुलाया नहीं जा सकता।

श्री उपाध्यायजी महा० सा० की कार्य कुशलता साहित्य-सेवा तथा जैन-धर्म के विकास का ध्येय ये सब हमारे लिये आदर्श रूप हैं। उन महान् आत्मा की महान् भावना का सत्कार करना ही अपनी महानता बढ़ाना है। 'मनुष्य अपने उदार चरित्र से ही महान् होता है" यह उक्ति सम्पूर्ण सत्य है। यदि मानव-धर्मी मानव इस उक्ति को अपना ले तो वह अपने जीवन क्रम को स्तुत्य बनाने में समर्थ हो सकेगा। यह निर्विवाद सत्य है।

:: हा ! अश्रुवन्त-नयन !! ::

—— :o: ——

(लेखकः-मुनि श्री मंगलचन्दजी म० के शिष्य
पं० मुनि श्री भगवतीलालजी म०)

हा ! कराल काल ! तूने यह क्या किया ? तूने इतने अनमोल रत्न इस धरा से लिए, तो भी संतोष का अनुभव नहीं किया। काल की गति कहीं पर भी रुकती नहीं होती है। इस न्याय से वह अबाधित होता हुआ एक मनीषि को, जिन्होंने समाज को अमूल्य साहित्य प्रदान किया, विश्रृखलित हो रही कड़ियों को एक सूत्र में पिरोया। ऐसे स्वनाम धन्य को इस धरापर से उठा ले गया।

स्वर्गीय महामना गुरु विनीत परम विविध स्वनाम धन्य गुरुदेव स्वर्गीय जैन दिवाकर चौथमलजी म० के प्रधान शिष्य थे। श्रमण संघोपाध्याय श्री प्यारचन्दजी म० का असामयिक अवसान सुनकर हृदय में दुःख का एक समुद्र उमड़ पड़ा वह अकथनीय है अवर्णनीय है।

आपने इस वसुन्धरा पर स्थित मालव प्रान्तीय रतलाम में ओसवाल वंशीय कुल को पवित्र किया। संसार को असार समझ कर आपने स्वनाम धन्य जैन दिवाकरजी म० के पुनीत चरणों में भागवती दीक्षा अंगीकार की। गुरु चरणों में रहकर आपने प्राकृत संस्कृत आगम शास्त्रों का सम्यक् परिशीलन किया।

आप कुशल वक्ता थे और साहित्यिक के रूप में जनता के सम्मुख प्रकट हुए थे। आपके अपने जीवन में विशेषता थी। वह यह थी कि आप कठिनाइयों से कभी घबड़ाते नहीं थे अपने ध्येय से कभी विचलित नहीं हुए थे दिल्ली में गुरुदेव के साथ विराजमान थे कल्पसूत्र का अनुवाद स्थानकवासी मान्यता के अनुसार प्रारम्भ किया गुरु ने कहा शिष्य! तुम अनुवाद तो कर रहे हो किन्तु विचार करना यतिवर्गों में विद्वेष न फैले।" किन्तु आप अपने कार्य क्षेत्र से घबराये नहीं अपने निश्चय पर अडिग रहे साधक वही जो अपने कार्य क्षेत्र से घबड़ाये नहीं निरन्तर अबाध गति से आगे बढ़ता रहे।

पीछे से इस पुस्तक का अच्छा आदर हुआ जैन जगत् के जगमग तारे जैन जगत की महिलायें, ज्ञाता धर्म कथांग का हिन्दी अनुवाद अन्तकृत दशांग का हिन्दी अनुवाद और आदर्श

मुनि आदि आपकी प्रसिद्ध रचनाऐं हैं। जो समाज में अच्छा थान रखती हैं।

जब सादड़ी और सोजत में सम्मेलन हुए थे उस समय आप सह मन्त्री के पद पर प्रतिष्ठित थे। बाद मे जब भीनासर सम्मेलन हुआ उस समय आपने उपाध्याय जैसे महत्वपूर्ण पद अगीकार किया। दोनों पदों का आपने बड़ी विद्वता-पूर्वक सचालन किया।

जब श्रमण सघ में फूट की दरारें पड़ी, एक धागे में पिरोई हुई माला टूटने लगी, तब आपने अपनी आवाज बुलन्द की।

रायचूर का ऐतिहासिक चातुर्मास सम्पूर्णकर बेंगलोर की भूमि को पवित्र करने की वलवती प्रेरणा से जब आप आगे बढ़ रहे थे, तभी यह असामयिक अनिर्वचनीय दुर्घटना घटी। जिसे दीर्घकाल तक नहीं भूलाया जा सकेगी हम उस स्वर्गस्थ आत्मा के प्रति यही कामना करें कि उन्हें परम शान्ति प्राप्त हो।

१६

श्रद्धाञ्जलि

(ले०—प्रिय-व्याख्यानी श्री मंगलचन्दजी महा० सा०)

सजातो येन जातेन याति धर्मं समुन्नतिम् ।
परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते ॥
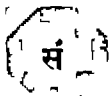
संसार में कई जीव पैदा होते हैं और मर जाते हैं किन्तु जन्म उन्हीं का सफल है, जिन्होंने अपने आपको परोपकार में लगा दिया है। 'परोपकाराय सतां शरीरं ।'' इस पृथ्वी पर रामजी आये थे और रावण भी आया था कृष्ण भी आये थे और कंस भी आया था ।

परन्तु एक का जीवन आध्यात्मिक मार्ग मे पथ प्रदर्शक था और दूसरे का जीवन विलासमय स्वार्थ पूर्ण तथा अधोगामी था। इसीलिये एक का स्थान जन-जन के हृदय में है और दूसरे का तिरस्कार के गर्त में। स्पष्ट है कि जो परकार्य में रत रहते है और अपने स्वार्थ को तिलाञ्जलि देकर कमर कस कर परोपकार रत हो जाते हैं। सारा ससार उन्हीं का अनुयायी बन जाता है।

स्वर्गीय उपाध्याय श्री प्यारचन्दजी महाराज भी एक ऐसे ही सत्पुरुष थे। उन्होंने अपना समग्र जीवन परोपकार मे ही लगा दिया था।

आपका जन्म मालवा के रतलाम शहर मे ओसवाल कुल मे हुआ था। उस समय कौन जानता था कि यही बालक एक महान् जीवन स्रष्टा बनेगा। अपनी महती आध्यात्मिक शक्ति का परिचय देकर जनता को आश्चर्य-चकित कर देगा। आपमे बाल्यावस्था मे ही धार्मिक-सस्कारों की नींव पड गई थी। बचपन के संस्कार अमिट होते हैं। आप की किशोरावस्था में ही जैन दिवाकर श्री चौथमलजी महाराज का रतलाम में आगमन हुआ। उनके असर कारक धार्मिक उपदेशों का आप पर गहरा प्रभाव पड़ा। और परिणाम स्वरूप आपने ससार का नेह नाता तोड़कर वैरागी बनकर जैनेन्द्रीय-दीक्षा ले ली।

आपका दीक्षा-सस्कार सवत् १९६९ मे ऐतिहासिक स्थान चित्तौड़ में हुआ। दीक्षोपरान्त आपने अपना ध्यान अध्ययन की ओर लगाया। आपने सस्कृत, प्राकृत तथा हिन्दी का गहरा अध्ययन किया और परिणाम स्वरूप कई धार्मिक ग्रन्थ लिखकर आपने जनता के सामने रखे। "आदर्श मुनि", "जैन जगत के

कम्मनवारे" जैन जगत की महिलाऐँ" आदि आपके मौलिक ग्रन्थ हैं। "ज्ञाताधर्म कथा" सुख-विपाक तथा कल्प-सूत्र आदि आपके अनुदित ग्रन्थ हैं।

आप अपने समय के एक बहुत बड़े कार्य-कर्ता थे। आपने अस्त-व्यस्त बने हुए तथा फूट के कारण से छिन्न विछिन्न होते हुए समाज को एक सूत्र में पिरोने का निश्चय किया और इसी हेतु से आपने समाज के मुख्य कार्य कर्त्ताओं को संगठित करके उनमें इस प्रकार की भावना जागृत की। फल-स्वरूप सादड़ी का वृहत सम्मेलन हुआ। आपके अथाह परिश्रम से सम्मेलन सफल हुआ। सभी सम्प्रदाय एकत्र होकर "श्रमण-संघ" में विलीन हो गये। आप श्रमण-संघ के सह मन्त्री के नाते कार्य करने लगे। बीकानेर सम्मेलन में आपको उपाध्याय के पद से विभूषित किया गया। आप उन महापुरुषों में से थे जो कथनी नहीं किन्तु करनी से समाज को सिखाते हैं। आप का व्यवहार बड़ा प्रेम पूर्ण होता था। अपने इस व्यवहार से आपने अनेक व्यक्तियों को अपना बना लिया था। आपका यह गुण सामाजिक संगठन के कार्य में आपके लिये बड़ा लाभदायी सिद्ध हुआ। एक दिन भी अगर किसी को आपके साथ रहने का सौभाग्य प्राप्त हो जाता वह आपका पूर्ण अनुयायी बन जाता। आपकी कार्य सफलता देखकर उपाचार्य श्री गणेशीलालजी महाराज भी समय समय पर आपसे विचार-विमर्श किया करते थे और आप की बुद्धि मत्ता से लाभ उठाते थे।

आप कभी एक स्थान पर अधिक दिन तक नहीं ठहरते थे और न एक प्रान्त में ही अधिक दिनों तक ठहरते। राजस्थान,

गुजरात, मालवा, पजाब, महाराष्ट्र खान देश, कर्नाटक आदि कई प्रान्तों में भ्रमण करके जनता मे धर्म प्रेम निर्माण किया। ब्लड प्रेशर की तकलीफ होते हुए भी आप कभी विश्राम से नहीं बैठते थे। धर्म-जागृति के कार्य में आप विश्राम लेना पसद नहीं करते थे।

आप रायचूर का चातुर्मास पूर्ण करके बेंगलोर की ओर रवाना हुए थे कि गजेन्द्रगढ मे ही रोगोत्पत्ति हो जाने से आपका स्वर्गवास हो गया। इस दु.खद समाचार से सारे जैन जगत् मे शोक की छाया छा गई।

स्थान स्थान पर शोक-सभाएँ की गई। उपाचार्य श्री गणेशीलालजी महाराज ने आपके दु.खद निधन से शोक सतप्त होकर कहा है कि—"आज श्रमण-सघ ने एक प्रमुख कार्य कर्त्ता खो दिया। मेरा दाया हाथ चला गया।"

सक्षेप मे उपाध्यायजी महाराज केवल उपदेशक, लेखक एव धर्म कार्य कर्त्ता ही नहीं किन्तु एक महान् धर्म-प्रचारक थे। उनके उपदेशों से प्रभावित होकर कई जैनेतरों ने जैनधर्म अगीकार किया है। ऐसे महान् प्रचारक के चले जाने से आज जैनधर्म की महती हानि हुई है। जैन जगत् अनेक कार्य मे सदैव उनका ऋणी रहेगा। उन महान् आत्मा को चिर शान्ति प्राप्त हो।

ता० १५-६-६० } { तलेगाव (पूना)

स्वर्गीय उपाध्याय श्री प्यारचन्दजी महा०

(ले० —श्री हिम्मतसिंहजी उसेमरा 'साहित्य रत्न' उदयपुर)

"मेरी एक भुजा आज मुझसे बिछुड़ गई; मेरी शक्ति का एक स्रोत मुझसे विलग हो गया।" उपाचार्य मुनि श्री गणेशीलालजी महाराज साहब ने जब श्रमण संघ के उपाध्याय साहित्य प्रेमी पण्डित मुनि श्री प्यारचन्दजी महाराज के अकस्मात् स्वर्गवास हो जाने का समाचार सुना तब ये शब्द कहे। उपस्थित अन्य संतों में से

एक ने कहा "वाणी व्यवहार एव विचार की समन्वयात्मक त्रिवेणी पर उपाध्याय मुनि श्री का व्यक्तित्व हम संतों का निर्भय आश्रय-स्थान था।"

उपरोक्त वाक्यों से स्पष्ट हो जाता है कि मुनि श्री का व्यक्तित्व निस्सन्देह बहुत ही उदार, स्नेह स्निग्ध एवं चिन्तन की सूक्ष्म आत्मा से ओत-प्रोत था, बिना किसी भेद-भाव के महान् पुरुषों के प्रति उपाध्याय श्री की भावना एवं वाणी अनुकरणीय आदर्श उपस्थित करती थी जिसकी इस नवयुग के जागरण मे सबसे अधिक आवश्यकता है।

सगठन एव एकता के अग्रदूत, प्राणी मात्र के त्राता, सम-भावी एव महान् योगी स्वर्गीय जैन दिवाकर श्री चौथमलजी महाराज के आप शिष्य थे। कई वर्षों तक उनकी सेवा मे रहकर आपने सीखा कि यदि धर्म को जीवित रखना है तो प्रेम और सगठन का मार्ग अपनाना होगा, गौरव तथा मान-मर्यादा के साथ शान्त जिन्दगी गुजारना तभी सभव है जब कि समाज में एकता की भावना, सहानुभूति और परस्पर प्रेम भाव हो।

फलस्वरूप आपने सादडी सम्मेलन का बडी खुशी से स्वागत किया तथा सतों को सम्बोधित करते हुए कहा था कि इस वैज्ञानिक युग मे हम अपनी जीवन की गुत्थियों को एक सघ, एक आचार्य एक परम्परा और एक समाचारी के बल से ही सुलझा सकते हैं, हमारा बल और हमारा ध्येय एक ही जगह केन्द्रित हो जाना चाहिये, हमारा शासन मजबूत हो, समाज का प्रत्येक सघ फौलादी हो और वह दूरदर्शी तथा देश काल की प्रगति को पहचानने वाला हो।

उपाध्याय श्री ने समाज-सेवा और धर्म रक्षा के निमित्त जो सहयोग दिया उसे सभी संत एवं समाज के कर्णधार अच्छी प्रकार से जानते हैं आपकी कार्य कुशलता जागरूकता एवं कर्तव्य परायणता से प्रभावित होकर आपको श्रमण संघ के मन्त्री का कार्य सौंपा आप उसे अदम्य उत्साह से अपनी कुशलता व नीतिज्ञता से पालन करते रहे और अपने ध्येय को पूर्ण करने में प्रयत्न शील रहे।

जिस प्रकार उपाध्याय मुनि श्री जागरूक साधक रहे संयम मय जीवन व्यतीत करते रहे, उसी प्रकार साहित्य के निर्माण क्षेत्र में भी सतत मनस्वी द्रष्टा के रूप में अपना व्यक्तित्व रखते थे। कई पुस्तकों में आपने चिन्तन को व्यक्त किया है। पं मुनि श्री चौथमलजी महाराज साहब के जितने ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं उन सबमें आपका महत्त्वपूर्ण सहयोग रहा है।

आज जब फिर से हमारे दिल और दिमाग पर मध्ययुगीन भावना अपना रंग जमाना चाहती है तब सही अर्थों में हमें अभ्युत्थान विकास और प्रगति का मार्ग बतलाने वाले उपाध्याय श्री का अचानक हमसे बिछुड़ जाना अत्यन्त दुःख की बात है।

मैं समझता हूँ उपाध्याय श्री के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि हम सभी की यही होगी कि अपनी तीव्रतम श्रद्धा से निष्ठा से श्रमण संघ को पोषण करने में सहयोग दें तथा उसके प्रति वफादार रहें।

ज्ञान दर्शन चारित्र की सु आराधना, सस्वतः सब निराले थे। वे जैन जगत् के एक चमकीले नक्षत्र थे जिसमें समग्र जैन जगती एक विलक्षण आभा से चमक पड़ी थी; और आज भी यद्यपि हमारे दुर्भाग्य से वह नक्षत्र विलुप्त हो गया पर "उसकी भव्य चिरनव्य दिव्य कान्ति" मुस्करा रही है और हमारा पथ प्रदर्शन कर रही है।

जैन जगत् को समर्पित उनकी महत्त्वपूर्ण सेवाएँ सादर चिरस्मरणीय रहेंगी। श्रमण संघ एकी करण में आप श्री के महान् योग व सगठन के मूर्त्त रूप के अनंतर श्रमण संघ के मंत्री व उपाध्याय रूप मे आपके चिरयशस्वी कार्य श्रमण सघ के इतिहास मे सतत स्वर्णाक्षरों में अङ्कित रहेंगे। आज श्रमण सव जब जर्जर व विशृ खल होता जारहा है, तब आप सदृश सुकुशल दृढ़ सच्चे कार्यकर्ता की महती आवश्यकता है। आप श्री के अभाव की पूर्ति निकट भविष्य मे अति असभव है।

आपके अनुपम गुणों का उल्लेख सीमित शब्दों में मेरी यह पंगु लेखनी भला कर सकती है? सतों की विशद जीवन गरिमा आज तक कभी पूर्ण रूपेण नहीं कही गई। समग्र धरती कागज बनाकर सारे समुद्रों के नीर को स्याही का स्वरूप देकर, और समस्त वृक्षों की लेखनी बनाकर यदि फिर युग युग तक सत गुण कथा लिखी जाय तो भी सतों का जीवन कभी नहीं लिखा जा सकता। फिर इन कतिपय पंक्तियों मे प्यारचन्दजी म० सा० की प्रशस्ति अकित करना तो सचमुच सूर्य को दीपक दिखाना भी नहीं है। सुनील विस्तृत गगन मण्डल की क्या दीन विहंग ने कभी इयत्ता पाई है? यह तो मुझ अकिंचन के श्रद्धा के दो

शिव संतों को ही प्राप्त होता है। ये संत तो अगरबत्ती की तरह स्वयं जलकर दूसरों को सुवास प्रदान करते हैं। दीपक की तरह अपना शरीर तिल तिल जलाकर अंधकार में प्रकाश बिखेरने करने वाले सहज करुणा शील संत सतत—"वन्दनीय हैं अभिनन्दनीय हैं।"

ऐसे ही परम पुनीत संतों की भव्य लड़ी में से एक मनोहर मौक्तिक हैं—"परम पूज्य श्रद्धेय उपाध्याय श्री श्री प्यारचन्दजी म० साहब।" यद्यपि क्रूर काल ने उनको अपना कवल बनालिया और वे पार्थिव शरीर रूप में हमारे समक्ष विद्यमान नहीं हैं तथा उनका मिट्टी का शरीर मिट्टी में ही मिल गया पर वे मरकर के भी अमर हैं। उन्होंने मरण द्वारा चिर जीवन का वरण किया। उनकी पुनीत स्मृति आज कोटि-कोटि हृदयों में सुरक्षित है। संचित है। क्योंकि—

'कोई हंस के मरा दुनियां में कोई रो के मरा।
जिन्दगी पाई मगर उसने जो कुछ होके मरा॥

इस विश्व उपवन में प्रतिदिन पल्लवित पुष्पित होने वाले सुमन अंतत: एक दिन मुरझा जाते हैं। उनका अस्तित्व नष्ट हो जाता है। पर कोई फूल अपनी दिव्य सुवास ऐसी पीछे छोड़ जाता है कि उसका मनहर सुरभि से दिग् दिगंत सुवासित हो जाता है। परम पूज्य श्री प्यारचन्दजी म० सा० ऐसे ही एक जैन जगत् उपवन के दिव्य पुष्प थे।"

पूज्य श्री सच्चे शब्दों में संत थे। उनका जीवन सम्यक् था। उनकी साधना अनन्य थी। उनका तप संयम-दम सम्यक्

ज्ञान दर्शन चारित्र की सु आराधना, स्पष्टतः सब निराले थे। वे जैन जगत् के एक चमकीले नक्षत्र थे जिसमे समग्र जैन जगती एक विलक्षण आभा से चमक पडी थी; और आज भी यद्यपि हमारे दुर्भाग्य से वह नक्षत्र विलुप्त हो गया पर "उसकी भव्य चिरनव्य दिव्य कान्ति" मुस्करा रही है और हमारा पथ प्रदर्शन कर रही है।

जैन जगत् को समर्पित उनकी महत्त्वपूर्ण सेवाएँ सादर चिरस्मरणीय रहेंगी। श्रमण संघ एकी करण मे आप श्री के महान् योग व सगठन के मूर्त्त रूप के अनतर श्रमण सघ के मंत्री व उपाध्याय रूप में आपके चिरयशस्वी कार्य श्रमण सघ के इतिहास मे सतत स्वर्णाक्षरों मे अङ्कित रहेंगे। आज श्रमण सघ जब जर्जर व विशृं खल होता जारहा है, तब आप सदृश सुकुशल दृढ सच्चे कार्यकर्ता की महती आवश्यकता है। आप श्री के अभाव की पूर्ति निकट भविष्य मे अति असभव है।

आपके अनुपम गुणों का उल्लेख सीमित शब्दों मे मेरी यह पंगु लेखनी भला कर सकती है? सतों की विशद जीवन गरिमा आज तक कभी पूर्ण रूपेण नहीं कही गई। समग्र धरती कागज बनाकर सारे समुद्रों के नीर को स्याही का स्वरूप देकर, और समस्त वृक्षों की लेखनी बनाकर यदि फिर युग युग तक सत गुण कथा लिखी जाय तो भी सतों का जीवन कभी नहीं लिखा जा सकता। फिर इन कतिपय पंक्तियों मे प्यारचन्दजी म० सा० की प्रशस्ति अंकित करना तो सचमुच सूर्य को दीपक दिखाना भी नहीं है। सुनील विस्तृत गगन मण्डल की क्या दीन विहग ने कभी इयत्ता पाई है? यह तो मुझ अकिंचन के श्रद्धा के दो

कुसुम हैं जिन्हें सुदामा के चार तन्दुल कह सकते हैं या भीलनी के झूठे बेर।

ऐसे पुनीत दिव्य संतों के चरणों में मेरी नम्र श्रद्धांजलि समर्पित है। मेरा मस्तक सादर नत है। मन में भाव भीनी श्रद्धा लिये व वचनों में गुरु की जय जयकार के साथ और साथ ही इस मधुर आशा व विश्वास के साथ कि—

"पूज्य श्री के विमल सरल भव्य व दिव्य जीवन से हम प्रेरित व प्रोत्साहित हो समाज धर्म व देश जाति के अभ्युत्थान में सतत निरत होंगे एवं पूज्य गुरुवर के अधूरे कार्यों को पूर्णता का तथा उनके मनहर स्वप्नों को साकारता का रूप प्रदान करेंगे।"

अंत में यह विनम्र सेवक बारबार भावभीनी श्रद्धांजलि समर्पित करता है।

:: दीर्घ दृष्टि श्री उपाध्यायजी म० सा० ::

—:o:—
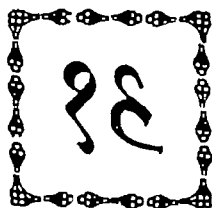
(ले०—श्री बापूलालजी बोथरा, रतलाम)

सद्‌गत परम पूज्य उपाध्यायजी महा० सा० मेरे लिये एक आधार स्तम्भ थे, मैं उनके गुणों का बयान नहीं कर सकता। वे समाज की नाड़ी को पहिचानते थे, समाज के उतार चढ़ाव को तत्काल समझने की उनमे अद्‌भुत क्षमता थी युग-प्रवाह के वे सम्यक्-ज्ञाता थे।

उपाध्यायजी महा० सा० बाल ब्रह्मचारी थे, पंडित रत्न थे, गुरु के अनन्य भक्त थे, जैन धर्म के महान प्रभावक थे और

समाज-संगठन के असाधारण हिमायती थे। समाज के विकास और समृद्धि के लिये वे सब कुछ करने के लिये तैयार रहते थे। आपके धार्मिक गुणों का और स्वभाव स्तुत तेज का कहाँ तक बयान करूं? मैं मुख्यतः लेखक नहीं हूँ कि उपाध्यायजी के गुण माला को समाज के सामने प्रस्तुत कर सकूँ। फिर भी श्रद्धावश ये शब्द व्यक्त कर रहा हूँ।

आपका जन्म स्थान रतलाम है और सांसारिक-सम्बन्ध की दृष्टि से वे मेरे भाई होते हैं। उनकी मेरे पर बड़ी कृपा-दृष्टि थी। वे मुझे यथा समय सामाजिक सेवा का संयोग प्रदान कराया करते थे और मैं उत्साह पूर्वक उन्हें सम्पन्न किया करता था। मैं बहुधा करके प्रति वर्ष उपाध्यायजी महा० सा० के दर्शनार्थ आया करता था। सं० २०१५ की बात है उपाध्यायजी महा० सा० बोरी (धूमा) में विराजते थे मैं दर्शनार्थ आया हुआ था मैंने निवेदन किया कि 'आपका शरीर वृद्ध हो चुका है, जैसी समाधि चाहिये वैसी समाधि का अभाव है तथा सामाजिक मसलों का हल करने के लिये आप कृपा करके मालवा की तरफ ही पधारें।" महाराज सा० ने मधुर और भावपूर्ण शब्दों में फरमाया कि— 'अपार्तिक में धर्म प्रभावना की पूरी संभावना है, अनेक जैन श्रावकों को भग वान की वाणी सुनने का अपूर्व मौका प्राप्त होगा तथा रायपुर श्री संघ की भी अत्यन्त आग्रह भरी हार्दिक विनति है अतः इस ओर ही स्पर्शना के भाव हैं। आगे तो द्रव्य-क्षेत्र, काल भाव के संयोगों पर निर्भर है।"

महाराज सा० के घन-गर्जन समान शब्दों में अपूर्व माधुर्य झलक रहा था साथ में दीर्घ दृष्टि भी प्रति भासित हो रही थी।

मुझे क्या मालूम था कि रायचूर में महाराज सा० के दर्शन मेरे भाग्य में अन्तिम हैं। दैव का विधान भविष्य के अनत और अज्ञात निधि मे छिपा हुआ रहता है। तदनुसार उपाध्यायजी महा० सा० का विचरना कर्नाटक मे हुआ। जैन धर्म की महान् प्रभावना फैली। विधि विडम्बना का प्रतिफल गजेन्द्र-गढ़ मे प्रति भाषित हुआ, सवत् २०१६ के पौष शुक्ला दशमी शुक्रवार को दिन के पोणे दश बजे महाराज सा० का पंडित मरण के साथ स्वर्गवास हुआ।

महाराज सा० का प्रतिभा पूर्ण जीवन एक देदीप्यमान तारे के समान श्रमण-सघ के इतिहास में सदैव चमकता रहेगा। इसमे सदेह नहीं है।

उपाध्यायजी म० सा० ने जैन धर्म की प्रभावना की और हमारे बोथरा कुल को भी समुज्जवलित और प्रकाशमान् बना दिया। इसके लिये हम सभी बोथरा वंशीय समुदाय महाराज सा० के परम ऋणी हैं और इस ऋण से कभी मुक्त भी नहीं हो सकते हैं।

उपाध्याय श्री प्यारचंदजी महा० की एक स्मृति

(लेखकः—श्री 'उदय' जैन धर्म शास्त्री—सचालक
श्री जैन शिक्षण संघ व जवाहर विद्यापीठ कानोड़)

अपनी भूतपूर्व सम्प्रदाय में उपाध्याय पद को निभाने वाले तथा श्रमण संघ में भी उपाध्याय पद पर आसीन होने वाले प्रतिभा सम्पन्न साधु यदि थे तो एक वे ही श्री प्यारचन्दजी महाराज थे। उनका सह वर्तन जैन दिवाकर श्री चौथमलजी महाराज को अपने जीवन

पर्यंत रहा। महान् विचारक, दीर्घ द्रष्टा शास्त्री अध्येयता और पथ प्रदर्शक साधु श्री प्यारचदजी महाराज थे। उनकी विचार सरणी बड़ी उत्तम और प्रास्थ थी। वे श्रमण सघ के प्रबल पोषक और सवर्धक थे। उनके सम्पर्क में यद्यपि मैं अपनी निजी और शैक्षणिक प्रवृत्ति के कारण अधिक न आसका, फिर भी एक बार के दर्शन की चिर स्मृति मेरे जीवन में अमर रहेगी। वह है नागोर चातुर्मास मे मेरी और उनकी बात चीत।

समाज के कई पहलुओं पर और श्रमण सघ की स्थिरता और अस्थिरता जनक परिस्थितियों पर मेरा और उनका विचार विनिमय हुआ था। बाद मे मेरे मन मे उनकी एक बात घर कर गई वह है चाहे श्रमण सघ अस्थिरता पर चला जाय, लेकिन भूतपूर्व दो सम्प्रदायों (हुकमीचन्दजी महाराज की) मे मेरे जीतेजी कोई अनमेल नहीं करा सकता क्या ही अपूर्व प्रेम "वर्तमान उपाचार्य श्री गणेशीलालजी महाराज और उनमे" विद्यमान था। यह उनकी उपरोक्त वाणी से स्पष्ट है।

श्रावकों के दूषित वातावरण से वे अत्यन्त खिन्न रहते थे। वे ऐसे वातावरण को सुनना भी पसद नहीं करते थे, जो दो दिलों को तोड़े। श्रमण सघ का भेद करे। मिले हुए जुडे हुए को पृथक् करने मे योग दे।

जो श्रावक मोहवश गंदा वातावरण पैदा करते है वे, श्रावक सघ और श्रमण सघ के लिए विगठन का कार्य करने वाले है। मैं अपनी इस छाप को छिपा नहीं सकता कि दूसरों की भूल को सुधारने के वजाय जो व्यक्ति दूसरों की भूल को दूषित रीति

प्रचार करता है वह समाज सेवक अपितु अपने आपका घातक है।

मनुष्य भूल का पुतला है लेकिन भूल सुधार कर देव बनने के लिए हम श्रावक और श्रमण जिम्मेदार हैं। जो जिस वर्ग में रहता है वह उसका रक्षक हो जाता है। एक दूसरे को उखाड़ना देना निंदा करना दूषित छापे छापना और धर्म के नाम पर झगड़े करना ये सब कार्य जैन धर्म से विपरीत हैं। जहाँ नेह नहीं और भक्त नहीं वहाँ धर्म भी नहीं। धर्म एक दूसरे का सहयोगी होता है, न कि एक दूसरे को लड़ाने वाला। जो मार्ग, जो धर्म जो सम्प्रदाय जो मुनिराज और जो श्रावक दूसरों से लड़ता है और दूसरों को लड़ाता है, वह कुमार्ग है।

सबसे पहला हमारा नियम अहिंसा व्रत का है। प्रेम का है। मिलने का है। दूसरा नियम सत्य बोलने का, दिल नहीं दुखाने का है यदि ये दो व्रत हमारे हो गये तो सभी व्रत उसके साथ मिलते जायेंगे। जहाँ ये नहीं हैं तो वहाँ दप है मत है, अहंकार की लिप्सा है। जिनमें दूसरे का समझने और देखने की क्षमता नहीं है वे स्वयं मार्ग च्युत होते हैं।

मैं अपनी उपाध्याय मुनि श्री के विचार प्रचार और कार्य सम्बन्धी निजी स्मृति को सबके सामने रखकर सभी श्रावकों और मुनियों से प्रार्थना करता हूँ कि हमारा संघ उनके विचारों का अनुसरण करे और उपाध्याय श्री प्यारचन्दजी महाराज के दिव्य प्यार की स्मृति को अमर बनाई रक्खें।

:: श्रमण संघ के महान-संगठक ::

—: स्वर्गीय उपाध्याय श्री प्यारचन्दजी महाराज :—

—————— :o: ——————

(ले०—श्री चांदमलजी मारू, मंदसौर (म० प्र०))

स्थानकवासी जैन समाज मे ऐसा कौन व्यक्ति होगा जो उपाध्याय प० मुनि श्री प्यारचन्दजी महाराज से परिचित न हो। सदैव प्रशान्त-महासागर के समान गम्भीर एव मौन रहते हुए आपने समाज को सुसगठित करने में जिस प्रकार सक्रिय श्रम एव पथ प्रदर्शन के साथ ही उसको कल्यान मार्ग की ओर प्रवृत्त किया निस्सन्देह

यह कदापि भुलाया नहीं जा सकता। जब जब भी समाज में विघटन की विषम स्थिति उत्पन्न हुई आप उसे एक करने में कटिबद्ध हो जाते थे और तब तक विश्राम नहीं लेते थे जब तक आपको अपने संकल्पित कार्य में सफलता नहीं मिल जाती। यही कारण है कि आपके सफल पाण्डित्य एवं सुधार वादी दृष्टि कोणों का प्रभाव जैन समाज पर तो था ही अन्य मतावलम्बी भी आपसे प्रभावित हो आपके विचारों तथा कार्यों की हृदय से प्रशंसा किये बिना नहीं थकते हैं।

श्री उपाध्यायजी महाराज ने जैन दिवाकर प्र० व० पं० मुनि श्री चौथमलजी महाराज साहब से दीक्षा ग्रहण कर अनेक वर्षों तक अपने गुरुवर्य की अटूट सेवा करते हुए जो ज्ञान संपादन किया उसीके फलस्वरूप उनके समय में ही आपको गणीपद से सुशोभित कर दिया गया था। इतना ही नहीं नेतृत्व करने की सफल क्षमता के कारण भूतपूर्व पूज्य श्री मन्नालालजी महाराज की संप्रदाय का पूरा संचालन भी आपके ही द्वारा होता रहा।

श्री उपाध्यायजी महाराज की प्रारम्भ से ही यह आन्तरिक इच्छा रही कि 'सर्व प्रथम समाज में भ्रातृत्व की आदर्श भावना के साथ एकता स्थापित होनी चाहिये। यदि समाज में संगठन और एकता नहीं रही तो हम किसी भी प्रकार से ... कल्याण नहीं कर सकते क्योंकि ... की नींव पर ही ... गया सामाजिक कल्याण का ... भवन स्थायी हो सकता है। ... सतत यह उनके जीवन गत ... ति जाना ... है। भूतपूर्व पूज्य श्री ... सम्प्रदाय

भागों मे विभक्त हो गया था तब उसको पुनः पूर्ववत् एक करने में आपने जो अथक परिश्रम किया उससे समाज भलीभाति परिचित है ही। इसी प्रकार अजमेर मे आयोजित प्रथम साधु-सम्मेलन के समय भी आपने जिस लग्न एव तन्मयता के साथ योगदान दिया वह सभी अशों में स्तुत्य कहा जा सकता है।

वस्तुत. वे महान आदर्श जीवन व्यतीत करने वाले सच्चे सन्त थे। अपनी ज्ञानमयी साधना के फल स्वरूप क्रमश. उन्होंने सामाजिक एव आध्यात्मिक जीवन मे उन्नति की। यही कारण था कि वे श्रमण से गणी और श्रमण सघ के सहमन्त्री व सहमन्त्री से उपाध्याय पद पर पहुँच गये थे।

उपाध्यायजी म० ने गत दो वर्षों मे अनेक पदाधिकारी मुनियों से जिन विचारों का आदान प्रदान किया वह समाज के लिये अत्यधिक हितकर एव उपयोगी है।

स्वर्गीय उपाध्यायजी महा० के जीवन में जो उत्कृष्ट विशेषताएँ रहीं उनकी आसानी से गणना नहीं की जा सकती है। ऐसी स्थिति में श्रद्धाञ्जलि के रूप मे इस समय उनके जीवन के कतिपय सस्मरण ही पाठकों की सेवा में प्रस्तुत कर पंक्तियों को विराम देता हूँ।

२२

एक ज्वलन्त व्यक्तित्व

— श्रद्धेय उपाध्याय श्री प्यारचन्दजी महाराज —
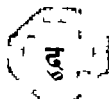
दुनिया के रंगमंच पर प्रति दिन हजारों इन्सान जन्म लेते हैं और संध्या तक हजारों ही विश्व के प्लेट फॉर्म से विदा हो लेते हैं। दुनिया उनमें किसी को भी अपनी स्मृति में रखने को तैयार नहीं होती पर दुनिया उन्हीं को याद रखती है, जिन्होंने उसके हित में अपने स्वार्थों की बलि दी हो जो उसके लिये तपे हों या उसके लिये तिल-तिल कर जले हों।

श्रद्धेय उपाध्याय श्री प्यारचन्दजी महाराज भी ऐसा एक ज्वलन्त व्यक्तित्व लेकर आये थे, जो समाज और संघ के हित मे जीये और सदैव संघ सेवा करते रहे। मालवे की शस्यश्यामला ऊर्वर भूमि में आपने जन्म लिया था। आप श्रद्धेय दिवाकर श्री चौथमलजी महाराज की चमकती किरण थे। मुझे उनके निकट आने का सौभाग्य मिला था। उनके हृदय की निष्कपटता और मन की उदारता ने मुझे काफी हद तक प्रभावित किया था। आप भूतपूर्व आचार्य श्री मन्नालालजी महाराज की सम्प्रदाय के गणी और उपाध्याय पद पर थे। श्रमण संघने भी आपको मन्त्री और उपाध्याय पद दिया था। पद भार आपने जिस दक्षता से निभाया वह सचमुच गौरव की चीज थी।

पद का गौरव था पर वह गौरव मन को छू नहीं गया था। वर्तालाप मे जिस सरलता का परिचय होता था वह भी एक अनुकरण की वस्तु थी। साथ ही बातचीत मे सरलता और स्पष्टता रहती थी। लगाव, छिपाव और दुराव का वहा काम नहीं था। अपनी बात को निर्भीकता के साथ रखने का दृढ मनोबल आप मे था। यही कारण था कि समाज के नव निर्माण मे आपका व्यक्तित्व समक्ष रहा है। समाज की गति विधि को नया मोड देने की आप मे क्षमता थी इसीलिये श्रमण संगठन और संघ निर्माण में आपने बहुत कुछ योग दान दिया। जहा कहीं पहुँचते वहा पर श्रमण-संगठन का महत्त्वपूर्ण सन्देश लिये पहुँचते थे। उपाध्याय श्री जी महाराज मानों एक सजीव संस्था थे। साहित्य सेवा एव मानव सेवा के बहुत से कार्य उनके हाथों सम्पन्न हुए थे। चतुर्थ वृद्धाश्रम में उनकी जन सेवा की भावना मूर्त्त रूप में

देख सकते हैं। दिवाकर दिव्य ज्योति की सिरपाल सीरीज और अन्य साहित्य प्रकाशन में उनकी साहित्य प्रियता के दर्शन होते हैं। सचमुच आपमें बहुमुखी प्रतिभा थी और उस प्रतिभा की जब हमें सर्वाधिक आवश्यकता थी तभी वे हमसे छीन लिये गये। खैर। व्यक्ति तो आज तक के इतिहास में कभी अमर न रह सका है और न कभी रह सकेगा, पर उनका यश-सौरभ अमर है और वह सर्वत्र व्याप्त है।

श्री लक्ष्मीचंदजी मुणोत
मन्त्री श्री धर्मदास जैन मित्र मंडल रतलाम

श्रद्धामयी-अंजली

—————:o:—————

(लेखकः—श्री अजीतकुमारजी जैन "निर्मल")

जागृतिक प्राणि एक सिरे से अपनी जिन्दगी शुरु करता है और दूसरे मोड पर वह उसे खत्म कर देता है। शुरु का सिरा और आखिर का मोड़ जहा से जीवन का श्री गणेश करके इति की पक्ति मे पूर्ण किया जाता है, दोनों ही-सिरे और मोड एक दूसरे से बिल्कुल कम नहीं है दोनों का अपना-अपना महत्व होता है। जिसका मूल्य एक दूसरे से ओझल होने पर ज्ञात होता है। इस मध्य-

काल के कार्य क्षेत्र पर ही हर मनुष्य की जिंदगी के सिरे-मोड़ का मोटे तौर पर अंकन होता है। यही तो कसौटी है-परख है। मोड़ का अर्थ मुड़ने या घूमने से नहीं है वरन् जीवन में की गई नई विशिष्ट कार्य पद्धति का प्रस्थापित हो जाना है। इसे ही तो हम एक नई ज्योति, एक गुण और एक महानता की संज्ञा देते हैं। इसी कोटि में साधारण व उच्चवर्गीय आत्माओं की समन्विता होती है।

जैन दिवाकर जन-जन के श्रद्धेय स्वर्गीय पूज्य गुरुदेव श्री चौथमलजी म० के प्रमुख ज्येष्ठ शिष्य के मान्य रूप में श्री प्यारचन्दजी म० अपने जीवन की तलस्पर्शी गहराईयों के कारण विस्मृत नहीं किये जा सकते। स्व० आचार्य श्री खूबचन्दजी म० के सम्प्रदाय के समय में पारस्परिक साम्प्रदायिक फूट वशबन्दी की गहरी विषाक्त परिस्थिति के मध्य आपने सम्प्रदाय-संचालन में बौद्धिक-निष्ठा के साथ सर्वस्व मित्रता का स्थान सुरक्षित रखा। सिर्फ यही नहीं वरन् सामाजिक नीति में आप द्रव्य, क्षेत्र काल भाव की शास्त्रीय गत मर्यादानुसार सुधार समर्थन में अग्रणी व आप जब भी साधारण या महत्व पूर्ण मसलों पर निर्णय में अपनी विशिष्ट नीति का प्रयोग करते तब अक्सर करके देखा गया कि इस निर्णय नीति के कारण आपको खरे खोटे कटुता के घूंट भी पीने पड़े परन्तु इनके बावजूद भी आपकी दृढ़ता में तनिक भी अन्तर का आभास नहीं दिखाई पड़ा। यही रूप देह यही बातें हाथ जीवन की आखरी सांस की मंजिल तक राग को श्रमण संघीय एकत्व निर्माण में गुञ्जारित करते रहे। तूफानी अम्बड़ जैसी कठिनाईयों के समक्ष सतत जूझते

रहकर उनसे विजय का सेहरा पाना ही उनका एक बारगी मरण-निश्चय होता था।

कर्तव्य ही उनका कर्म था। इसके प्रति पालन में उनकी सचेष्ट किन्तु सूक्ष्म पैनेपन से आवृत व्यावहारिकता की सामयिक सिद्धि एक अजेय सामरिक सेनापति के समान जागरुकता का पथ-निर्देश करती है। इसमें समय की परिधिया निर्धारण उनमे कोई भी गत्यवरोध उत्पन्न नहीं कर सकने में समर्थ था। अपने स्वर्गीय प्रिय गुरुदेव श्री की चरम सेवा मे अपने जीवन का अधिकाश भाग अर्पणकर एक भव्य आदर्श का मार्ग प्रशस्त कर जैन परम्परा को अक्षुण्ण रखते हुए जन जन को नये पैमाने से संदेश दिया।

श्रमण संघ के जिम्मेदार–वरिष्ठ अधिकारी के रूप मे सहमंत्री और चार उपाध्यायों में से प्रथम उपाध्याय पद पर आपका नामाकन श्रमण सघ के इतिहास में सनातन रूप से अमर रहेगा। सघ के आतरिक, आचलीय वैवादिक उलझी गुत्थियों समस्याओं व प्रश्नों के समाधान की शिखरता में आपकी तात्कालिक सूझ बूझ के औचित्य को नयन ओट नहीं किया जा सकता। जिसके सभी कायल थे।

कुशल नेतृत्व अनुभवी, तपा हुआ कर्णधार ही कर सकता है जिसका कि आपमें अभाव नहीं था। अपने आपको आपने समाज के व्यक्तित्व में खपादिया। समाज के भार को अपनी हार्दिक विशालता मे बाधना आपका ही कार्य था।

दिवाकर साहित्य के सुरुचिपूर्ण प्रणयन व संवर्धन में पूर्णत: आप ही की प्रति छाया परिलक्षित है। आपकी बहुत ही उच्चकोटि की साहित्यिक वृत्ति थी। नई-नई संयोजना द्वारा आप बहुत कुछ समाज को देने वाले थे।

वे आज हमारे मन-चक्षुओं अस्पनिक साहचर्य में हैं। यही उनका वैदेही रूप हमें संघ के छोटे से बड़े सभी व्यक्तियों को प्रेरणा देता रहेगा। वे एक सफल कार्यकर्ता प्रचारक, गुरुसेवी, साहित्य निर्माता तथा और भी सभी कुछ थे। यही सभी मिलकर उसके व्यक्तित्व निर्माण की अजेय गुरुता थी। श्रमण संघ के संगठन में उन्होंने अपने प्राणों को होम दिया था। अपने को क्रांतिकारी सिद्ध कर उस अमर पुरात्मा ने श्रमण संघ की सार्वभौम अखण्डता की संकल्प सिद्धि को संजोये रखा।

मैं अपने शिशुतुल्य शब्दों द्वारा मानस भू से नि:सृत गद्-गद् श्रद्धामयी श्रंजलि उस आत्मा को समर्पण करता हूँ।

:: साहित्य-सेवा ::

—— :o: ——

(ले०—श्री शान्तिलालजी रूपावत, मनासा)

उपाध्याय श्री जी स्थानकवासी समाज के आधार-स्तम्भ थे। आप हमेशा समाज की बिगड़ी हुई परिस्थितियों को सुधारने मे रहते थे।

आपका जन्म रत्नपुरी-रतलाम (मालवा) मे हुआ था। उपाध्याय श्री जी ने छोटी उम्र में आज से सैंतालीस वर्ष पहले जैन दिवाकरजी महाराज के पास दीक्षा स्वीकार की थी। आप शास्त्रों का गहन अभ्यास कर और अनुभव प्राप्त कर समाज में चमके थे।

आपने जिस वैराग्य-भावना से दीक्षा ली थी उसी वैराग्य-भावना को जीवन के अन्त समय तक निभाई।

साहित्य-सेवा—आपने अपने जीवन का उद्देश्य शिक्षा प्रचार व धर्म का बोध चतुर्विध श्री संघ को कराना बही बनाया था। आपने साहित्य-प्रेमी दिवाकरजी म० सा० द्वारा रचित सम्पूर्ण अनमोल साहित्य का संग्रह किया था। आपने भी अनेक ग्रन्थों की रचनाएँ कीं। आपकी रचनाएँ अधिकतर सत्य, अहिंसा त्याग एवं तप से प्रकाशमान हैं। जो कि जैनत्व की भावना से ओत प्रोत हैं। गुरु-सेवा और गुरु-साहित्य को सर्व-व्यापी बनाने में आपने गुरुदेव के साथ साथ जो भारत व्यापी भ्रमण किया था, उससेसमाज-पूर्ण रूप से परिचित है।

आपका मन्तव्य था कि—union is strength अर्थात् संगठन ही शक्ति है। सभी को एक भाव से तथा प्रेम से रहना चाहिये। इसी में चतुर्विध श्री संघ की शोभा है। आपका यह सार-गर्भित उपदेश था कि— man is mortal and death keeps no calender' अर्थात् मनुष्य मरण धर्मा है और मृत्यु समय की प्रतीक्षा नहीं किया करती है, इसलिये समाज में कषाय की मात्रा कम करने में ही धर्म वृद्धि रही हुई है।

आपके प्रवचनों से असंख्य नर-नारी प्रभावित होते थे और हुए थे। मन्त्र-मुग्ध होकर आपकी व्याख्यान-वाणी सुना करते थे। इससे विदित होता है कि आपकी शक्ति कितनी विशाल एवं प्रभाव युक्त थी। आप उग्रविहारी थे। संगठन के असाधारण व्याख्याता थे।

जैन-दिवाकरजी महा० सा० के साथ रह कर आपने अनेक राजा-महाराजाओं को प्रति बोधित किया था। जिनमे से उदयपुर कोटा और बुन्दी आदि के प्रसिद्ध राजा महाराजा आपके भक्त थे।

समाज का यह रत्न ऐसे समय में हमारी आखों से ओझल हुआ है, जबकि उनके सहयोग की समाज को परम आवश्यकता थी। किन्तु खेद है कि निष्ठुर काल ने ऐसे त्यागी-महात्मा को हमसे छीन लिया। उनके जैसी विभूति की क्षति पूर्ति समाज मे निकट-भविष्य में होनी असम्भव है।

२५

योग्य गुरु के योग्य शिष्य

(लेखक—एक भद्रालु)

भारत भूमि वसुन्धरा भूमि है जिसमें कई रत्न पैदा हुए हैं। उन्हीं महान आत्माओं में एक महान आत्मा उपाध्याय श्री प्यारचन्दजी म० सा० भी हुए हैं। स्थानकवासी जैन समाज एक वीर समाज है इसी समाज में स्वर्गीय पूज्य हुक्मीचन्दजी म० सा० के नाम की एक प्रसिद्ध सम्प्रदाय है, उसी सम्प्रदाय में जैन दिवाकर प्रसिद्ध वक्ता श्री चौथमलजी म० सा० थे जो प्रसिद्ध महात्मा हुए हैं।

उन्हों ने सारी उम्र भर आत्म कल्याण के साथ ही साथ लाखों भव्य जीवों को उपदेश देकर सन्मार्ग पर लगाया था, उस महान विभूति का हृदय बडा ही कोमल और सरल था, उनमे न जाति-वाद था, न सम्प्रदाय वाद था, उनके रग रग मे मनुष्य मात्र के लिये प्रेम था, चाहे कोई भी जाति का क्यों न हो सबको अहिंसा वाणी का उपदेश देते थे, उनको जैन धर्म पर अटल श्रद्धा थी और उसी अटल श्रद्धा के कारण हजारों अजैनों को जैन वनाये और लाखों मनुष्य उनके भक्त थे। भारत के प्रत्येक हिस्से में उन महान आत्मा को मानने वाले हैं।

ऐसे योग्य गुरु के शिष्य भी योग्य ही निकले। उपाध्याय-जी जैन दिवाकरजी के साथ ही रहते थे वे सदा यही कहते थे कि मुझे गुरुदेव की सेवा करने में ही वडा आनन्द आता है, जैन दिवाकरजी के साथ में रह कर समाज में कई कार्य किये हैं। चित्तौडगढ वृद्धाश्रम की जो स्थापना हुई है, उसका कारण भूत आप ही हैं। आज उसमे कई निराधार वृद्ध श्रावक लाभ ले रहे हैं। व्यावर का दिवाकर पुस्तक प्रकाशक कार्यालय है। जिसमे दिवाकरजी आदि सन्तों के व्याख्यानों का सग्रह प्रकाशित किया जाता है जिसको पढकर लाखों व्यक्ति लाभ उठा रहे हैं। कोटा राजस्थान में तीनों ही समाज का सयुक्त चातुर्मास आप ही के प्रेरणा का फल था। आपके उपदेश से धार्मिक पाठशालाएँ खुली। हजारों वालक वालिकाओं को धार्मिक शिक्षण का उपदेश देकर उन्हें सन्मार्ग पर लगाया आदि।

सादडी सम्मेलन के वाद आप काफी प्रकाश मे आये आप विचक्षण बुद्धिशाली थे, उलझी हुई गुत्थियों को पार करने में आप वडे ही कामयाब थे।

वर्षा के आपसी झगड़ों को निपटाने में बड़े चतुर थे अन्तिम चातुर्मास कर्नाटक-रायचूर शहर में था। उसमें उसके आस पास के क्षेत्रों में थोड़े ही दिनों में आप काफी प्रसिद्ध हो चुके थे उसका एक ही कारण था मीठी और सरल भाषा के द्वारा जनता के हृदय को जीत लेना। आप भी अपने गुरु के समान सुधारक विचारों के य समय सूचक थे। रूढ़ी चुस्त नहीं थे आपकी भी स्थानकवासी जैन धर्म पर अनन्य श्रद्धा थी गुरु का परिवार बड़ा था फिर भी आपमें अभिमान का कोई अंश नहीं था। आपके द्वारा अनेक काम हुए आपने स्थानकवासी जैन समाज को काफी चमकाया।

ऐसी महान् आत्मा का एकाएक स्वर्गवास हो जाने से समाज को काफी क्षति हुई है, और निकट भविष्य में उसकी पूर्ति होने की कोई सम्भावना नहीं दिखाई दे रही है। क्योंकि आज समाज में चारों ओर से फूट ही फूट नजर आ रही है। उसको एकता के डोरे में बांधने की जरूरत है। शान्ति से काम लेकर समाज को संगठित बनाया जाय इसी में सभी का हित है। तभी स्वर्गस्थ आत्मा को शान्ति मिलेगी।

:: सर्व हितकारी श्री उपाध्यायजी महा० ::

—————:o:—————

(ले०—श्रीभेरूलालजी पावेचा, रतलाम)

प्रातः वन्दनीय श्री उपाध्यायजी महा० सा० अनेकानेक गुण सम्पन्न थे। वे मधुर-भाषी थे, दीर्घ-दृष्टि वाले थे, सर्व-जनहितकारी थे, गुणज्ञ और गुणीवेत्ता थे। जो कोई भी भव्य आत्मा एक वार उनकी सत्सगति प्राप्त कर लेता, वह अपने जीवन में परम सन्तोष अनुभव करता था।

एक वार की बात है कि उपाध्यायजी महा० सा० रायचूर मे चातुर्मासार्थ विराजे हुए थे, मैं भी दर्शन सेवा की दृष्टि से

उपाध्यायजी महा० सा० के समीप कुछ दिन के लिये गया हुआ था। मैं प्रति दिन प्रातःकाल नियमित रूप से उपाध्यायजी महा० सा० के पास पहुँच जाया करता था मेरे पहुँचने का समय पांच बजे का नियमित था, यह नियमितता इतनी सुव्यवस्थित हो गई थी कि मेरे जाते ही उपाध्यायजी महा० सा० जान लेते थे कि "पांच बज गये हैं मेरूलालजी आ गये हैं।"

एक दिन की बात है कि संयोग वशात् मैं अस्वस्थ हो गया और नियमित रूप से पांच बजने के समय में आने की परम्परा में व्याघात उत्पन्न हो गया। महाराज सा को जब यह मालूम हुआ कि 'पांच बज गये हैं और "मेरूलालजी नहीं आये" तो उन्हें प्रेम स्नेहमय भावना की प्रेरणा उत्पन्न हुई वे प्रेम की साकार मूर्ति बनकर सद्‌भावना के प्रतिनिधि के रूप में वहां पधारे जहां कि मैं ठहरा हुआ था।

आते ही अमृत-वाणी में मधुर-वचन फरमाये कि 'भाई मेरूलालजी! कैसे हो।'

मैं महाराज सा० के दर्शन करते ही गद्‌गद् हो गया और प्रकृति ने मुझे उपाध्यायजी महा सा० के चरण कमलों में झुका दिया। मैं हाथ जोड़ कर बोला कि "पूज्य गुरुदेव! कुछ अस्वस्थ हो गया था।'

उपाध्यायजी म० ने फरमाया कि भायजी!' वेदनीय कर्म के उदय होने पर चिन्ता नहीं करना दया धर्म के प्रताप से सब आनन्द ही आनन्द होगा, लो मांगलिक सुनो" ऐसा निष्पक्

मन्त्र फरमाते ही मांगलिक सुनाई। प्रेमी पाठक गण !!' सर्व हित-कारी" श्री उपाध्यायजी महा० सा० के मुखारविन्द से मांगलिक सुनते ही मेरा तो सारा रोग-शोक ही नष्ट हो गया। यह है उनके सर्वहितकारित्व का ज्वलन्त उदाहरण। ऐसी अनेक घटनाएँ संग्रह की जा सकती हैं, जिनसे उपाध्यायजी महा० सा० के गुणों का चमत्कार जाना जा सकता है। मैं अपने अनुभव से कह सकता हूँ कि उपाध्यायजी महा० सा० सर्व हितकारी महात्मा पुरुष थे।

दुःख इतना सा है कि आज के सामाजिक कठिन संयोगों में उनकी उपस्थिति का अभाव है। भगवान् जिनेन्द्र देव से यही मंगलमय प्रार्थना है कि उपाध्यायजी महा० सा० की आत्मा चिर शान्ति अनुभव करे।

उपाध्यायजी महा० सा० के समीप कुछ दिन के लिये गया हुआ था। मैं प्रति दिन प्रातःकाल नियमित रूप से उपाध्यायजी महा० सा० के पास पहुँच जाया करता था मेरे पहुँचने का समय पाँच बजे का नियमित था, यह नियमितता इतनी सुव्यवस्थित हो गई थी कि मेरे आते ही उपाध्यायजी महा० सा० जान लेते थे कि "पांच बज गये हैं भेरूलालजी आ गये हैं।"

एक दिन की बात है कि संयोग वशात् मैं अस्वस्थ हो गया और नियमित रूप से पांच बजने के समय में आने की परम्परा में व्याघात उत्पन्न हो गया। महाराज सा० को जब यह मालूम हुआ कि 'पांच बज गये हैं और "भेरूलालजी नहीं आये" तो उन्हें प्रेम स्नेहमय भावना की प्रेरणा उत्पन्न हुई वे प्रेम की साकार मूर्ति बनकर सद्भावना के प्रतिनिधि के रूप में वहां पधारे जहां कि मैं ठहरा हुआ था।

आते ही अमृत-वाणी में मधुर-वचन फरमाये कि "भाई भेरूलालजी! कैसे हो।'

मैं महाराज सा० के दर्शन करते ही गद्‌गद् हो गया और प्रकृति ने मुझे उपाध्यायजी महा० सा० के चरण कमलों में लुढ़का दिया। मैं हाथ जोड़ कर बोला कि "पूज्य गुरुदेव! कुछ अस्वस्थ हो गया था।'

उपाध्यायजी म० ने फरमाया कि श्रावकजी!' वेदनीय कर्म के उदय होने पर चिन्ता नहीं करना धर्म के प्रताप से सब आनन्द ही आनन्द होगा, लो मांगलिक सुनो' ऐसा फिरमाकर

यद्यपि इस परिवर्तनशील संसार मे जिसका जन्म होता है उसका मरण भी अवश्य भावी है परन्तु जिनके ज्ञान, चरित्र, सदुपदेश हम साधारणजनों के प्रतीक बनते है, यदि वे ही अकस्मात् स्वर्गवासी हो जावें तो दुःख होना स्वाभाविक है।

पूज्य उपाध्याय श्री का जीवनवृत एक प्रकाशमान तारे के समान समुज्ज्वल था। आप संघ ऐक्य के अग्रदूत, शास्त्रज्ञ और साहित्य-सेवी थे। आपकी मार्मिक वाणी से क्षणमात्र मे ही अनेक गुत्थियों का निराकरण हो जाता था। मानव सेवा और प्राणी मात्र के उपकार के लिए आप तत्पर रहते थे।

आप गुरु श्री जैन दिवाकर चौथमलजी म० सा० के अन्यतम शिष्यों में से थे जो उनके धर्म-प्रचारक-साहित्य के प्रकाशन में पूर्ण सहयोग दिया करते थे। साधुओं व समाज के ज्ञान, दर्शन चरित्र की सम्भाल करना आदि कार्यों मे सदैव तत्पर रहते थे।

आप श्रमण संघ के उपाध्याय थे और आप मे जो ज्ञान गरिमा विद्यमान थी वह पदानुकूल थी। स्वय तो ज्ञानाराधना में तत्पर रहते थे परन्तु अन्य को भी उसी मार्ग पर लगाते थे। आपके गुणानुवाद कहां तक करें? संक्षेप मे इतना ही काफी है कि वह निर्पेक्ष ज्योति पुञ्ज थे जिसके प्रकाश मे जन-साधारण कल्याण का मार्ग खोज लेता है।

२७

उपाध्याय श्री का देहावसान

समाज को यह जानकर और मुझे यह सूचित करते हुए हार्दिक दुःख हो रहा है कि ज्ञान वृद्ध पूज्य उपाध्याय श्री प्यारचन्दजी महाराज सा० का ता० ८-१-६० को गजेन्द्रगढ़ (दक्षिण भारत) में अकस्मात् देहावसान हो गया है। आपका विहार एवं धर्मोपदेश दक्षिण की ओर हो रहा था एवं अभी जो इलकल आदि में धर्म प्रचार के समाचार प्राप्त हुए थे वे "जैन प्रकाश" के गत अंक में प्रकाशित हो चुके हैं।

यद्यपि इस परिवर्तनशील ससार मे जिसका जन्म होता है उसका मरण भी अवश्य भावी है परन्तु जिनके ज्ञान, चरित्र, सदुपदेश हम साधारणजनों के प्रतीक बनते हैं, यदि वे ही अकस्मात् स्वर्गवासी हो जावें तो दु ख होना स्वाभाविक है।

पूज्य उपाध्याय श्री का जीवनवृत एक प्रकाशमान तारे के समान समुज्जवल था। आप सघ ऐक्य के अग्रदूत, शास्त्रज्ञ और साहित्य-सेवी थे। आपकी मार्मिक वाणी से क्षणमात्र मे ही अनेक गुत्थियों का निराकरण हो जाता था। मानव सेवा और प्राणी मात्र के उपकार के लिए आप तत्पर रहते थे।

आप गुरु श्री जैन दिवाकर चौथमलजी म० सा० के अन्यतम शिष्यों में से थे जो उनके धर्म-प्रचारक साहित्य के प्रकाशन में पूर्ण सहयोग दिया करते थे। साधुओं व समाज के ज्ञान, दर्शन चरित्र की सम्भाल करना आदि कार्यों मे सदैव तत्पर रहते थे।

आप श्रमण संघ के उपाध्याय थे और आप में जो ज्ञान गरिमा विद्यमान थी वह पदानुकूल थी। स्वय तो ज्ञानाराधना में तत्पर रहते थे परन्तु अन्य को भी उसी मार्ग पर लगाते थे। आपके गुणानुवाद कहां तक करें? सक्षेप मे इतना ही काफी है कि वह निर्पेक्ष ज्योति पुञ्ज थे जिसके प्रकाश में जन साधारण कल्याण का मार्ग खोज लेता है।

आपके निधन से जो क्षति हुई है उसकी पूर्ति असम्भव है। अभी समाज को आपके नेतृत्व और मार्गदर्शन की आवश्यकता थी परन्तु अब यह सब अतीत की बात हो चुकी है।

अन्त में हम शासनदेव से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को शान्ति प्राप्त हो और अनुक्रम से शाश्वतिक सुख के धाम मोक्ष को प्राप्त करें।

जैन प्रकाश
ता० २२-१-६० } { श्रीदेव—नई दिल्ली

:: श्रद्धाञ्जली ::

—————:o:—————

(ले०:-प्रान्त मंत्री पं० र० श्री पन्नालालजी म० साहब)

अनादि काल से पुण्य सलिता गगा सिन्धु के जल से सिंचित ऋषि मुनियों की तपो भूमी आर्यावर्त मे उदित जैन साहित्य सुधाकर अखिल विश्व मे अपनी शीतल शुभ्र चन्द्रिका छिटकता आरहा है। इसकी शाति और अहिंसा प्रदायन्ति मृदुल रश्मियां सुदूर अन्य देशों की असभ्य जातियों में भी उज्ज्वल प्रकाश विकीर्ण करके उन्हें जागृत करती है। उसी साहित्य में उच्चादर्श भावों का

कलुषोत्पन्न कर दोषों एवं कुरीतियों का निवारण कर अपनी मर्यादा की रक्षा करने हेतु श्रद्धेय श्री प्यारचन्दजी म० सा० तल्लीन रहा करते थे। निष्पक्षता आलोच्य विषय में पूर्ण पाण्डित्य आदि साहित्यिक गुणों का आप में पूर्ण समावेश था। जैन साहित्य की विशेषतायें तथा आध्यात्मिकता जीव मात्र से प्रेम प्यार त्याग अहिंसा सादा जीवन सदाचार और आशा-वाद आदि विशेषताओं में आप पूर्ण पारंगत थे।

आप श्री दिवाकरजी म० सा० के प्रमुख शिष्यों में से अन्यतम शिष्य थे। गुरु शिष्य की प्रतिष्ठित परम्परा के आप सुमेरु थे। गुरु के प्रति विनय भक्ति, सेवा और श्रद्धा आदि भावों का आपके अन्तः स्थल में पूर्ण सामंजस्य था।

मानव से प्यार और सेवा करना ही जीवन की सर्वोत्तम सम्पत्ति है। जो व्यक्ति ऐसा करता है सफलता सदैव उसके चरण चूमा करती है। इसके दुस्सह तेज के सामने अन्य तेज निस्तेज पड़ जाते हैं। संगठन के तत्त्व यथा सत्य अहिंसा मानव सम्मान नम्रता निर्लोभता कर्त्तव्य परायणता सत्संग और त्याग सम्भावना आदि अद्वितीय गुणों की आप साक्षात् मूर्ति थे।

उपाध्याय श्री प्यारचन्दजी म० सा० को नजदीक से परखने का अवसर अनेकों बार समुपस्थित हुआ है, और हुआ है उनसे विचारों का आदान प्रदान। आपको संकीर्णता ने तो छुआ तक भी नहीं था आपका हृदय विशाल था ज्ञान के भंडार थे फिर भी प्रत्येक के मनोभावों को पूर्ण स्थान देते थे वह क्षमता मुझे आपही में देखने को मिली है।

स्थानकवासी समाज को एक सूत्र में देखने की आपकी प्रबल अभिलाषा थी तथा इसकी पूर्ति हेतु सदैव प्रयत्न शील रहे, "कार्य साधयामि या देह पात यामि" के अनुसार आखिर आपकी अभिलाषा साकार होकर ही रही। सादड़ी में निर्मित श्रमण सघ के संघैक्य में आपका महत्त्व पूर्ण योग रहा है। जब कभी भी सगठन में विक्षेपका वातावरण बनता तो आपका हृदय तिलमिला उठता और उसके निराकरण हेतु आपका पूर्ण योग समाज को समुपलब्ध होता था।

समाज के हेतु जीवन समर्पण करने वाले ऐसे अदम्य उत्साही योगी के प्रति श्रद्धाञ्जली समर्पण करते हुये मुझे परम आनन्द का अनुभव होता है।

गुलाबपुरा } { ता०४-१०-६०

. मेरी दृष्टि :

(ले०—व्याख्यान वाचस्पति (प्र म) श्री मदनलालजी म)

श्रमण संघ के निर्माण में जिन महा शक्तियों का योग रहा है उपाध्याय श्री प्यारचन्दजी महाराज भी उनमें से एक थे। उनकी अपनी एक खास विशेषता यह थी कि वे मुनि मण्डल में आचार और प्रचार का सामञ्जस्य देखना चाहते थे। सन्त परम्परा दीप की तरह स्व-पर प्रकाशक रही है। आचार से न रहने से या शिथिल हो जाने से उसकी स्व प्रकाशकता लुप्त हो जाती है तथा इसी

प्रकार प्रचार पद्धति की सुव्यवस्था के बिना उसकी पर प्रकाशकता का रूप मिट जाता है। अतः इस द्विरूपता को बनाए रखने के लिए आचार और प्रचार दोनों को प्रोत्साहन मिले ये उनकी दृष्टि थी। वैसे मैं उनके अधिक निकट सम्पर्क में कभी खुल कर नहीं रह पाया हूँ फिर भी उनकी आचार दृढ़ता तथा प्रचार क्षमता से परिचित रहा हूँ। श्रद्धेय चौथमलजी म० के चरण चिन्हों पर चलते हुए उनकी प्रचार पद्धति को भी उन्होंने कायम रक्खा ये मुझे सुविदित है। साथ ही श्रमण सघ मे प्रविष्ट होते हुए शिथिलाचार की ओर जागरुक दृष्टि रखते हुए मुझे मेरे प्रधान-मन्त्रित्व-काल में उन्होंने जो अमूल्य सकेत दिए उनसे मुझे ये श्रद्धा करने का मौका भी मिला कि वे खाली प्रचार की आधी मे साध्वाचार को उड़ा देने के हक में बिल्कुल नहीं थे। कितना अच्छा होता कि श्रमण संघ उनके इस विचार को मूर्त रूप दे पाता। आज हम गत के लिए तो चिन्ता करते हैं, श्रद्धाएँ अर्पित करते हैं पर समागत तथा अनागत की बुरी तरह उपेक्षा करते हैं। उनके स्मृति-ग्रन्थ या अभिनन्दन ग्रन्थ का यही अर्थ होना चाहिये कि हम उनके विचार को आगे बढ़ा सकें अन्यथा ये सब नए युग की नए प्रकार की रुढ़ि मात्र प्रमाणित होंगी। उनके प्रति अर्पित की जाने वाली श्रद्धाञ्जलि के उपलक्ष्य में मैं तो यही विचार समाज को दूगा कि प्रचार के प्रवाह में आचार को न बहा कर आचार की शक्ति से प्रचार को शक्तिमान् बनाया जाए।

"मदन मुनि"

MESSAGE

It was a matter of great privilege that I had an opportunity of taking the Darshan of His Holiness 1008 Sri Sri Pyarachandji Maharaj at Ilkal, Bijapur District. His Holiness was a "Bala Brahmachari". He was a great Saint having renounced all the wordly pleasures to attain the spiritual heights. He was a learned scholar and a renowned orator. His personality had a divine touch in it. India's greatness lies in having such holy Saints leading a life of utter renunciation and selflessness propagating the tenets of Ahimsa (non-violence), Satya (truth), Achaurya (non-stealing), Brahmacharya (celebacy) and Aparigraha (non-attachment). Their message was a message of peace, perseverance and patience. These are the cardial virtues which help huminity to attain Godhood.

I an very happy to learn that the disciples of this great Acharya who attained his salvation at Gajendraghad have thought of erecting a memorial to perpetuate this

३१

" मैसूर विधान सभा के स्पीकर "

(श्री० एस० आर० कंठी की श्रद्धांजलि)

पूज्य उपाध्यायश्री महाराज सा० के चरण-कमलों में अनेकानेक बड़े २ व्यक्ति आया करते थे। उन्हीं में से कर्नाटक प्रान्त के एक महानुभाव श्रीमान् एस० आर० कंठी साहब बी० एस० एस०, बी० स्पीकर विधान सभा मैसूर इलकल (जिला बीजापुर) में श्री उपाध्यायश्री महा० सा० के दर्शनार्थ एवं तत्त्व जिज्ञासा की पूर्ति हेतु पधारे थे। उन पर इस ज्ञानमूर्ति का जो प्रभाव पड़ा, वह उन्हीं के शब्दों में यहाँ पर निम्न प्रकार से प्रकट किया जा रहा है।

—सम्पादक

MESSAGE

It was a matter of great privilege that I had an opportunity of taking the Darshan of His Holiness 1008 Sri Sri Pyarachandji Maharaj at Ilkal, Bijapur District. His Holiness was a "Bala Brahmachari". He was a great Saint having renounced all the wordly pleasures to attain the spiritual heights. He was a learned scholar and a renowned orator. His personality had a divine touch in it. India's greatness lies in having such holy Saints leading a life of utter renunciation and selflessness propagating the tenets of Ahimsa (non-violence), Satya (truth), Achaurya (non-stealing), Brahmacharya (celebacy) and Aparigraha (non-attachment). Their message was a message of peace, perseverance and patience. These are the cardial virtues which help huminity to attain Godhood.

I an very happy to learn that the disciples of this great Acharya who attained his salvation at Gajendraghad have thought of erecting a memorial to perpetuate this

Saint's memory It is but proper that Sri Jaina Navayuvaka Mandal Ilkal are publishing the life and works of this great Acharya in Hindi. I hope a Kannada translation of it will be published for the use of the Kannadigas in due course. May His Holiness Sri Pyarchandji Maharaj bless the universe with the message of peace.

S. R. Kanthi
Speaker
Mysore Legislative Assembly

:: पावन स्मरण ::

समय समय पर संसार में सन्तों का अवतार न होता तो इस संसार की क्या दशा होती? भूले-भटके लोगों को कौन सन्मार्ग दिखलाता? किससे नीति और धर्म की प्रेरणा मिलती? विविध प्रकार की विकराल वेदनाओं से छटपटाते विश्व को कौन असली सुख की राह बतलाता?

हे सन्त पुरुष! तुम्हें कोटि कोटि प्रणाम हैं। तू धन्य है, कृतार्थ है। तेरा जीवन मरुस्थली में कल्पवृक्ष के समान है।

श्रमण संघ के समर्थ स्तम्भ और कुशल शिल्पी उपाध्याय पण्डितरत्न मुनिश्री प्यारचन्दजी महाराज की पवित्र स्मृति आज अनायास ही उल्लिखित भावनाएं उत्पन्न कर देती हैं। आपका जीवन अपने समय के समाज और सन्त समुदाय के लिए महान् आदर्श के रूप में रहा और रहेगा।

स्वर्गीय उपाध्यायजी महाराज ने दीर्घकाल पर्यन्त संयममय जीवन यापन किया। इस काल में आपने आत्मकल्याण तो किया ही परन्तु संघ एवं समाज के कल्याण में भी कुछ कसर नहीं रक्खी। जिनशासन का उद्योत करने के लिए आप सदैव उद्यत रहे और अनेक प्रकार के प्रयत्नों तथा आयोजनों द्वारा धर्म की महिमा का विस्तार करते रहे। संघ और शासन की सेवा आपके जीवन का एक प्रधान ध्येय रहा और इसी माध्यम से आपने अपनी आत्मा का निःश्रेयससाधन किया।

उपाध्यायजी महाराज की जिनागम सम्बन्धी श्रद्धा, भक्ति और अनुरक्ति अगाध थी। आप प्रकाण्ड विद्वान् थे। सिद्धहस्त लेखक थे। स्थानकवासी समाज की साहित्यिक समृद्धि की वृद्धि में आपका प्रमुख हाथ रहा है। आपके द्वारा लिखित एव सम्पादित अनेक जनसाधारणोपयोगी ग्रन्थ आपकी सहृदयता, रचना-कौशल एवं विद्वत्ता के तथा जिनशासन की प्रभावना के प्रति गहरी लगन और निष्ठा के सूत्रक हैं। युग युग तक वे आपकी कीर्ति को अक्षुण्य बनाये रक्खेंगे।

विश्ववल्लभ जैन दिवाकर प्रातःस्मरणीय श्री चौथमलजी महाराज के आप प्रधान और ज्येष्ठ शिष्य थे। आपकी गुरुभक्ति इस युग के सन्त समूह के समक्ष एक महान् आदर्श उपस्थित करने वाली है।

सघ सघठन और सघैक्य के आप प्रबलतम समर्थक थे। श्रमणसघ की स्थापना के लिए किये गये आपके पुनीत प्रयास जैन इतिहास में सदैव स्मरणीय रहेंगे।

उपाध्यायजी महाराज का समग्र जीवन और व्यक्तित्व असाधारण रहा। साथी सन्तों के प्रति आपके सद्व्यवहार की कहा तक सराहना की जाय? आपकी गुरुभक्ति, पर्याय-ज्येष्ठ सन्तों के प्रति आपका विनयभाव और छोटे सन्तों के प्रति स्नेह-भाव अनुपम थे। यही कारण है कि आज सबके आधारभूत माने जाते रहे। सभी की दृष्टि आप पर ही लगी रहती थी।

उपाध्यायजी महाराज के स्वर्गवास से श्रमणसंघ रूपी हार का एक बहुमूल्य चमकता हुआ हीरा ही जैसे खिर गया। काश! आप आज हमारे मध्य होते तो संभवतः श्रमणसंघ की स्थिति कुछ और ही प्रकार की होती।

अन्त में, उपाध्याय श्रीजी के विराट् और पावन व्यक्तित्व को मैं अपनी हार्दिक श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता हूँ।

देवराज सुराणा   अभयराज नाहर
अध्यक्ष   मन्त्री
श्री जैन दिवाकर दिव्य ज्योति कार्यालय ब्यावर

:: श्रद्धाञ्जली ::

—:o:—

(ले०:-श्री० जे० एम० कोठारी)

तुम थे महान् !

तुम परम पूज्य, तुम गुण निधान,
सब कार्य तुम्हारे मन-भावन।
पद-चिह्न बने थे अति पावन,
नाम प्यारचन्द था सार्थक।
कैसे गाऊँ तव गुण-गान ॥ तुम थे····॥

२

जीवन में जागृति को भरने,
सारे जग को ज्योतित करने।
सत्य अहिंसा का महा-मत्र,
था हमे तुम्हारा महादान ॥ तुम थे····॥

३

ओ! श्रमण सघ के उपाध्याय,
त्यागी औ, पडित महान्।
आंखों के खारे पानी से,
मैं देता तुमको अश्रुदान ॥ तुम थे····॥

***

उपाध्याय श्री प्यारचन्दजी महा० सा० के प्रति

(.. श्रद्धाञ्जली ..)

(ले०—प्रसिद्ध वक्ता पं० रत्न श्री सौभाग्यमलजी म० सा०)

(तर्ज राधेश्याम)

प्यार प्यार से सग बीता था
प्यार प्यार बरसाते थे।
प्यार प्यार का प्याला पीकर
सबको प्यार पीलाते थे ॥ १ ॥

प्यार लिया था दिवाकर से
दिव्य जगति में प्यार भरा।
अरे प्यार! क्यू छोड़ सिधाये,
हिंस तू ने गजब करा ॥ २ ॥

आओ प्यारे प्यार हमारे
संघ कभी सुरमाती है।

चमन सूखता जाता है,
क्या तर्स तुम्हें नहीं आतो है ॥ ३ ॥

सौरभ अपना फैला देना,
भाग्यवान् बन जावेंगे ।
सब बगीचा हरा भरा,
हम देख देख सुख पावेंगे ॥ ४ ॥

भाद्वा वदी १२
शुक्रवार

जैन-भवन
इन्दौर

३५

:: सफल जीवन .:

(ले०:—काव्यतीर्थ साहित्यरत्न मुनि श्री लालचन्दजी महा श्रमणलाल)

छोड़ चले तुम गढ़ गजेन्द्र में सहचारी निज मुनिपरिवार,
बहुत वर्षे निभाया तुमने अपने मन को अर्थ विचार।
बन साहित्य प्रेमि, और गणिवर उपाध्याय सहमंत्री चार,
रहे बदलते पद यद्यपि पर रखा एकसा सब पर प्यार।
जिनका जैन दिवाकर जी था पर शीतलता का था आगार,
श्रमण संघ के श्री उपाध्याय तुम कहां गये कुछ करो उचार ॥ १ ॥

हस्ती तुम्हारी किंचित भी भले समझ सका नहिं कोइ,
करते रहे कई तरह की प्रकृति के जन इच्छित गोइ।
किन्तु समय जानकर तुमने सदा रखा सीधा व्यवहार
करते रहे वैमनस्य निवारण शांति संगठनका उपचार।
ऐसा अनुभव मुझे न यद्यपि किन्तु उपाचार्य श्री के उद्गार,
बता रहे हैं श्रमण संघ के स्वयं आप थे दृढ़ आधार ॥२॥

भुजा एक टूट गई मेरी बोले श्रीमद्गण के ईश,
मेरा साथी मुझे छोडकर आज हो गया है अद्रीश।
सहनशीलता, कार्यदक्षता संगठनप्रियतादि अनेक,
गुण प्रशंसा उदयपुरके सुनी सबने सहित विवेक।
इससे अधिक सफल जीवनकी क्या परिभाषा हो अय प्यार,
जगह जगह से शोक सभाके समाचार छापे अखबार ॥३॥

उसके अनुयायी मुनियों में कई सफल उपदेशक और,
कवि व्याख्यानी तथा तपस्वी ख्यातिप्राप्त जो चारों ओर।
फिर भी छत्रके उठनेसे तो अवश्य लगा होगा आघात,
किन्तु काल बलवान् सभी से करताही आया उत्पात।
बस कर्तव्य एक रह जाता उनके जो गुण बिन आधार,
हुए उन्हें अपना यदि लें तो 'श्रमण लाल' जग सौख्य अपार ॥४॥

लो ! श्रद्धा के दो पुष्प

(प्रस्तोता—पं० रत्न मुनि श्री प्रतापमलजी महा० सा०)

व्यारपमन्त्र उपाध्याय पद को नमन करें शत बार
कैसी महिमा अपरंपार ।
महान् पुरुषों की स्तुति करके पाओ भव का पार,
कैसी.............. ॥ टेर ॥

जन्म ओस-वंश में आके
रत्नपुरी में जन्म जो पाके ।
यौवन-वय में वैराग्य पाके
सत् गुरु के समीप में आके ॥
प्रगट किये उद्गार अपने "कर दो बेड़ा पार" ॥१॥ कैसी—

दिवाकर गुरु से दीक्षा धारी
ममता मारी समता धारी ।
ज्ञान-गंगा की धारा प्यारी
फैल गई जीवन में सारे ॥
उपाध्याय, मन्त्री पद दिया आपका मिल सकल सरदार ॥२॥ कैसी—

जैन शासन की सेवा बजाई,
वह न जावे कभी भुलाई ।
नूतन साहित्य का सृजन करके,
जैन समाज को ज्ञान से भर के ॥
सेवा अमर इतिहास में तेरी, कहते हैं नर नार ॥३॥ फैली ...

श्रमण-संघ के थे प्यारे,
भेद भाव को मिटा के सारे ।
संगठन-सदन में सबको पुकारे,
गले मिले सब प्यारे प्यारे ॥
सलाह तेरी शिक्षाप्रद रही और गुणकार ॥४॥ फैली ...

आज कहां छोड़ गये प्यारे ?
उपाध्याय पद खाली है प्यारे ।
समाज अब किसको पुकारे ?
कौन करेगा पूर्ति इस बारे ?
'अनाथ मुनि' तव युगल चरण को, वन्दन शत शत बार ॥५॥ फैली ...

३७

:: उपाध्याय गीत ::

(लेखक—श्री केवलचन्दजी महा० सा० साहित्य-रत्न)

उपाध्याय पंडित थे गंभीर थे,
सबसे मिलन सार मतिमान थे।
वर्धमान संघ में थे वे एक कड़ी
उन्हें संघ से प्रेम था हर घड़ी॥
पिरोना थे चाहते थे मोती लड़ी,
अभी आवश्यकता थी उनकी बड़ी।
श्रमण संघ की नैया मझधार है,
घिरा चौतरफ इसके अंधकार है॥
सुना आज उपाध्याय सुरपुर गये
श्रमण संघ के एक स्तंभ गिर गये।
एक अच्छे विलक्षण गुणी ना रहे,
नयन से दो आंसू टपक ही गये॥

★★★

मार्मिक-वेदना

———:o:———

(ले.-मरुधर केशरी पं. रत्न मंत्री मुनि श्री मिश्रीमलजी म.सा.)

"जैन तरुण" से तीव्र वेदना, सूचक कानों खबर परी।
गद् गद् हो गया हृदय हमारा, और अश्रुन की लगी झरी॥
उपाध्याय श्री "प्यारचन्द" की, श्रमण-संघ में कसर परी।
अरे! दुष्ट वैताल काल!! तू, बड़ी दिखाई विपद घरी॥१॥

कैसा सन्त विचक्षण नामी, दूर-दर्शी को उठा लिया।
सदय-हृदय शुभ-भक्त जनों का, तू ने जिगर जलाय दिया॥
जैन-दिवाकर संघ सरोवर, सरस कमल मुरझाय दिया।
इसके पहले तूने पापी! क्यों न जहर का घूंट लिया॥२॥

कुछ दिनों के पहले तू ने, सहस्र-मुनि पर वार किया।
तदपि तृप्त हुआ नहीं जालिम! और चुरा के रत्न लिया॥
श्रमण-संघ ने अरे! हन्त!! हा!!! क्या तेरा नुक्सान किया।
जिसकी बदौलत आये दिन तू! व्यथा देत है कठिन हिया॥३॥

संवत सोलह दोय सहस्र पर, पौष शुक्ल ग्यारस धोरी।
स्वर्ग-गमन 'गजेन्द्रगढ़' में "श्रीमद् प्यार", किन्हो होरी ॥
शिष्य-वर्ग मुनि सम्प्रदाय की भार छोर किस पर भोरी।
अकस्मात् कर गये कहा तुम! सजन हृदय भरकी होरी ॥४॥

अरे! गये कहाँ साहित्य-प्रेमी! न्याय-निपुण हम कैसे?
ऐसा एक व्याप्त रहा नहीं, तेरी कमी पूरे कैसे?
श्रद्धांजलि सौंपकर करे आत्म तुम्हारी सुशीतल है।
वीर-कृपा से शिष्य-वर्ग भी, तेरे पथ पर अटल रहे ॥५॥

परम-प्यार की महिमा

(रच०—मुनि श्री गजेन्द्र—कनकपुर)

उज्ज्वल करण स्व-जीवन गहन ज्ञान में ध्यान लगाते थे ।
पा कर उत्तम तत्त्व सोई जनता को आप जगाते थे ॥
ध्यान धरोहर द्वय उत्तर तारण हार भेद बतलाते थे ।
यथा बोध शोध साधन सुखकारी सानन्द फरमाते थे ॥१॥
श्री वीर प्रभु का सदेश सुधाकर अनहद प्रचार किया ।
प्याला भरभर शुद्ध-भाव का त्रासित नर को पा दिया ॥
रस अपूर्व टपकता तुम वाणी मे गुणी जनों ने जान लिया ।
चद्र चमकता केवल नभ में, भव्यन के भानु हो हुलसत हिया ॥२॥
दया सिन्धु गुण-रत्नाकर दयाधर्म को खूब दिपाया था ।
जीवन भर अविराम सघ-सगठन मे मन लगाया था ॥
मध्य मालवा मेवाड़ भूमि महाराष्ट्र में नाम कमाया था ।
हाड़ोती पावन कर करणाटक ओर पैर बढाया था ॥३॥
राही प्यार को आय अचानक क्रूर काल ने मारा झटका ।
जन समूह गुरुवर को याद करते नैनों से नीर टपका ॥
की नी जुदाई तब से मुनिवर अब हमको आता है भटका ।
जग मग रत्न महल मे राजे, अपने साथी को छटका ॥४॥
यश गुरु गुण मणि माला, हरदम कंठ बिच धारेगा ।

गुरु-गुण-गान

(रचयिता—स्वर्गीय उपाध्यायजी महा० के शिष्य-गण)

(तर्ज—यह गढ़ चित्तौड़ की कथा सुनो नर-नारी—छोटी काशी)

श्री उपाध्याय मुनि प्यारचन्दजी गुण धारी
गुरुदेव की सेवा करके आत्मा तारी।
सुनगर रतलाम में जन्म है पाया
पिता श्री पूनमचन्दजी बोथरा कहाया।
कुछ बड़े हुए वैराग्य हृदय में आया
श्री चौथमलजी महाराज को गुरु बनाया।
सन् सित्तर—(६६) के साल में चित्तौड़ में दीक्षा धारी॥ १॥

संयम लेकर के करने लगे पढ़ाई
संस्कृत प्राकृत से प्रीत बढ़ाई।
गुरु-भक्ति में तन-मन से लगन लगाई
वर्षों तक निशदिन रहे गुरु-संग मांहि।
सेवा की बड़ाई करे सभी नर नारी॥ २॥

वर्धमान सघ के लिये प्रयत्न बहुत कीना,
पदवियां त्याग कर सुयश जग में लीना।
सबने मिल कर उपाध्याय पद दीना,
सघ की कठी के आप थे एक नगीना।
साहित्य-सेवा भी करी आपने भारी ॥ ३ ॥

सघ के आग्रह से रायचूर में आया,
अंतिम चौमासा रायचूर में ठाया।
वहां से विहार कर गजेन्द्रगढ़ में आया,
एक दिन बिमार रहकर के स्वर्ग सिधाया।
मुनि 'मन्ना' 'पन्ना' 'गणेश' 'उदय' यश गाया,
ऐसे पुरुषों की लाख लाख बलिहारी ॥

४१

श्री प्यारचन्दजी महा० सा० की स्मृति

(रचयिता—श्री चन्दनमलजी महा०—सिद्धान्त-प्रभाक

(भजन तर्ज—गावो गावो ए सखु ! मेरे रहो खुशी के सा

गावो गावो श्री उपाध्याय सब मिलकर गुण-गान ॥ टेर ।
मालव-भूमि रतलाम में जन्म लिया हितकारी ।
चित्तौड़ वीर भूमि में दीक्षित होकर आत्मा तारी ॥१॥
बहु-जन मनमें निवास किया था प्यारचन्दजी स्वामी ॥
दीर्घ अनुभवी महान् आत्मा की पड़ी बहुत ही खामी ॥२॥
उपाचार्यजी के मुख्य थे उपाध्याय सह मन्त्री ॥
हम कहाँ जावें ? किसे पुकारें ? कौन संभाले तन्त्री ? ॥३॥
अनेक विवाद, म्लानि विच्छेद की समस्या बड़ी है भारी ।
विकट समय में तुमने भी स्वर्ग-जाने की धारी ॥४॥
प्यारे प्यारचन्दजी थे, जैन-दिवाकर तुमको ॥
प्रिय प्यारे हो सब जीवों को छोड़ गये तुमको हमको ॥५॥
हे काल ! कुटिल हत्यारे ! तुमको जरा दया नहीं आती ।
त्यागी वैरागी संत गुण रागी को भी पकड़ ले जाती ॥६॥
शोक-समाचार आये तार से दिल का तार कंपाया ।
"चन्दन" भू मंडल कम्पा; जन जन का मन घबराया ॥७॥

जीवन-संगीत

—— :o: ——

(रचयिताः—श्री उदय मुनिजी महा० सा० सिद्धान्त-शास्त्री)

(तर्जः—धूसो बाजेरे ...... अथवा—मोहन गारो रे ......)

पर उपकारी रे-पर उपकारी रे-गुरुदेव प्यारचन्द थे गुण धारी रे।।ध्रुव।

मध्य प्रदेश के रतनपुरी मे,
पुनमचन्द घर जाये रे।
मानवती के नन्दन लाडले,
बोथरा वश दिपाये रे ।। १ ।। पर उप ''

उगुणी सौ बावन में जन्में
उन्नसत्तर में महाव्रत धारे रे।
जैन दिवाकर चौथमलजी के,
पट शिष्य प्यारे रे ।। २ ।। पर उप ''

मदसौर शहर के माहि,
आप गणी पद पाये रे।
बड़ी सादड़ी में सघ ने मिल,
उपाध्याय बनाये रे ।। ३ ।। पर उप ...

मैं आया था शरण आपके,
सहस्र दोय आठ मांहि रे।
अक्षय तृतीया को दीक्षा देकर,
शरण लिया मुझ तांहि रे ॥ ४ ॥ पर उप…
ज्ञान ध्यान कइयों को सिखाया,
आत्म तारण के कारण रे।
कई ग्रंथ संपादन करके,
धर्म-प्रचार बढ़ाया रे ॥ ५ ॥ पर उप…
सबके हृदय को जीत लिया था,
आपसी भेद मिटाया रे।
जैनी व जैनेतर के मन में,
धर्म प्रेम बढ़ाया रे ॥ ६ ॥ पर उप…
मारवाड़ सादड़ी में श्रमण संघ ने
सह-मंत्री बनाये रे।
भीनासर के सम्मेलन में
उपाध्याय पद पाये रे ॥ ७ ॥ पर उप…
सहस्र दोय सोला में रायपुर,
अन्तिम हुआ चौमासा रे।
गजेन्द्रगढ़ पोष सुद तेरस को
संथारा सिकसा रे ॥ ८ ॥ पर उप…
उदय मुनि है शिष्य में प्यारा
ज्ञान दे मुझे उबारा रे।
पांचों मुनि हम सेवा में थे
छोड़ आप सिधारा रे ॥ ९ ॥ पर उप…

***

:: उपाध्याय-गुणवान् ::

---:o:---

(ले०—पं० मुनि श्री प्रतापमलजी म० के शिष्य श्री राजेन्द्र मुनिजी सि० शास्त्री, सं० कोविद)

जिनके दर्शन थे महान् उपाध्याय गुणवान् ।
क्षमा की मूर्ति थी प्यारे मुनिवर ॥ टेर ॥
भव्य-भाल पर शील चमकता ।
चम चम चेहरे पर त्याग दमकता ॥
वाणी में अमृत सी शान, मधुर मीठी मुसकान ॥ १ ॥

दिवाकर गुरु के आप प्यारे ।
जैन समाज के आप सितारे ॥
तेरी अनोखी थी आन, कैसे करुँ मैं बखान ॥ २ ॥

उपाध्याय पद पर "प्यार" विराजे ।
साहित्य मन्त्री पद तब नामे भाजे ॥
काम करते थे सुजान, सलाह देते थे महान् ॥ ३ ॥

सुमधुर साहित्य-सेवा अमर आज है ।
शत शत मुख से कहती समाज है ॥
गाया जाता है इन्सान, अमर रहता यश गान ॥ ४ ॥

धन्य धन्य है स्वामी आप को ।
मिटाया भव भव के ताप को ॥
धन्य तेरा अवतार राजेन्द्र करे नमस्कार ॥ ५ ॥

हुतात्मा-"प्यार"

(आधुनिक-स्वर-लहरी-अतुकान्त)

——————:o:——————

(ले०-श्री मोहनलालजी महा० के सुशिष्य मुनि श्री पार्श्व कुमारजी महा० सं० वि०)

श्रमण सघ के एक्य लाभ हेतु,
हुतात्मा प्यार ने,
"दिवाकर" पथ वेदी पर,
अदम्य सकल्प का अनुपम सबल ले,
काल को दिया हसते हंसते अपने प्राणों का आहुति दान,
चकित था काल भी इस पुरुपार्थी मानव पर,
सहमता सा चला गया,
हिमालय सा महारथी,
जिधर भी मोड लेता,

प्रेम की शान्त लहरी में जब मन झूम जाते,
मन का कच्चा दीवाल टूट जाता,
उनके मृदुत्व की महानता निहित थी
छोटे से पुष्ट व्यक्तित्व में,
उनकी समय दर्शी कुरेद में,
वात्सल्य अणु,
इकाई को वितंडा वाद की बाढ़ से अछूता रखा,
जो था अर्ध मान्य
पर पलक में मसकते हस्याती हाथों से विघटक घटना की,
उनकी लपेट से परे हो गया,
ऐसे-उनके श्री चरणों में भाव भीनी श्रद्धांजलि अर्पित है।

उपाध्याय--गुणाष्टक

——— :o: ———

(रचयिता–मुनि श्री प्रतापमलजी महा० सा० के शिष्य मुनि रमेशजी महा० "रत्न")

(१)

गुरु भक्ति में मग्न लग्न-संलग्न सदा आप।
दिवाकर गुरु को पाके, मिटा दिया भव ताप॥

(२)

त्यागी अरु ज्ञानी गुरुवर, सयमी गुण की खान थे,
जड़ चेतन का भेद बताते, अमूल्य देते ज्ञान थे।
ज्ञानी सदा निज इन्द्रियों को, वश करते थे सर्वथा,
पाल्यो शुद्ध ब्रह्मचर्य त्याग्यो विपवत् भोग तथा।

(३)

कछुए सम गोपन किया, मन वच काया के योग को,
दमन किया आत्म-घातक पातक कषाय के वेग को।
पच महाव्रत धारी, अष्टमाता के आराधक थे,
सग्रह करते थे ज्ञान-निधि को विनय के साधक थे।

(४)

मित-मिष्ट-भाषी रोष मारी बोध देते थे सदा,
मोक्ष का मार्ग बताते और स्वर्ग सदन का सदा।
संत-समाज की सेवा ही तब जीवन का भूषण था
हंस सम अपना गुणों को तज दीना सब दूषण था।

(५)

तर गये सब वाणी सुन अनेक पापी पतित भी,
इसमें नहीं सन्देह किंचित् देखलो भवीश भी।
संसार घटे पाप कटे ताप मटे सीख तब सेवता
सचमुच ही अप-वर्ग का वास मिले गुण तब सेवता।

(६)

गंभीर गुरु की खान और भव्यों के आधार थे
अनाथों को सनाथ करते मूर्खों की पतवार थे।
दीन दुखित को शरण देते हरण करते पीर को
दीपा गये जिन शासन को धन्य! धन्य!! गुरु वीर को।

(७)

अहिंसा के आराधक तुम थे नाथ! मैं तुम को नमूं,
सत्य के साधक आप रहे, नाथ! मैं तुमको नमूं।
अस्तेय के पालक पूरे नाथ! मैं तुमको नमूं,
शील के शुभ्र गार तुम थे नाथ! मैं तुमको नमूं।

(८)

मानकंवरी माता की कुक्षि में लीना सफल अवतार,
श्री पूनमचंद के पुत्र तुम कर गये खेवा पार।

***

:: उपाध्याय-गुण-गान ::

———— :o: ————

(स्वर्गीय मन्त्री मुनि श्री सहस्रमलजी महा० सा० के शिष्य श्री रंग मुनिजी महा० द्वारा रचित)

संयम-पथ के सच्चे राही, प्यारचन्दजी अणगार,
धन्य है धन्य तेरा अवतार।
अक्षय गुण भण्डार आप थे श्रमण संघ के द्वार ॥ टेर ॥

माता-भ्राता के मन भाया पूनम का तू नन्द कहाया।
उन्नीसौ बावन जब आया, जन्म बोथरा वंश में पाया।
रतलाम नगर में जन्मे, नाम दिया था प्यार ॥१॥ धन्य है ॥

उम्र सप्तदश की जब आई संयम लेने की मन भाई ॥
बहु विध दादी सा समझाई, आखिर आज्ञा तुमने पाई।
गढ़ चित्तौड़ पर जाकर तुमने लीना संयम भार ॥२॥ धन्य है ॥

जैन दिवाकर जग हितकारी चौथमलजी गुरु उपकारी ।
ज्ञान ध्यान के ये भंडारी, करे याद जिनको नर नारी ।
बने शिष्य आकर के उनकी सेवा में तैयार ॥३॥ धन्य है ॥

उपाध्याय और गणीपद पाया, साहित्य का विस्तार कराया ॥
गुरु का खूब ही नाम दीपाया, तनिक गर्व नहीं मनमें लाया ।
पाप कालिमा मेटी आपने, तथा क्लेश संसार ॥४॥ धन्य है ॥

यह गजेन्द्र में चलकर आया, कस्बा-वासी भी यहां पर आया ।
श्रमण संघ का रत्न पुराया, तनिक न लज्जा मनमें लाया ।
रंग-मुनि की सुनो विनति शान्ति ! शान्ति ! दातार ॥५॥ धन्य है ॥

:: गुरु-महिमा ::

—— :o: ——

(ले०—एक अज्ञात-भक्त)

(तर्ज—ख्याल की)

आछो दीपायो मारग जैन को, मुनि प्यारचन्दजी ॥ टेर ॥
देश मनोहर मालवों सरे, शहर रतनपुरी खास ।
ओस वंश में जन्म लिया है, पुनवानी प्रकाश ॥ हो० ॥१॥

पिता आपका पुनमचन्दजी, माता मेना जान ।
धन्य भाग पुनवान पधारे, उदय हुआ जिम भान ॥२॥

बाल अवस्था विश्व विचारी, चढ़ गये ऊँचे भाव ।
आगे की सोचे मन में, कैसे जीतूं दाव ॥३॥

भू मण्डल मे आप विचरते, जिन वानी के काज ।
धर्म-देशना सुनवा खातीर, आवे विविध समाज ॥४॥

सुनी देशना हरषित हो के, यो संसार असार ।
अनुमति मागी सब कुटुम्ब से, लूँगा संजम-भार ॥५॥

बाल अवस्था बालक धारी नहीं भिटक्यो आवे।
अष्ट कर्म में मोह राजा, नरक वास करावे ॥६॥
जैन-दिवाकर जग में जाहिर चौथमल महाराज।
उत्साहित हो संयम लीना, शिवपुरी के काज ॥७॥
गुरु सेवा कर मेवा पाये कीना ज्ञान अभ्यास।
आतमराम रमे नित आगम बने उपाध्याय खास ॥८॥
वीर-वचन को अपनाते हैं करते पर उपकार।
दया धर्म का झण्डा कर ले करते उग्र विहार ॥९॥
अल्प बुद्धि अनुसार बनाया शोभा कही न जाय।
चरन शरन में सेवक आया, आनन्द ही वरताय ॥१०॥

भक्ति--भावना

:o:
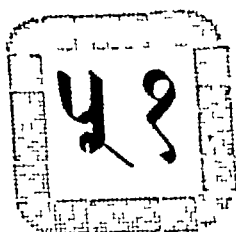
(रचयिताः-श्री बालारामजी "बाल-कवि-किंकर" जोधपुर)

सवैया—(तर्ज:-वीर-हिमाचल से निकसी गुरु गौतम के)

प्यार कियो प्रभु पारस के, पद पंकज से जिनने अविकारी,
रच्छक दीन रु जैन दिवाकर से गुरु पा निज आतम तारी।
चंदन श्री मलया गिरि के सम जा गुन की गरिमा जग ज्हारी
दच्छ शिरोमनि वे मुनि आज करी सहसा सुर-लोक सधारी ॥१॥

प्रेम पयोनिधि के परिपोषक, शोषक शत्रु सयान पधारे,
रोष कबू न कियो गुरुता गह दोष सभी जिन दूर निवारे।
घोष, अहा! जिनको सुनिके, मन पावत तोष महा मति वारे,
हा! उस "प्यार" मृगांक बिना, विलखे मुख हैं सगरे हम तारे ॥२॥

★ कवित्त ★

समता-समंद, दुःख-द्वंद के निकन्द न्यारे,
मन्द मन्द हास्य से अमन्द चित्त चोरते।
जैन श्रमण संघ के उपाध्याय आप अहा
सहसा अहेतु मन उनके मरोरते।
धीर वीर आते भव्य भावना विलीन भक्त,
बिना भार हाथ उन्हें अब शीश मोरते।
पाय ज्ञान धारी सदाचारी अविकारी गुरु,
प्यारचन्द मति सिन्धु सुर पुर दौरते ॥ ३ ॥

प्रेम को सु-पाठ गुरु देव ने पढ़ायो जाको
धारण कियो जो अहा! अपने सु-तन में।
जैन श्रमण संघ को दोनों सहयोग स्वच्छ,
अच्छ जाको लायो महा संघ के सु-मन में।
एक ना अनेक ग्रन्थ लिखे निज लेखनी से
अटल रहे वे सदा अपने सु मन में।
वे ही सुख कंद दुःख द्वंद के निकन्द सारे
प्यारचन्द लीन भये चिदानन्द घन में ॥ ४ ॥

★ वसन्त तिलका छन्द ★

हा! प्यारचन्द दुःख द्वंद निकन्दना रे
आनन्द कन्द मति-सिन्धुन के सहारे।
हा! जैन वेश छवि सेन अशेष हारे
क्यों आज मान मम आप हहो! बिसारे ॥ ५ ॥

★ मालिनी छन्द ★

शिशु तन सकुचाये, शोक-संतप्त सारे,
बुध-जन बिलखाये, विज्ञता हा! बिसारे।
मुनि मन मुरझाये, मोक्षदा मौन धारे,
सुगुरु जब सिधाये, स्वर्ग को हा! हमारे ॥ ६ ॥

★ सोरठा ★

दान, शील, तप भाय, भाव शुद्ध गुरु भक्ति हित।
बिलखत हमें विहाय, परम-धाम गो प्यार मुनि ॥ ७ ॥

★ दोहा ★

उपाध्याय पद पै अहा! अटल रहे आद्यन्त।
प्यारचन्द्र की प्रकृति को, सभी सराहत सन्त ॥ ८ ॥

स्वागत-गीत

(रचयिता—श्री मोहनलालजी जैन, रायपुर)

(तर्ज—फूल बगियन में बुल बुल बोले, डाल पे बोले कोयलियां—
रानी रूपमती)

जन जन के मन खुशियां डोले आज हुई हैं रंग-रलियां।
दरस करो गुरुराज पधारे आशा की आज खिली कलियां ॥ध्रु.॥

कोशिश अपनी व्यर्थ गई नहीं अपने पुण्य सवाये हैं।
नव वर्षों के बाद यहां पर संत-शिरोमणि आये हैं।
धर्म-बाग में वीर-वचन की कू केगी फिर कोयलियां ॥१॥ दरस—

उपाध्याय मुनिराज प्यारचन्द दर्शन शास्त्र के ज्ञाता हैं।
सब धर्मों का ज्ञान जिन्हें है सबसे प्यार का नाता है।
प्रेम भरी वाणी है पीवो, भर अमृत रस की प्यालियां ॥२॥ दरस—

गुरु का अमृत ज्ञान पान कर, जीवन सफल बनाएँगे।
ज्ञान, ध्यान, तप, जप में हम सब, पीछे न रहने पावेंगे।
देर न है अब धर्म ध्यान में; कि खिल उठेंगी नव कलिया ।३। दरस ...

ज्ञान के प्यासे तरस रहे थे, प्यास बुझाने, मेहर करी।
स्वागत हो मुनिराज आपका, आने मे न देर करी।
कष्ट सहे विहार मे भारी, काट के लम्बी डगरिया ।।४।। दरस ...

नाच उठे मन-मोरे हम में, हर्ष भरी है सब गलिया।
"मोहन" पर भी महर रहे गुरु, तुम चरणों में शरण लिया।
नमन करें हम मुनि चरण मे, 'मोहन" गावी सुरतिया ।।५।। दरस...

स्वर्ग-सिधारे

(ले०—मेहता सुगनचराजजी वकील, कुष्टगी)

(तर्ज—सुनो सुनो ये भारतवासी बापू की यह अमर कहानी)

सुनो सुनो ये भारतवासी धर्म का प्यारा चला गया।
नौ बज कर पैंतालीस मिनट पर देवलोक सिधार गया॥ टेर॥

सम्वत् २०१६ में सैंतालीसवां, हुआ चौमासा रायचूर,
चौमासे के बाद आप मुनिवर कर्नाटक का किया विहार।
रायचूर से आये कालगी मुदगल से फिर इलकल का।
दर्शनार्थी बहु हुवे इकट्ठे पारस अमम्वि मनाई थी॥ १॥ सुनो

इलकल से गजेन्द्रगढ़ आये वहां पर हुआ दर्द छाती में
शुक्रवार को विहार करेंगे शनिवार नहीं ठहरेंगे।
सवा नौ बजे किया संथारा पौने दस बजे स्वर्ग धाम पधारे॥
तारों से सब गई खबर यह भारत के सब गामों में॥ २॥ सुनो

फोनों से बहु फोन लगे थे हुबई बागल्कोट बीजापुर,

और हुबली फोन गये, फिर कोप्पल रायचूर।
यह खबर सुन हुई ताज्जुब दिल सब के हो गये उदास ॥
आने की बहु हुई भावना, उपाध्याय के दर्शन की ॥ ३ ॥ सुनो

आनन फानन में वहु आ गये, हजारों श्रावक और महिलाऐ,
बच्चों की अनगिनती थी और मोटर-कारों की लगी कतार।
सवत् २०१६ का साल था, पौप सुद दशम शुकरवार ॥
गजेन्द्रगढ मे हुई समाधि, प्यारा पहुँचे स्वर्ग-मझार ॥ ४ ॥ सुनो

सुगन्धराज यों कहता दुःख से, समाज में हुआ अभाव,
शोक-सागर छोड उपाध्याय, कर गये अपना कल्याण।
ईश्वर तेरी मरजी है, अब शान्ति सबको दे भगवान ॥
सुनो सुनो ये भारतवासी, धर्म का प्यारा चला गया ॥ ५ ॥

प्यारचन्दजी महाराज

(वर्षानुक्रमणिका)

(ले०—श्री विमल कुमारजी रांका, नीमाज)

प्यार से चाह लगा धर्म की,
        जागृति जन जन में तुम जो जगा गये।
याद रहेगी वर्षों तक गुरुवर !
        अमिट निशानी तुम जो लगा गये ॥१॥
रच दिये ग्रन्थ अनेक गौरवशाली
        थे दृढ़ अभ्यासी आगम के भारी।
चंद्र सूर्य की तरह जगत से
        जाते ही महक उठी प्रभा तुम्हारी ॥२॥
दया किस पर कैसी करना
        हर प्रवचन में हरदम जारी थी।
जी आपका मचल उठता था जब
        सुन लेते देश में कहीं फैली महामारी थी ॥३॥
मेहनत आपकी सफल हुई
        बिखरे मोतियों को "साधु संघ" में बांध लिया।
हाय ! विधाता ! पागल तू क्यों,
        राज सम दीप को भयानक बुझाय दिया ॥४॥

तुम हमें बिलखते छोड गये

———— :०: ————

(ले०—श्री सी- एल. टिपरावत, मारवाड़ जंकशन)

श्रमण-सघ का चन्द्र अस्त हुआ,
यह था 'तरुण जैन" में छपा हुआ ॥
ढ़ न सका शब्द भी आगे
विश्व पति ! यह कैसा हुआ ॥१॥

अरे ! दुष्ट महा काल बाली !
हमने क्या तेरा अपराध किया ।
श्रमण संघ के उपाध्याय को,
तू ने क्यों हम से छीन लिया ॥२॥

जो हम सब का 'प्यारा" था,
उन पर तूने वार किया ।
इसकें पहले क्यों नहीं,
पागल ! एक जहर का घूट पिया ॥३॥

हंसते हंसते चले गये तुम !
दुनिया को रोती छोड़ गये ।
अन्धकार में छोड़ गये तुम !
हमें बिलखते छोड़ गये ॥४॥

★

उनका सन्देश

(मुनि रामप्रसाद)

रहो अब सावधान श्रमणो !
बनो अब क्रान्तिमान् श्रमणो !
जगति के नूतन प्रभात में अँगड़ाई लेते हो
किन्तु क्या है जगति इस पर कुछ ध्यान नहीं देते हो।
करो अब महाध्यान श्रमणो ॥१॥

सदाचार का मूल प्रतिष्ठित हो समाज की भू पर,
सत्याचार विकसित हो पावन प्रसून मनहर।
रखो यह महाध्यान श्रमणो ॥२॥

सड़ा हीन विचारों कोष पर सजग बनो सरिता से
गर्हित विचारों की चट्टानें तोड़ो शिव प्रतिमा से।
रहो यों प्रगतिमान श्रमणो ॥३॥

युग जनता तुम में अत्युत्तम श्रद्धा रखना चाहे

महावीर सी महावीरता तुम में लखना चाहे।
बनो प्रभु मूर्तिमान् श्रमणो ॥४॥

और सभी तज स्वार्थ संघ का अर्थ साधना अब है,
और सभी तज चाह संघ का श्रेय चाहना अब है।
इसी में निहित त्राण श्रमणो ॥५॥

देख रहा हूँ आज क्षितिज पर प्रलय घटा सी छाई,
पुनः तुम्हारे बलिदानों की अब है बारी आई।
रखो निज आन बान श्रमणो ॥६॥

क्या अपने इस उपाध्याय को मधुर विदाई दोगे,
अन्तर की मेरी पीड़ाओं को अथ-इति समझोगे।
हृदय है दह्यमान श्रमणो ॥७॥

नहीं चाहता मेरी स्मृतियों मे स्तुतियां रच डालो,
यही चाहता हूँ संकट से अपना यान निकालो।
सघ ये हो महान् श्रमणो ॥८॥

स्वर्गीय, प्रातः स्मरणीय बाल ब्रह्मचारी पंडित रत्न,
उपाध्याय श्री १००८ श्री प्यारचन्दजी महाराज
सा० के प्रति सद्भावांजलि प्रेमांजलि एवं
श्रद्धांजलि रूप से संत महात्माओं
श्रमण महापुरुषों प्रतिष्ठित नेताओं
श्रावकों और श्री संघों की
ओर से गत-आगत-तार पत्र
एवं शोक-प्रस्तावों की संक्षिप्त
सूची और आवश्यक
विवरण

"प्रेषित-तार-सूची"

———:o:———

गजेन्द्रगढ श्री संघ की ओर से ता० ८-१-६० को भारत-भर के आवश्यक निम्नोक्त स्थानों पर उपाध्यायजी श्री के स्वर्गवास की दुखद सूचना तार द्वारा दी गई, उसकी क्रमिक-सूची इस प्रकार है —

(१) लुधियाना श्री संघ आचार्य श्री १००८ श्री आत्मारामजी महाराज सा० की सेवा में।

(२) उदयपुर श्री संघ उपाचार्य श्री १००८ श्री गणेशीलालजी महाराज सा० की सेवा में।

(३) अहमद नगर श्री संघ उपाध्याय श्री १००८ श्री आनन्द ऋषिजी महाराज सा० की सेवा में।

(४) जयपुर श्री संघ उपाध्याय श्री १००८ श्री हस्तीमलजी महाराज सा० की सेवा में।
(५) आगरा श्री संघ उपाध्याय श्री १००८ श्री अमरचन्दजी महाराज की सेवा में।
(६) इन्दौर श्री संघ मंत्री मुनि श्री १००८ श्री किशनलालजी महाराज सा० की सेवा में।
(७) गुलाबपुरा श्री संघ मंत्री मुनि श्री १००८ श्री पन्नालालजी महाराज सा० की सेवा में।
(८) जोधपुर श्री संघ मंत्री मुनि श्री पुष्कर मुनिजी महाराज सा० की सेवा में।
(९) अहमदाबाद श्री संघ मुनि श्री धासीलालजी महाराज सा० की सेवा में।
(१०) पूना श्री संघ पंडित रत्न मुनि श्री सिरेमलजी महाराज सा० की सेवा में।
(११) रतलाम श्री संघ श्री स्थविर मुनि शोभालालजी महाराज सा० की सेवा में।
(१२) ब्यावर श्री संघ स्थविर मुनि श्री मोहनलालजी महा० सा०
" " मिश्रीलालजी महा० सा०
(१३) बेंगलोर श्री संघ मुनि श्री हीरालालजी महाराज सा० की सेवा में।
(१४) दिल्ली कान्फ्रेन्स आफिस (जैन प्रकाश)
(१५) जोधपुर तरुण जैन (साप्ताहिक पत्र)
(१६) अहमदाबाद स्थानकवासी जैन (पाक्षिक पत्र)
(१७) रायचूर श्री संघ
(१८) सिंधनूर श्री संघ

(१६) इलकल श्री सघ (२०) गुलेजगढ़ श्री सघ
(२१) मैसूर श्री सघ (२२) बागलकोट श्री सघ
(२३) जयसिंगपुर श्री सघ (२४) हूबली श्री सघ
(२५) बेलगाव श्री सघ (२६) शोरापुर बेंडर श्री संघ
(२७) यादगिरी श्री सघ (२८) लिंगसुर छावनी श्री सघ
(२६) कोप्पल श्री सघ (३०) ब्यावर दि० दिव्य ज्योति का०
(३१) बीजापुर श्री संघ (३२) शोलापुर श्री संघ
(३३) करमाला श्री सघ (३४) जालना श्री सघ
(३५) औरगाबाद श्री संघ (३६) धूलिया श्री संघ
(३७) हैदराबाद श्री सघ (३८) बुलाराम श्री सघ
(३९) मनमाड़ श्री सघ (४०) इगतपुरी श्री सघ
(४१) सिकन्द्राबाद श्री सघ (४२) इन्दौर श्री भवरलालजी धाकड़
(४३) धार श्री सघ
(४४) बदनावर श्री सघ (४५) बरमावल श्री सघ
(४६) रतलाम श्री बापूलालजी बोथरा—
(४७) जावरा श्री सघ (४८) मंदसौर श्री संघ
(४६) रामपुरा श्री सघ (५०) चित्तौड़गढ़ श्री संघ
(५१) निम्बाहेड़ा श्री सघ (५२) जावद श्री सघ
(५३) बड़ी सादड़ी श्री संघ (५४) डूगला श्री सघ
(५५) भीलवाड़ा श्री संघ (५६) छोटी सादड़ी श्री संघ
(५७) उदयपुर श्री साहेबलालजी महेता—

(५८) राजगढ़ का संघ　　(५६) मामझारा श्री संघ
(६०) मुसावल श्री संघ　　(६१) जलगांव श्री संघ
(६२) सैलाना श्री संघ　　(६३) अजमेर श्री संघ
(६४) रायपुर श्री संघ　　(६५) पाली श्री संघ
(६६) नासिक श्री संघ　　(६७) बीकानेर श्री संघ
(६८) सोजत श्री संघ　　(६९) बम्बई श्री संघ

नोट—उपरोक्त स्थानों पर दिये गये तारों के अतिरिक्त भी बाबू भाई-साहु गा-(बम्बई) वालों ने भी अनेक स्थानों पर पर मुनिराजों की सेवा में पृथक् पृथक् तार दिये।

आगत-तार-सूची

—————— :o: ——————

(१) लुधियाना—श्री संघ द्वारा-आचार्य श्री १००८ श्री आत्मा रामजी महाराज सा० की सद् भावाजलि।

(२) वेल्लूर—श्री सघ द्वारा-मुनि श्री हीरालालजी म० सा० और श्री मन्नालालजी महा० सा० की श्रद्धाजलि।

(३) जयपुर—श्री संघ द्वारा उपाध्याय श्री १००८ श्री हस्तीमल जी महा० सा० की ओर से प्रेमाजलि।

(४) जोधपुर—श्री सघ द्वारा—मुनि श्री पुष्कर मुनिजी म० सा० की ओर से श्रद्धाञ्जलि।

(५) बम्बई—मुनि श्री मंगलचन्दजी म० सा० की ओर से श्रद्धाञ्जलि। (एक सद् गृहस्थ द्वारा)

(६) अहमदाबाद—भोगीलाल भाई द्वारा—मुनि श्री घासीलाल-जी म० सा० की ओर से प्रमाञ्जलि।

(७) रतलाम — श्री बापूलालजी बोथरा द्वारा मुनि श्री हीरा-लालजी म० सा० की ओर से श्रद्धाञ्जलि।

(८) ब्यावर — दिवाकर दिव्य ज्योति कार्यालय द्वारा-मुनि श्री सेवा-भावी मिश्रीलालजी म० सा० शास्त्री की ओर से श्रद्धाञ्जलि।

(९) इन्दौर — श्री संघ द्वारा-मन्त्री श्री १००८ श्री मुनि किशन-लालजी म० सा० तथा प्रसिद्ध वक्ता मुनि श्री सौभाग्य-मलजी म० सा० की ओर से प्रेमाञ्जलि।

(१०) भुसावल — श्री राजमलजी नन्दलालजी द्वारा श्री संघ की श्रद्धाञ्जलि।

(११) जलगांव — श्री सागरमलजी नथमलजी द्वारा श्री संघ की श्रद्धाञ्जलि।

(१२) बेलगांव — श्री संघ द्वारा श्रद्धाञ्जलि।

(१३) धारवाड़ — श्री संघ द्वारा श्रद्धाञ्जलि।

(१४) बीकानेर — श्री संघ द्वारा श्रद्धाञ्जलि।

(१५) करमाला — श्री पन्नालालजी द्वारा श्री संघ की श्रद्धाञ्जलि।

(१६) सावद — श्री संघ द्वारा श्रद्धाञ्जलि।

(१७) भोपालगंज — (भीलवाड़ा) — श्री अमरचन्दजी द्वारा-श्री संघ की श्रद्धाञ्जलि।

(१८) चित्तौड़गढ़ — श्री संघ द्वारा श्रद्धाञ्जलि।

(१९) अहमदाबाद — श्री सौराष्ट्र संघ द्वारा श्रद्धाञ्जलि।

(२०) उदयपुर—श्री साहेबलालजी मेहता द्वारा श्रद्धाञ्जलि।

(२१) मदसौर—श्री सघ द्वारा श्रद्धाञ्जलि।

(२२) कोटा--श्री संघ द्वारा श्रद्धाञ्जलि।

(२३) जोधपुर--निम्नोक्त व्यक्तियों की श्रद्धाञ्जलिः—शिवनाथमलजी नाहटा, अचलदासजी सचेती, पुखराजजी भण्डारी, सज्जनमलजी संचेती, मंगलचन्दजी सिंघी, सरदारमलजी सचेती, सोमचन्दजी संघवी, दौलतराजजी डागा, पुखराजजी गोलेचा, धूलचन्दजी, सरदारमलजी सर्राफ, शुकनराजजी सूरिया, खींवराजजी संचेती समरथमलजी संकलेचा।

(२४) जावरा--श्री सुजानमलजी मेहता द्वारा-श्री संघ की श्रद्धाञ्जलि;

卐卐卐卐卐卐
卐 ५६ 卐
卐卐卐卐卐卐

स्वर्गीय उपाध्याय श्री १००८ श्री प्यारचन्दजी महा० सा० के स्वर्गवास के दुःखद समाचार निम्नांकित साधु साध्वी श्रावक एवं श्री संघ तथा पत्र सम्पादकों की सेवा में गजेन्द्रगढ़ श्री संघ द्वारा जिस पत्रक द्वारा प्रेषित किये गये उस पत्रक की अविकल नकल और नाम-सूची निम्न प्रकार से है —

पत्रक की अविकल नकल

गजेन्द्रगढ़ ता० २-१-६०

श्रीमान् सादर जयजिनेन्द्र !

हमारे यहां पर तपस्वी श्री बसन्तीलालजी म० तपस्वी प्रभाकर श्री मैयराजजी म० प्रभाकर श्री गणेशमुनिजी म० तपस्वी श्री पन्नालालजी म० शास्त्री श्री उदयमुनिजी म० आदि ठाणा ५ से विराजमान है।

अति दुःख के साथ लिखना पड़ता है कि यहां उपाध्याय पं० रत्न श्री प्यारचन्दजी महाराज के ता० १-१-६० के दिन शुक्र

सीने में दर्द हुआ था और ता० ७-१-६० को शाम को ४ बजे सीने मे दर्द बढ़ा, उस समय यहा के संघ ने डाक्टर को बताया, डाक्टर सा० ने कहा कि हृदय कमजोर है अतः पूर्ण विश्रांति की आवश्यकता है।

ता० ८ के ५ बजे अचानक अधिक तकलीफ होगई उसी समय में उपाध्यायजी महाराज ने चौरासी लाख जीवायोनि से क्षमा याचना करते हुए मुनियों से जाव-जीव संथारा मागा किन्तु लघु मुनियों ने संथारे का अवसर नहीं जचने से केवल उपा० म० के आग्रह को लक्ष्य में ले सागारी संथारा कराया। दशवैकालिक भक्तामर आलोयणा आदि सुनाते रहे। आखिर सवा नौ बजे उपा० म० के अधिक आग्रह से मुनिराजों ने जाव-जीव का संथारा कराया, संघ को संथारे का ज्ञात होते ही तहलका-सा मच गया, आसपास के सभी क्षेत्रों को सूचना मिलते ही तत्काल जन-समूह दर्शनार्थ उमड़ पड़ा।

ता० ८-१-६० को अरिहन्त ! अरिहन्त !! का उच्चारण करते हुए उपाध्यायजी महाराज की महान् आत्मा ने समस्त जैन समाज को बिलखते छोड़ (प्रातः ६ बजकर ४५ मिनट पर) इस असार संसार से विदा ले ली।

रायचूर, बीजापुर, बागलकोट इरकल मुदगल, सिंधनूर कुष्टगी, कोप्पल, कुकनूर, गदग, धारवाड़, हुबली, जैसिंगपुर अनेक गावों के संघ वहा पहुँच गये थे। अन्तिम यात्रा में स्थानीय एव बाहिर गाव के करीब बीस हजार की उपस्थिति थी, गाव में पूर्ण बाजार बन्द रहा।

नश्वर देह के विलीन के साथ ही जनता में उपाध्यायजी म० की स्मृति को स्थाई बनाने की उत्कंठा जागी एवं उसी रात्रि को करीब पन्द्रह हजार का फन्ड एकत्रित होगया।

ता० ६-१-६० के मात्कल में सभी मुनियों की उपस्थिति में संघ ने शोक सभा मनाई एवं मुनियों ने लोगस्स का ध्यान कराया।

पं० मुनि श्री मगनलालजी म० श्री अशोक मुनिजी आदि ठाणा ४ बागड़ कोट से शीघ्र विहार कर पधारने वाले हैं।

भवदीय—
श्री श्वे० स्था० जैन श्रावक संघ
गणेशगढ़

नाम—सूची

(जिनकी सेवा में उक्त पत्रक की प्रति प्रेषित की गई)

(१) लुधियाना श्री संघ द्वारा आचार्य श्री १००८ श्री आत्मारामजी म० सा०

(२) उदयपुर श्री संघ द्वारा उपाचार्य श्री १००८ श्री गणेशीलालजी म० सा०

(३) बड़ौदा श्री संघ द्वारा वयोवृद्ध शास्त्र श्री १००८ श्री कस्तूरचन्दजी म० सा०

(४) अहमदनगर श्री संघ द्वारा उपाध्याय श्री १००८ श्री आनन्दऋषिजी म० सा०

(५) जयपुर श्री संघ द्वारा उपाध्याय श्री १००८ श्री
हस्तीमलजी म० सा०

(६) आगरा श्री संघ द्वारा उपाध्याय श्री १००८ श्री
कवि अमरचन्दजी म० सा०

(७) इन्दौर श्री सघ द्वारा मन्त्री श्री १००८ श्री
किशनलालजी म० सा०

(८) गुलाबपुरा श्री सघ द्वारा मंत्री श्री १००८ श्री
पन्नालालजी म० सा०

(९) अजमेर श्री संघ द्वारा मन्त्री श्री १००८ श्री
हजारीमलजी म० सा०

(१०) सोजत सीटी श्री सघ द्वारा मन्त्री श्री १००८ श्री
मिश्रीलालजी म० सा०

(११) जोधपुर श्री सघ द्वारा मन्त्री श्री पुष्कर मुनिजी म० सा०

(१२) नासिक श्री संघ द्वारा मुनि श्री बड़े नाथूलालजी म० सा०

(१३) पूना श्री संघ द्वारा पडित मुनि श्री सिरेमलजी म० सा०

(१४) रामपुरा श्री संघ द्वारा साहित्यरत्न मुनि श्री
केवलचदजी म० सा०

(१५) माटुंगा श्री बाबूभाई द्वारा मुनि श्री पडित रत्न
प्रतापमलजी म० सा०

(१६) ,, मुनि श्री मगलचन्दजी म० सा०

(१७) वेल्लूर श्री सघ द्वारा पडित रत्न श्री हीरालालजी म० सा०

(१८) रतलाम श्री बाबूलालजी बोथरा द्वारा मुनि श्री
शोभालालजी म० सा०

(१९) ब्यावर श्री जैन दिवाकर दिव्य ज्योति कार्यालय द्वारा
स्थविर मुनि श्री मोहनलालजी महा० सा०, शास्त्री श्री मिश्रीलालजी महा० सा० ।

(२०) दिल्ली संपादक जैन प्रकाश।
(२१) जोधपुर सम्पादक तरुण जैन।
(२२) अहमदाबाद सम्पादक स्थानक वासी जैन।
(२३) सैलाना सम्यग् दर्शन (श्री प्यारचन्दजी रांका)
(२४) केकड़ी श्री संघ
(२५) हमीरगढ़ श्री संघ
(२६) छोटी सादड़ी श्री संघ।
(२७) भोपालगंज (भीलवाड़ा) श्री संघ।
(२८) बदनावर श्री संघ।
(२९) बरमावल श्री संघ।
(३०) तिलगारा श्री संघ।
(३१) मलकापुर श्री संघ।
(३२) जावरा श्री सुजानमलजी मेहता।
(३३) मंदसौर श्री चांदमलजी मारु।
(३४) रतलाम श्री सुजानचन्दजी बालचावी।
(३५)　"　वों श्री रतनलालजी चोरड़िया।
(३६) पानासुवा श्री संघ।
(३७) बम्बई श्री पानाचन्द भाई बहारथी।
(३८) बड़ौदा श्री सुमरथलालजी शाकरलालजी
(३९) धारी श्री चांदमलजी गुगलिया।
(४) शोलापुर श्री संघ।
(४१) शोलापुर बेंकर श्री मोहनलालजी।
(४२) उदयपुर श्री साहेबलालजी महता।
(४३) चित्तौड़गढ़ श्री चम्पालालजी मेंब।
(४४) उज्जैन श्री चांदमलजी जैन।

(४५) मनमाड श्री सघ।

(४६) धार श्री भगतजी।

(४७) भूसावल श्री सघ

(४८) जल गांव श्री सघ

(४९) अमरावती श्री सघ

(५०) आकोला श्री संघ

(५१ खाम गाव श्री सघ

(५२) श्री गोंदा श्री सघ

(५३) करमाला श्री संघ

(५४) कुरवाड़ी श्री सघ

(५५) दौड श्री संघ

(५६) हैंदराबाद श्री सघ

(५७) बीकानेर श्री संघ

(५८) नाथद्वारा श्री सघ

(५९) गगापुर श्री संघ

(६०) माटुंगा श्री बाबू भाई द्वारा मुनि श्री विमल मुनिजी महा० सा०

(६१) इगतपुरी श्री सघ द्वारा-महासतीजी श्री कमलावतीजी म. सा.

(६२) बड़ी-सादड़ी श्री सघ

(६३) माडल श्री सघ

(६४) निम्बाहेड़ा श्री सघ।

शोक-संवेदनाएँ

स्वर्गीय पूज्यपाद उपाध्याय श्री १००८ श्री प्यारचन्दजी महाराज सा० के प्रति परमश्रद्धेय पूज्य संत महात्मा, श्री श्रमण वर्ग श्री संघ एवं सम्माननीय सद्गृहस्थों द्वारा आगत-पत्रों में एवं शोक प्रस्तावों में व्यक्त की गई शोक संवेदनाओं का कृतज्ञता-पूर्वक उल्लेख निम्न प्रकार से है—

(१)

लुधियाना
ता० २१ १ ६०

प्रधानाचार्य श्री १००८ श्री आत्मारामजी महा० सा० की ओर से—

'उपाध्याय श्री जी म० श्रमण-संघ में महत्व पूर्ण स्थान

रखते थे। आप श्री के स्वर्गवास से श्रमण-सघ को जो क्षति हुई है, उसकी पूर्ति अशक्य है। उपाध्याय श्री के स्वर्गवास के अशुभ समाचार से पूज्य आचार्य श्री जी म० सा० मुनि मण्डल और यहा के श्रावक-सघ को हार्दिक खेद हुआ। उपाध्याय श्री जी के पारिवारिक मुनिराजों से आचार्य श्री जी, अन्तत्य मुनि मंडल एवं स्थानीय श्रावक-सघ हार्दिक सम वेदना प्रकट करता है तथा स्वर्गीय आत्मा को शान्ति प्राप्त हो, ऐसी कामना करता है।

आचार्य श्री फरमाते हैं कि उपाध्याय श्री जी म० सा० के विद्वान शिष्य मुनिराज उनके पद चिन्हों पर चल कर उनके नाम को जीवित रखेंगे। रतनचन्द जैन सक्रेटरी, ऐस. एस. जैन बरादरी--लुधियाना।

(२)

उदयपुर
ता० १३-१-६०

उपाचार्य श्री १००८ श्री गणेशीलालजी महा० सा० की ओर से।

तारीख ६-१--६० को प्रात काल के समय उदयपुर श्रावक संघ के मत्री श्री तखतसिहजी पानगड़िया ने उपाध्याय श्री प्यार-चन्दजी महाराज साहब के अकस्मात् स्वर्गवास का तार उपाचार्य श्री जी महाराज साहब को सुनाया, इस अति ही दुखद समाचारों को सुनकर उपाचार्य श्री जी महाराज आदि सभी सतों ने चार २ लोगस्स का ध्यान किया और आज तारीख ६ को व्याख्यान बंद रखवाया गया, उपाचार्य श्री जी महाराज साहब ने स्वयं भी अस्वस्थ अवस्था में भी उपाध्याय श्री जी महाराज के जीवन पर

मचारा वाला और फरमाया कि उपाध्यायजी महाराज सरीखे विचक्षण पुरुषों की समाज में बड़ी क्षति हुई है। ऐसे पुरुषों की क्षति-पूर्ति निकट भविष्य में होना असंभव सा है।

श्रमण संघ बनने के पश्चात् प्रथम चातुर्मास इसी उदयपुर नगर में हुआ था। उसके पश्चात् भी साक्षात् व पत्रों द्वारा उनका सम्पर्क बना ही रहा इस सम्पर्क न पीछले कुछ वर्षों की घनिष्ठता मूला सीदी नागोर मारवाड़ चातुर्मास के पश्चात् उपाध्याय श्री जी महाराज जब कल्लु गांव में मेरे से मिले थे उस समय उन्होंने अधिक खुलकर बातें की और मुझे कहा कि आप भी ज्ञान दर्शन चारित्र की उन्नति सम्बन्धी जो भी बातें हो मुझे (उपाध्याय श्री को) फरमाते रहें, मैं उनको जो भी संत सति वर्ग मिलेंगे, उनको सुनाता रहूँगा और सावधानी दिलाता रहूँगा। मैंने भी जो उचित जान पड़ा वह उनको स्पष्ट रूप से अवगत कराया।

उपाध्याय श्री जी महाराज समाज के अन्दर एक प्रभाविक पुरुष थे लेकिन क्या किया जाय इस कराल काल के सामने किसी का वश नहीं चल सकता। उनके सद्गुणी जीवन से प्रेरणा प्राप्त करता हुआ समाज ज्ञान दर्शन चारित्र की अभिवृद्धि के साथ उपाध्याय श्री जी महाराज के भौतिक शरीर के वियोग को धैर्य-पूर्वक सहन कर अपने जीवन को समभाव से आदर्श बनावें यही शुभ भावना। उनके समीपस्थ आदि मुनिश्वरों को उपाचार्य श्री जी महाराज साहब की तरफ से खूब धैर्य बंधावें।

तारीख १ रविवार के रोज उपाचार्य श्री जी महाराज ने मुनि श्री मानाकसजी महाराज को उपाध्याय श्री जी महाराज

के जीवन पर अधिक प्रकाश डालने के लिये शहर में जहा व्याख्यान होता है, वहा पर भेजा।

तखतसिंग पानगड़िया श्री वर्धमान स्थानक वासी
जैन श्रावक सघ—उदयपुर।

(३)

उदयपुर

उपाचार्य श्री जी का शोकानुभव-"मेरी एक भुजा आज मुझ से बिछुड़ गई, मेरी शक्ति का एक स्रोत मुझसे विलग हो गया।" उपाचार्य मुनि श्री गणेशीलालजी महाराज साहब ने जब श्रमण सघ के मन्त्री एव साहित्य प्रेमी उपाध्याय पडित मुनि श्री प्यारचन्दजी महाराज के अकस्मात् स्वर्गवास हो जाने का समाचार सुना तब ये शब्द कहे। उपस्थित अन्य सन्तों में से एक ने कहा-"वाणी-व्यवहार एव विचार की समन्वयात्मक त्रिवेणी पर उपाध्याय मुनि श्री का व्यक्तित्व हम सन्तों का निर्भय आश्रय स्थान था।"—श्री हिम्मतसिंहजी तलेसरा द्वारा प्रेषित लेख से—

(४)

वड़ौदा—
ता० ११-१-६०

वयोवृद्ध पडित-रत्न मुनि श्री १००८ श्री कस्तूरचन्दजी महा० सा० की ओर से –

हम ता० ८-१-६० को प्रतिक्रमण करके निवृत्त हुए ही थे कि माटुंगा-(बम्बई) से बाबू भाई का तार आया जिससे मालूम हुआ कि उपाध्याय प्यारचन्दजी महा० ता० ८-१-६० के प्रातः

१-४२ बजे गजेन्द्रगढ़ में स्वर्गलोक हो गये हैं, इन समाचारों से यहां के चारों तीर्थ को बहुत दुःख हुआ।

आगे प्रवचन जारी रखते हुए फरमाया कि उपाध्याय प्यारचन्दजी का जन्म रतलाम में हुआ और १९६१ के फाल्गुण महिने में चित्तौड़गढ़ पर जैन दिवाकर श्री चौथमलजी महा० के पास दीक्षित हुए थे। संस्कृत, प्राकृत आदि का बहुत ज्ञानाभ्यास किया था यह हमारी भूतपूर्व संप्रदाय के पूज्य श्री मन्नालालजी महा० व पूज्य श्री खूबचन्दजी महाराज के समय में गणी पद पर और पूज्य श्री सेसमलजी महा० के समय में उपाध्याय पद पर थे और वर्तमान में भी आप श्रमण संघ के मन्त्री और उपाध्याय रहे हैं। आप श्रमण संघ में सुचारु रूप से कार्य करने की क्षमता रखते थे इसी वजह से उपाचार्य श्री गणेशलालजी महा० भी आप से समय समय पर सलाह लेते रहते थे और उपाध्यायजी म० भी किसी भी कार्य में श्री उपाचार्यजी महा० की सलाह लेते और वे जो आज्ञा फरमाते उसका पूरा ध्यान रखते थे।

—रूपलाल जैन द्वारा प्रेषित

(५)

अजमेर
ता० २१-८-५०

उपाध्याय पंडित रत्न श्री १००८ श्री हस्तीमलजी म० सा० की ओर से—

स्व उपाध्याय श्री प्यारचन्दजी महा० का भीनासर सम्मेलन में निकट से परिचय करने का अवसर मिला आपके मन में संघ उन्नति के लिये बड़ी लगन थी। आप श्रमण संघ को ज्ञान

क्रिया में सुयोजित देखना चाहते थे। कराल-काल ने आपको असमय मे उठा लिया, समाज को बडी आशा थी और हमारा विश्वास था कि आप श्रमण सघ की उलझी समस्या को सुलझाने में पूर्ण सफल होंगे, किन्तु भावी-वश ऐसा नहीं हो सका। हम चाहेंगे कि कोई महापुरुष स्व० आत्मा के रिक्त स्थान को पूर्ण कर जिन-शासन को दीपाएँगे।'

श्री जतन कुमार लोढ़ा द्वारा प्रेषित।

(नोट-आप श्री का इस विषयक-पत्र पहले भी प्राप्त हुआ था।)

(६)

इन्दौर

श्री १००८ श्री मन्त्री प० श्री किशनलालजी महाराज एव प्र० वक्ता प० श्री सौभाग्यमलजी महाराज सा० की ओर से—

"श्री वर्धमान श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन श्रमण सघ के उपाध्याय पं० मुनि श्री प्यारचन्दजी महाराज श्री के गजेन्द्रगढ़ (मैसूर) में शुक्रवार दिनाक ८-१-६० के सुबह ६-४५ पर अचानक स्वर्गवास होने के दु खद समाचार प्राप्त होते ही इन्दौर श्री सघ एव यहा विराजित श्री १००८ श्री मन्त्री प० किशनलालजी महा० प्र० वक्ता प० सौभाग्यमलजी महाराज आदि ठाणा तथा श्री महासतीजी श्री राजकुंवरजी, श्री केसर कुवरजी, श्री पुष्पकुंवरजी आदि महासतीजी को हार्दिक समवेदना हुई है। अभी कुछ समय पहले इसी श्रमण सघ के सरल हृदय मन्त्री प० सहस्रमलजी महाराज श्री के निधन को भूल भी नहीं पाया था कि यह दूसरा वज्रपात हुआ है। स्वर्गीय प्र० वक्ता जैन दिवाकर प० मुनि श्री चौथमलजी महाराज श्री के आप प्रधान शिष्य थे। अपने

गुरुवर्य के सेक्रेटरी के रूप में आपने कार्य किया था। पं० मुनि श्री चौथमलजी महाराज श्री का जो विशाल साहित्य प्रकाशित हुआ है, उसके प्रकाशन का एक मात्र श्रेय आपको ही है। अपने गुरुदेव की आयु की हीरक-जयन्ति तथा दीक्षा की स्वर्ण-जयन्ति के महोत्सव मनाने तथा उस अवसर पर "जैन दिवाकर अभिनन्दन ग्रन्थ" प्रकाशित करने की भी सूझ बूझ आपकी ही थी। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि आपने गुरु ऋण से उऋण होने के लिये अधिक परिश्रम किया है। श्रमण-संघ के आप एक उपयोगी घटक थे। सादड़ी में जब श्रमण-संघ बना तब आपकी विद्वत्ता, सच्चरित्रता और योग्यता देखकर श्रमण संघ में पहले मन्त्रीपद व बाद में उपाध्याय पद आपको दिया गया था जिसे आपने अंत तक निभाया है। आप उचित सलाहकार भी थे। आपके निधन से समस्त स्थानकवासी समाज को बड़ी क्षति पहुँची है। साधुओं की माला के वयोवृद्ध मणि एक-एक करके नष्ट होते जा रहे हैं। जिन की पूर्ति असंभव होगई है।

इन्दौर का श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन चतुर्विध संघ पं० उपाध्याय मुनि श्री प्यारचन्दजी महाराज श्री के आकस्मिक निधन पर अपनी श्रद्धांजली अर्पित करते हुए उनकी आत्मा को चिर शान्ति प्राप्त होने की कामना करते हैं। साथ ही श्रमण संघ के आचार्य वयोवृद्ध श्री श्री १००८ पं० आत्मारामजी महाराज एवं श्री उपाचार्यजी श्री गणेशीलालजी म० तथा पं० श्री कस्तूरचन्दजी म० तथा स्वर्गीय मुनि श्री के शिष्यगण के प्रति समवेदना प्रकट करते हैं।

—श्री संघ द्वारा

(७)

नादूर्डी (लासलगाव)
ता० ११-१-६०

पं० मुनि श्री नाथूलालजी म० सा०, श्री चन्दनमलजी म० और श्री वृद्धिचन्दजी म० सा० की ओर से—

"आज रोज बाबूभाई माटु गा वाले, के तार द्वारा श्रमण-संघ के उपाध्याय श्री प्यारचन्दजी म० के स्वर्गवास के समाचार पढ कर यहा बिराजित मुनिराजों को महान दुःख हुआ।

स्व० उपाध्याय प्यारचन्दजी महाराज एक महान् विचक्षण समाज हितैषी सन्त थे, समय समय पर आपने समाज मे अनेक कार्य किये है। आप समय के पारखी, कार्य कुशल व संघ रचना के अपूर्व कलाकार थे।

स्व० जैन दिवाकरजी म० के शिष्यों में आपका प्रधान स्थान था, गुरुदेव की आप श्री ने अधिक से अधिक सेवा की थी। सेवा ही आपका प्रधान लक्ष्य रहा है। साहित्य-प्रचार आपके द्वारा भी काफी हुआ था जिसमे भ० महावीर की और गुरुदेव की वाणी के प्रकाश का जैन जैनेत्तर लाभ उठाते रहेंगे।

आपने १७ वर्ष की उम्र में चित्तौड़ में दीक्षा ग्रहण की थी और चारित्र पर्याय ४६ वर्ष १० महिना ६ दिन तक पालन किया। साहित्य सेवा और समाज कार्य में विचक्षणता एव धैर्यता के आप हामी थे। श्री उपाध्यायजी म० समाज में एक आदर्श छोड गये हैं। उपा० प्यारचन्दजी म० के जाने से समाज में महान् क्षति

गुरुवर्य के सेक्रेटरी के रूप में आपने कार्य किया था। पं० मुनि श्री चौथमलजी महाराज श्री का जो विशाल साहित्य प्रकाशित हुआ है, उसके प्रकाशन का एक मात्र श्रेय आपको ही है। आपने गुरुदेव की आयु की हीरक-जयन्ति तथा दीक्षा की स्वर्ण-जयन्ति के महोत्सव मनाने तथा उस अवसर पर जैन दिवाकर अभिनन्दन ग्रन्थ' प्रकाशित करने की भी सूझ बूझ आपकी ही थी। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि आपने गुरु ऋण से उऋण होने के लिये अधिक परिश्रम किया है। श्रमण-संघ के आप एक उपयोगी घटक थे। सादड़ी में जब श्रमण-संघ बना तब आपकी विद्वत्ता सच्चरित्रता और योग्यता देखकर श्रमण संघ में पहले मन्त्रीपद व बाद में उपाध्याय पद आपको दिया गया था जिसे आपने अंत तक निभाया है। आप उचित सलाहकार भी थे। आपके निधन से समस्त स्थानकवासी समाज को बड़ी क्षति पहुँची है। साधुओं की माला के बयोवृद्ध मणि एक-एक करके नष्ट होते जा रहे हैं। जिन की पूर्ति असंभव होगई है।

इन्दौर का श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन चतुर्विध संघ पं० उपाध्याय मुनि श्री प्यारचन्दजी महाराज श्री के आकस्मिक निधन पर अपनी श्रद्धांजली अर्पित करते हुए उनकी आत्मा को चिर शान्ति प्राप्त होने की कामना करते हैं। साथ ही श्रमण-संघ के आचार्य बयोवृद्ध श्री श्री १००८ पं० आत्मारामजी महाराज एवं श्री उपाचार्यजी श्री गणेशीलालजी म० तथा पं० श्री कस्तूरचन्दजी म० तथा स्वर्गीय मुनि श्री के शिष्यगण के प्रति समवेदना प्रकट करते हैं।

—श्री संघ द्वारा

चौथमलजी म० की आपने अनुपम सेवा की थी। गुरुदेव की सेवा मे दीक्षित होने वाले शिष्यों को साधु प्रतिक्रमण सिखाना, लोच करना एवं उनके ज्ञान-दर्शन-चारित्र की सम्भाल करना आदि कार्य उपाध्यायजी म० ही करते थे। महात्मा गांधी के बाद जो स्थान महादेव भाई का था ऐसा स्थान गुरुदेव के पास उपाध्यायजी म० का था। श्री उपाध्यायजी म० ने समय समय पर उचित मन्त्रणा देकर गुरुदेव एव जैन धर्म की ज्योति चमकाने में सुयोग प्रदान किया। जनता उन्हें गुरुदेव के प्रधान ही कहा करती थी। श्री उपाध्यायजी म० की अगाध गुरु भक्ति ने गुरुदेव के धर्म प्रचार एवं साहित्य प्रकाशन में सदैव सहयोग दिया है। उपाध्यायजी महाराज आगम ज्ञाता थे और पण्डित थे। वे बड़े ही मिलनसार, शान्त, गम्भीर प्रतिज्ञावान् और विचक्षण पुरुष थे। वर्धमान सघ के संगठन में, जिन अनेक मुनिराजों की प्रज्ञा और त्याग का योग मिला है, उनमें उपाध्यायजी म० का नाम भी स्वर्ण अक्षरों में लिखा हुआ है। उपाध्यायजी म० के स्वर्गवास से समाज ने एक अनुभवी, त्यागी, उदार एव चारित्रवान् मुनि खोये हैं। जिनकी पूर्ति होना कठिन है। दिवगत आत्मा को एव उनके अनेकानेक परिचित प्रशंसक एव श्रद्धालु भक्तों को शाति लाभ हो, यही कामना है"

—श्री सघ द्वारा

(१०)

मालेगाव

ता० १४—१—६०

प्रियवक्ता प० मुनि श्री विनयचन्द्रजी म. सा० की ओर से—

(श्री सघ ने लिखा कि)

पहुँची है। वैसे चमत्कारी सन्त आते हैं वैसे निकट भविष्य में होना कठिन लगता है। स्व० आत्मा को शान्ति मिले "

—श्री संघ द्वारा

(८)

बड़ी सादड़ी
१६—१—६०

तपस्वी मुनि श्री भेरुलालजी म० और श्री जीवन मुनिजी म० तथा महासतीजी श्री हगामाजी म० एवं महासतीजी श्री मगीनाजी म० सा० की ओर से—

ब्यावर से तार ता० ६ को मिला। उपाध्याय पं० मुनि श्री १००८ श्री प्यारचन्दजी म० सा० के अकस्मात् स्वर्गवास होने की खबर से चतुर्विध संघ को काफी दुःख हुआ। व्याख्यान बन्द रक्खा। महाराज साहब के जीवन पर प्रकाश डाला। समवेदना जाहिर की। श्री संघ में शोक सभा मनाई गई ध्यान करने के बाद दिवंगत आत्मा को शान्ति प्राप्त हो। ऐसी प्रार्थना की गई।

—श्री संघ द्वारा

(६)

भाटखेड़ी
६—१—६०

पं० रत्न मुनि श्री केवलचन्दजी महा० सा० साहिबरत्न की ओर से—

"पं० रत्न उपाध्याय १००८ श्री प्यारचन्दजी म० सा० मेरे गुरु भ्राता व स्वर्गीय गुरुदेव श्री जैन दिवाकर, प्रसिद्ध वक्ता श्री

चौथमलजी म० की आपने अनुपम सेवा की थी। गुरुदेव की सेवा मे दीक्षित होने वाले शिष्यों को साधु प्रतिक्रमण सिखाना, लोच करना एवं उनके ज्ञान-दर्शन-चारित्र की सम्भाल करना आदि कार्य उपाध्यायजी म० ही करते थे। महात्मा गांधी के बाद जो स्थान महादेव भाई का था ऐसा स्थान गुरुदेव के पास उपाध्यायजी म० का था। श्री उपाध्यायजी म० ने समय समय पर उचित मन्त्रणा देकर गुरुदेव एवं जैन धर्म की ज्योति चमकाने में सुयोग प्रदान किया। जनता उन्हें गुरुदेव के प्रधान ही कहा करती थी। श्री उपाध्यायजी म० की अगाध गुरु भक्ति ने गुरुदेव के धर्म-प्रचार एव साहित्य प्रकाशन में सदैव सहयोग दिया है। उपाध्यायजी महाराज आगम ज्ञाता थे और पण्डित थे। वे बड़े ही मिलनसार, शान्त, गम्भीर प्रतिज्ञावान् और विचक्षण पुरुष थे। वर्धमान सघ के सगठन में, जिन अनेक मुनिराजों की प्रज्ञा और त्याग का योग मिला है, उनमे उपाध्यायजी म० का नाम भी स्वर्ण अक्षरों में लिखा हुआ है। उपाध्यायजी म० के स्वर्गवास से समाज ने एक अनुभवी, त्यागी, उदार एव चारित्रवान् मुनि खोये हैं। जिनकी पूर्ति होना कठिन है। दिवगत आत्मा को एव उनके अनेकानेक परिचित प्रशसक एव श्रद्धालु भक्तों को शाति लाभ हो, यही कामना है"

—श्री संघ द्वारा

(१०)

मालेगाव

ता० १४—१—६०

प्रियवक्ता प० मुनि श्री विनयचन्द्रजी म. सा० की ओर से—

(श्री सघ ने लिखा कि)

'यहां पर प्रिय वक्ता पं० मुनि श्री विनयचन्द्रजी म० सा० ठा० ३ से विराजित हैं। श्रद्धेय उपाध्यायजी महाराज साहब के स्वर्गवास के समाचारों से उनके हृदय को ठेस लगी। व्याख्यान में श्री उपाध्यायजी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पण कर गुण-गौरव भी किया।"

श्री श्री १००८ श्री साहित्य प्रेमी उपाध्याय श्री प्यारचन्दजी म० सा० के स्वर्गवास के समाचार सुन करके श्री वर्द्धमान स्थानकवासी श्रावक संघ मालेगांव को गहरी चोट पहुँची है। वे एक महान सन्त थे। उनका जीवन आदर्श रूप था। साहित्य के क्षेत्र में भी उनकी सेवा अमूल्य थी। वे प्यार की मनोमूर्ति थे। उनका सरल स्वभाव और समाज के प्रति उन्होंने जो उपकार किया वह जैन समाज भूल नहीं सकता। यहां के जैन भाई उनको हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पण करते हैं।

(११)

आगरा
१४—१—६०

श्रद्धेय प्यारचन्दजी म० सा० के आकस्मिक स्वर्गवास के समाचार से आगरा संघ में शोक की लहर दौड़ गई। आपकी क्षति जैन समाज की महान् क्षति हुई जिसकी पूर्ति होना असम्भव है। एक स्मृति सभा का आयोजन किया गया जिसमें उपाध्याय श्री अमरचन्द्रजी म० सा मुनि श्री श्रीचन्द्रजी महा सा० ने उ के संयमी जीवन पर प्रकाश डाला एवं भाव-भीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। उपस्थित जन समुदाय ने कायोत्सर्ग किया

और प्रत्याख्यान ग्रहण किये। दिवंगत आत्मा को शान्ति लाभ हो यह शुभकामना है।

—श्री श्यामलालजी जैन द्वारा प्रेषित

(१२)

विजयनगर
मिति पौष शुक्ला ११

"उपाध्याय श्री के अवसान के दुःखद समाचार मिलते ही स्थानीय संघ में शोक फैलगया और पौष शुक्ला ११ को स्थानक में शोक सभा हुई। जिसमें उपस्थित जन-समुदाय ने श्रद्धाञ्जलि अर्पित की और शांति की कामना की गई। इस अवसर पर यहां विराजित प्रान्त मंत्री मुनि श्री पन्नालालजी महा० सा० ने उपाध्यायजी महा० सा० के जीवन पर विशद प्रकाश डालते हुए संवेदना प्रकट की। आपने फरमाया कि ऐसे समय में आपका अवसान हुआ जब समाज को आपकी परम आवश्यकता थी। अन्त मे मांगलिक श्रवण कर सभा विसर्जित हुई।"

श्री गुलाबचंद्रजी चोरड़िया द्वारा प्रेषित॥

(१३)

अजमेर
ता० ६-१-६०

स्थानक वासी जैन श्रावक संघ की एक सभा आज प्रातः काल ६ बजे स्थानीय उपासना भवन में उपाध्याय श्री प्यारचन्द्रजी महाराज के आकस्मिक स्वर्गवास पर शोक प्रकट करने के हेतु हुई। जिसमे मन्त्री मुनि श्री हजारीमलजी म० सा० ठाणा ३ तथा महासतीजी श्री जसकुंवरजी म० सा० ठाणा ५ उपस्थित थे। सर्व

प्रथम मुनि श्री मिश्रीलालजी म० सा० ने उपाध्याय श्री की जीवनी पर प्रकाश डालते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की। श्रावक संघ के मंत्री श्री समरथमलजी डागा ने श्रावक संघ की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके त्याग व संयम की सराहना की। पश्चात् एक शोक प्रस्ताव पारित किया गया जिसमें शासन-देव से प्रार्थना की गई कि दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

श्री सरदारमलजी मोहता द्वारा प्रेषित।

(१४)

दिल्ली
ता० १०–१ ६०

सदर बाजार स्थानक वासी जैन श्रावक संघ ने उपाध्याय श्री के आकस्मिक निधन को दुःख से सुना। ता० १०-१-६० को व्याख्यान स्थगित रखा गया और शोक सभा हुई जिसमें मान्य मंत्री मुनि श्री फूलचन्दजी म० सा० ने स्वर्गीय आत्मा के गुणानुवाद करते हुए संयम आदि पर प्रकाश डाला और श्रावक संघ की ओर से श्री कुन्दनलालजी ने समाज की ऐसी क्षति बतलाई जिसकी पूर्ति होना कठिन है। श्रद्धांजलि समर्पण के साथ-साथ दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिये कामना की गई।

(१५)

बागलकोट
ता ६–१ ६०

गजेन्द्रगढ़ में ता० ८-१-६० को श्री उपाध्याय श्री पं० प्यारचन्दजी महाराज के आकस्मिक निधन के समाचार जानकर हार्दिक दुःख हुआ। उपाध्याय श्री के दर्शनार्थ मुनि श्री मगनलालजी

म० सा० ठाणा ४ विहार करते हुए आज यहा पधारे थे और गजेन्द्रगढ़ जा रहे थे, परन्तु दर्शन न हो सके। मुनि श्री की सन्निधि मे शोक सभा की गई जिसमें उपाध्याय श्री की जीवनी का विवेचन करते हुए स्वर्गवास के लिये खेद प्रकट किया गया। दिवगत आत्मा की शांति के लिये शासन देव से मौन प्रार्थना की गई।—

माणकचन्द्र जड़ावमल वेताला द्वारा प्रेपित।

(१६)

घाटकोपर
ता० १०-१-६०

"उपाध्याय श्री प्यारचन्दजी म० सा० के देहावसान से स्थानीय श्री सघ एवं यहा पर विराजित मुनि श्री नानचन्द्रजी म० सा० ठाणा २ और मुनि श्री प्रतापमलजी म० सा० ठाणा ३ तथा महासतियाजी श्री हेमकुवरजी महा० सा० ठाणा ३ में शोक व्याप्त हो गया। आहार आदि का त्याग किया एवं एक शोक सभा हुई जिसमें उपाध्याय श्री की जीवनी पर प्रकाश डालते हुए गुणानुवाद किया और स्वर्गस्थ आत्मा के प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गई।"

मन्त्री द्वारा प्रेषित।

(१७)

रावर्टसनपेठ
ता० ६-१-६०

"आज प्रातः ६ बजे स्थानक मे मुनि श्री हीरालालजी म० सा० के सभापतित्व मे उपाध्याय श्री जी के निधन पर एक शोक-सभा हुई जिसमें मुनिराज श्री लाभचन्दजी म० सा० भी थे।

इसमें दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिये सामूहिक कामना की गई। उनकी स्मृति में गरीबों को मिष्ठान व भोजन दिया गया। उपाध्याय श्री की स्मृति में एक हजार का दान शुभ कार्यों में लगाने के लिये श्री गजरा बाई श्री पुखराजजी लुंकड़ की धर्मपत्नि ने मुनि श्री के समक्ष जाहिर किया।"

— श्री लालचंदजी बोहरा द्वारा प्रेषित

(१८)

बेंगलोर
ता० १५ १ ६०

मुनि श्री मन्नालालजी महा० सा० फरमाते हैं कि गुरुदेव से मिलने की मनमें बहुत थी। दुःख की बात है कि श्री १००८ श्री गुरुदेव उपाध्याय श्री प्यारचन्दजी महाराज सा० इस नश्वर शरीर को त्यागकर स्वर्ग सिधार गये। बहुत ही दुःख हुआ— कुछ लिख नहीं सकते।" मानकचन्द ओस्तवाल द्वारा प्रेषित।

(१९)

रतलाम

स्थविर मुनि श्री शोभालालजी महा० सा० ने गंभीर शोकानुभव किया और स्वर्गीय आत्मा को शान्ति प्राप्त हो-ऐसी कामना प्रकट की। श्री बापूलालजी बोथरा द्वारा प्रेषित।

(२०)

छोटी सादड़ी
ता० १०-१-६०

"गजेन्द्रगढ़ में उपाध्याय श्री के स्वर्ग वास के समाचार तार द्वारा प्राप्त होने पर स्थानीय श्री संघ में गहरा शोक छा गया

यहा पर विराजित मुनि श्री सूरजमलजी म० सा० ने व्याख्यान बन्द रखा और पचायती नोहरे मे शोक सभा की गई, जिसमें मुनि श्री ने विगत आत्मा के प्रति शोक भावना व्यक्त करते हुए समयोचित उद्गार प्रकट किये। रतनलाल सघवी ने श्रद्धाञ्जलि अर्पित की। उपाध्याय श्री के स्वर्गारोहण से समाज को भारी हानि हुई है।"

—श्री सघ द्वारा प्रेषित।

(२१)

ब्यावर
पौष शुक्ला १३

"ता० ८ जनवरी शाम को ७ बजे तार ३ मिले। जिनमे उपाध्याय श्रीजी के आकस्मिक देहावसान के समाचार थे। जिन्हें सुनकर मुनि श्री मोहनलालजी म०, मुनि श्री चादमलजी म० सा० आदि सभी मुनिराज ठाणा ८ को अत्यन्त खेद प्रात हुआ। समाज की एक महान् विभूति का स्वर्गवास होने से श्रमण समाज की महान क्षति हुई, जिसकी पूर्ति निकट भविष्य मे होनी दुर्लभ है। कराल काल के आगे किसी का वश नहीं चलता है। ता० ६ को शोक सभा मनाई गई। जिसमें उपाध्याय श्री के जीवन पर प्रकाश डालते हुए बताया कि महावीर स्वामी के शिष्य गौतम की भाति उपाध्याय श्री ने जन दिवाकरजी महाराज की खूब खूब भक्ति की और सच्चे अन्तेवासी का पद प्रात किया।

—रघुवरदत्त शास्त्री द्वारा प्रेषित

(२२)

मसूदा
ता० १२—१—६०

उपाध्याय श्री प्यारचन्दजी म० सा० के देवलोक समाचार

से श्रावक संघ में शोक छा गया। व्याख्यान बन्द रहा एवं शोक सभा की गई जिसमें यहां पर विराजित मुनिश्री सोहनलालजी म० सा० ठाणा ४ ने उनकी जीवनी पर संक्षिप्त प्रकाश डाला और समाज की महती क्षति बताई। नवकार मन्त्र के जाप के साथ शासन-प्रभु से प्रार्थना की गई कि दिवंगत आत्मा को चिर शान्ति प्राप्त हो। —श्री संघ द्वारा प्राप्त

(२३)

भरतपुर
ता० १७-१-६०

श्री अखिलेश मुनि जी महा० सा० की अध्यक्षता में शोक सभा हुई।—जिसमें श्री विजय मुनिजी महाराज ने कहा कि—श्रमण संघ के तेजस्वी उपाध्याय श्री प्यारचन्दजी महाराज के अकस्मात् स्वर्गवास पर हम सबको बड़ा खेद पहुँचा है। वे हमारे बीच में से ऐसे समय में गये जब कि उनके प्रभाव शाली व्यक्तित्व की हमें सबसे बड़ी आवश्यकता थी। श्रमण संघ के संगठन में उनके महत्वपूर्ण योग-दान को भुलाया नहीं जा सकता। यह सत्य है कि वे अपने भौतिक शरीर से हमारे बीच में नहीं रहे परन्तु उनके सद्गुण हमारे लिये महान् आदर्श है। वे अपने जीवन से समाज को स्नेह का नीरस और विचारों का प्रकाश निरन्तर देते रहे; मुझे आशा है कि उनका सारा परिवार भी अपने महान् गुरु के आदेश पर चलेगा।"—

मंत्री श्री संघ द्वारा प्राप्त।

(२४)

चींचपोकली–बम्बई
ता० १४–१–६०

मुनिराज श्री विमल मुनिजी महा० सा० एव श्री हस्तीमलजी महा० सा० ठाणा २ ने गहरी खेद जनक चिंता अनुभव की। आपने लिखाया कि वे एक तेजस्वी और अपने जीवन में खूब अच्छे यश का काम करके पधारे है। अभी एक वर्ष में दो मोटे सर के छत्र अपने से जुदे हो गये हैं, इसी का दु:ख सत तथा समाज को हो रहा है। वे अपने अनुभव से सब सभाल लेते थे।—

पत्र द्वारा प्राप्त।

(२५)

बम्बई

मुनि श्री मगलचन्दजी महा० सा० ठाणा २ ने हार्दिक समवेदना और चिंता प्रकट करते हुए अपनी भाव भीनी श्रद्धांजलि प्रकट की—

पत्र द्वारा प्राप्त।

(२६)

पूना
११—१—६०

जैन स्थानक नाना पेठ में सभा होकर शोक प्रदर्शन एव श्रद्धांजलि समर्पित की गई। मुनि श्री चम्पक मुनि जी म० सा० ठाणा २ तथा महासतीजी श्री इन्द्र कुवरजी म० सा० व अन्य-वक्ताओं के भाषण हुए।

श्री मोहनलालजी खिमेसरा–अध्यक्ष द्वारा प्रेपित।

(२७)

दिल्ली
१०—१—६०

श्री स्थानकवासी श्री संघ चांदनी चौक की ओर से श्री उपाध्यायजी महाराज के आकस्मिक निधन पर एक शोक सभा महासतीजी श्री मोहनदेवीजी म० सा० की उपस्थिति में हुई। जिसमें महासतीजी श्री कौशल्याजी और श्री प्रवीणकुमारीजी म० सा० ने आपकी जीवनी पर प्रकाश डालते हुए महत्वपूर्ण व्याख्यान दिये और बतलाया कि 'आपके निधन से समाज एक बहुत बड़ी कमी का अनुभव करेगा।" अन्य वक्ताओं के भी भाषण हुए और शोक-प्रस्ताव पास हुआ।

—श्री स्था. जैन श्री संघ चांदनी चौक दिल्ली द्वारा प्राप्त

(२८)

इगतपुरी

महासतीजी श्री हगामाजी म० सा० एवं महासतीजी श्री कमलावतीजी म सा ने हृदय विदारक शोकानुभव किया एवं ये भाव व्यक्त किये कि—"मुझे यह मालूम नहीं था कि नारायणगांव के दर्शन मेरेलिए आखरी दर्शन हैं। अब उनके दर्शन कहाँ जाकर करूं। वे हम लोगों को अनाथ कर गये।"

—पत्र द्वारा प्राप्त

(२९)

जोधपुर
ता ६—१—६

यहाँ पर विराजित सतीजी श्री पुष्पावतीजी महाराज सा०

साहित्य-रत्न जोधपुर के प्रसिद्ध धर्म स्थान सिंहपोल में व्याख्यान दे रही थीं, उन्होंने इस शोक-समाचार को सुन कर अपना व्याख्यान बन्द कर दिया।

(३०)

मदनगंज
ता० ११—१—६०

यहां पर विराजित महासतीजी श्री केवलजी महाराज सा० ठाणा ४ ने बहुत खेद प्रकट किया। सायङ्काल श्री सघ की ओर से एक शोक सभा भी हुई।

—श्री चम्पालालजी चोरड़िया द्वारा प्रेषित

(३१)

आलोट
ता० १७—१—६०

यहा पर विराजित महासतियाजी श्री चम्पाकुवरजी महा० सा०, श्री बालकुवरजी म० सा० आदि ठाणा ६ ने उपाध्यायजी म० सा० के स्वर्गवास का पत्र प्राप्त होते ही चउविहार उपवास के त्याग कर लिये। बहुत हार्दिक दुःख हुआ और शोक मनाया।

—श्री रतनलालजी सुजानमलजी पासेचा द्वारा पत्र प्राप्त

(३२)

उपाध्याय प० रत्न प्यारचन्दजी महाराज के आकस्मिक

निधन से स्थानीय समाज में शोक फैल गया। महासतीजी श्री हगामकुंवरजी व श्री सज्जनकुंवरजी म० सा० के सान्निध्य में शोक सभा की गई जिसमें महाराज श्री के निधन को अपूरणीय बतलाते हुए आपके द्वारा किये गये धर्म-प्रचार साहित्य सेवा सामाजिक और साम्प्रदायिक समस्याओं के निराकरण के प्रयत्नों का स्मरण करते हुए गुणानुवाद किया गया। अन्त में दिवंगत आत्मा की शान्ति की कामना की गई।

—श्री शांतिलालजी नाहटा द्वारा प्रेषित

— सम्पादक द्वारा संकलित

शोक-प्रस्ताव

(१)

दिल्ली

कॉन्फ्रेन्स भवन में ता० ८-१-६० को श्री अखिल भारतीय श्वे० स्था० जैन कॉन्फ्रेन्स के स्थानीय सदस्यों की असाधारण बैठक हुई जिसमें सदस्यों ने उपाध्याय श्री के देहावसान को समाज और श्रमण संघ के लिये महा क्षति बतलाया और यह शोक प्रस्ताव पास किया —

आज की यह सभा उपाध्याय प्रवर पं० र० मुनि श्री प्यारचन्दजी म० सा० के आकस्मिक देहावसान की सूचना पाकर अत्यन्त दुःख का अनुभव करती है।

आप गम्भीर, शान्त स्वभावी, सरल प्रकृति के सन्त थे एवं श्रमण धर्म के उपाध्याय पद को विभूषित करते थे। यह सभा समझती है कि आपका निधन समाज की एक ऐसी क्षति है जिसकी पूर्ति निकट भविष्य में अशक्य है।

समाज पर तो वज्रपात हुआ है। श्री शासनदेव से प्रार्थना है कि स्वर्गस्थ महाराज श्री की आत्मा को शांति और समाज को इस असह्य दु:ख को सहन करने की शक्ति प्राप्त हो।

उपरोक्त प्रस्ताव पास करते समय दो मिनिट मौन रहकर मूक श्रद्धाञ्जलि समर्पित की गई।

प्रस्तावक—श्री आनन्दराजजी सुराणा।
समर्थक—डा० कुन्दनलालजी ओसवाल, श्री रामनारायणजी जैन, श्री उत्तमचन्द्रजी जैन।

(२)

दिल्ली
ता० १०-१ ६०

जैन महावीर-भवन (बारादरी) में जैन श्रावक संघ चांदनी चौक की ओर से श्री शान्तिलाल भाई की अध्यक्षता में एक शोक सभा हुई। शोक-प्रस्ताव पारित हुआ। जिसमें उल्लेख किया गया कि—आप जैन समाज में एक चमकते सितारे थे। आप गम्भीर शान्त स्वभावी और सरल प्रकृति के संत थे। जैन समाज के ऊपर यह तो अचानक वज्रपात हुआ है।

श्री मोहरसिंह जैन मन्त्री

(३)

माटुंगा-(बम्बई)
ता० १४ १ ६०

श्री गम्भीरचन्द भाई उमेदचन्द के सभापतित्व में—ज्ञातक हॉल में एक शोक सभा हुई। जिसमें शोक प्रस्ताव पास

किया गया। इसमे उल्लेख किया गया कि—"पूज्य श्री उपाध्याय महाराज श्री प्यारचन्दजी महाराज ना गजेन्द्रगढ मां काल धर्म पाम्याना समाचार नी नोंध ले छे, अने ए प्रत्येउडी दिलगिरी दर्शावे छे, पूज्य श्री नुं चातुर्मास अहिंआ थयेल त्यारे ऐमना सौजन्यनी, ऐमनो सादाईनी अने ऐमनी भव्यतानी आपण ने प्रतीतिथई हती। ऐमनो व्याख्यान वरवतनी मंगलवाणी ना पड़धा हजी पण आपणा कान मा गुंजे छे। श्रमण-सघ ने अने श्रावक सघने पूज्य श्री उपाध्यायजी महाराज श्री प्यारचन्दजी ना काल-धर्म पाम्या थी न पूरी शकाय ऐवी खोट पड़ी छे, श्री शासनदेव ऐयना महान् आत्मा ने परम शान्ति अर्पे-ऐवी-प्रार्थना।

(४)

रतलाम
ता० ६-१-६०

हड़ताल रखी गई और प्रातः ६ बजे शोक सभा का आयोजन हुआ। अनेक वक्ताओं के भाषण हुए और शोक-प्रस्ताव पास किया गया। श्री चादमलजी चाणोदिया की योजनानुसार एक स्मारक बनाने का निश्चय किया गया एव उसके लिये फण्ड एकत्रित करना प्रारम्भ हो गया है। —श्री बापूलालजी बोथरा

(५)

बीकानेर
ता० १३-१ ६०

श्री वर्धमान स्था० जैन श्रमण संघ की ओर से एक शोक सभा की गई, जिसमें एक शोक-प्रस्ताव पास किया गया-प्रस्ताव मे अंकित किया गया कि—"यह सभा मधुर व्याख्यानी प० रत्न

उपाध्याय श्री १००८ श्री प्यारचन्दजी महा० सा० के आकस्मिक स्वर्गवास पर अपना हार्दिक शोक प्रकट करती है। श्री उपाध्यायजी महा० सा० अपनी भूतपूर्व सम्प्रदाय के तो एक विशिष्ट सन्त थे ही पर श्रमण संघ में भी एक अत्यन्त महत्वपूर्ण पद पर आसीन थे। जोकि आप श्रीजी की महानता का परिचायक था। ऐसे महापुरुष के प्रति यह शोक सभा अपनी नम्र भाव-भीनी श्रद्धाञ्जलि अर्पण करती हुई शासन देव से यह हार्दिक भावना करती है कि वे दिवंगत महान् आत्मा को शान्ति प्रदान करें।"

मन्त्री श्री संघ

(६)

उदयपुर
ता० ६-१-६०

को शोक सभा श्री वर्धमान स्थानक वासी जैन श्रावक संघ की ओर से की गई। जिसमें श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

श्री वक्तसिंहजी पानगड़िया—मंत्री श्री श्रावक संघ

(७)

उदयपुर
ता० ६—१—६०

को श्री जैन दिवाकर चतुर्थ पुस्तकालय के सदस्यों की एक शोक सभा हुई। जिसमें गंभीर शोक को व्यक्त करने वाला प्रस्ताव पास किया गया। महावीर भवन मदनपुरा में गरीबों को मिठाई दी गई तथा गायों को घास व मछलियों को चने डाले गये।

(८)

ब्यावर
ता० ६-१-६०

आज श्री जैन दिवाकर दिव्य ज्योति कार्यालय की ओर से शोक-सभा की गई। जिसमे महा० सा० के निधन पर गंभीर चिंता, और शोक प्रकट किया गया। आपके गुणानुवाद पूर्वक साहित्यिक कार्यों की प्रशसा की गई। आपका व्यक्तित्व असाधारण था। आपकी कमी सघ की वह क्षति है, जिसकी पूर्ति होना सभव नहीं है।

(६)

जावरा
ता० ६-१-६०

को श्री वर्धमान स्थानक जैन श्रावक-सघ की ओर से एक शोक सभा की गई जिसमे आपके गुणानुवाद गाये गये, साहित्यिक प्रवृत्तियों पर प्रकाश डाला गया और समाज में आपकी क्षति को वर्णनातीत बतलाया गया। आपके जीवन-चर्या की भूरि-भूरि प्रशसा की गई।—मत्री श्री जैन कान्फ्रन्स मध्य भारत व मेवाड़ प्रांतीय शाखा जावरा।

(१०)

रायचूर
ता० ८—१—६०

को उपाध्याय श्री प्यारचन्द्रजी म० सा० के स्वर्गवास के समाचारों से स्थानीय समाज में शोक फैलगया। तत्काल ही स्थानीय बाजार व गज-बाजार बन्द हो गया तथा स्थानीय करीब

१२० महानुभाव उपाध्याय श्री की शव यात्रा में सम्मिलित होने गजेन्द्रगढ़ पहुँचे।

स्थानीय वर्धमान हिन्दी पाठशाला में शोक-सभा की गई और श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गई।

—रघुनाथराव प्रधान अध्यापक

(११)

उज्जैन
१२-१-६०

स्थानीय श्रावक संघ और जैन नवयुवक संघ द्वारा आयोजित एक शोक सभा की गई। जिसमें आपके अनेक गुण स्मरण किये गये।

—श्री दीपचन्दजी जैन मंत्री

(१२)

कोटा
ता० ११-१-६०

श्रावक संघ की सभा हुई और दूसरे दिन जैन स्कूल में शोक-सभा होकर विद्यालय बन्द रखा गया।

—श्री स्वामीलालजी जैन, मन्त्री

(१३)

कोटा
ता० १४ १-६०

श्री वर्धमान जैन नवयुवक संघ की बैठक में शोक प्रस्ताव पास हुआ। स्वर्गीय आत्मा के महान् गुणों पर प्रकाश डाला गया।　　　　— श्री केसरमलजी मन्दानी मन्त्री

(१४)

गुलाबपुरा

उपाध्यायजी म० सा० के स्वर्गवास के समाचार पर स्थानीय श्री संघ ने एक शोक–सभा की, जिसमें आपके जैन धर्म की उन्नति और श्रमण सगठन के हेतु किये गये प्रयत्नों पर प्रकाश डालते हुए गुणानुवाद किया गया एव निधन को समाज की बहुत बडी हानि बतलाया।

श्री जैन सघ

(१५)

मन्दसौर
ता० ८–१–६०

उपाध्यायजी म० सा० के स्वर्गवास का तार मिलने ही जैन समाज की दुकानें वन्द हो गई। शहर के स्थानक मे शोक सभा हुई। जिसमें अनेक वक्ताओं के भाषण हुए। स्वर्गीय आत्मा की स्मृति में पानड़ी की गई, जिससे गरीबों को भोजन–वस्त्र गायों को घास व कबूतरों आदि को अनाज आदि डलवाने के कार्य किये। —श्री समरथसिंहजी चौधरी

(१६)

जलगाव
ता० ११–१–६०

स्थानीय श्री संघ की ओर से एक शोक सभा की गई। जिसमें स्वर्गीय उपाध्यायजी म० सा० के समाज संगठन की प्रवृत्ति पर एव अन्य गुणों पर प्रकाश डाला गया। सभा में प्रमुख वक्ता श्री नथमलजी सा० लूंकड़ थे।

१२० महानुभाव उपाध्याय श्री की शव यात्रा में सम्मलित होने गजेन्द्रगढ़ पहुँचे।

स्थानीय वर्धमान हिन्दी पाठशाला में शोक-सभा की गई और श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गई।

—रघुनाथराव प्रधान अध्यापक

(११)

बड़ौत

१२-१-६०

स्थानीय श्रावक संघ और जैन नवयुवक संघ द्वारा आयोजित एक शोक सभा की गई। जिसमें आपके अनेक गुण स्मरण किये गये।

—श्री दीपचन्दजी जैन मंत्री

(१२)

कोटा

ता० ११-१-६०

श्रावक संघ की-सभा हुई और दूसरे दिन जैन स्कूल में शोक-सभा होकर विद्यालय बन्द रखा गया।

—श्री स्वामीलालजी जैन मन्त्री

(१३)

कोटा

ता० १४ १-६९

श्री वर्धमान जैन नवयुवक संघ की बैठक में शोक प्रस्ताव पास हुआ। स्वर्गीय आत्मा के महान् गुणों पर प्रकाश डाला गया।

— श्री हेमराजजी मगदाली मन्त्री

(१४)

गुलाबपुरा

उपाध्यायजी म० सा० के स्वर्गवास के समाचार पर स्थानीय श्री संघ ने एक शोक–सभा की, जिसमें आपके जैन धर्म की उन्नति और श्रमण सगठन के हेतु किये गये प्रयत्नों पर प्रकाश डालते हुए गुणानुवाद किया गया एव निधन को समाज की बहुत बडी हानि बतलाया।

श्री जैन सघ

(१५)

मन्दसौर

ता० ८–१–६०

उपाध्यायजी म० सा० के स्वर्गवास का तार मिलते ही जैन समाज की दुकानें बन्द हो गई। शहर के स्थानक मे शोक सभा हुई। जिसमें अनेक वक्ताओं के भाषण हुए। स्वर्गीय आत्मा की स्मृति में पानड़ी की गई, जिससे गरीबों को भोजन–वस्त्र गायों को घास व कबूतरों आदि को अनाज आदि डलवाने के कार्य किये।

—श्री समरथसिंहजी चौधरी

(१६)

जलगांव

ता० ११–१–६०

स्थानीय श्री संघ की ओर से एक शोक सभा की गई। जिसमें स्वर्गीय उपाध्यायजी म० सा० के समाज संगठन की प्रवृत्ति पर एवं अन्य गुणों पर प्रकाश डाला गया। सभा मे प्रमुख वक्ता श्री नथमलजी सा० लूकड़ थे।

(१७)

मूसावल
ता० ६-१-६०

को स्था० जैन श्रमण संघ के उपाध्याय पंडित मुनि श्री प्यारचन्दजी महाराज के आकस्मिक स्वर्गवास के समाचार पाकर सवत्र शोक प्रकट किया गया। स्थानीय जैन नवयुवक मंडल द्वारा शोक सभा आयोजित की गई। सभा के अध्यक्ष श्रीमान् मगनलालजी मेहता द्वारा श्रद्धांजलि अर्पित की गई। नवयुवक मंडल के अध्यक्ष श्री फकीरचन्दजी जैन खानदेश ओसवाल शिक्षण संस्था के कोषाध्यक्ष श्री पूनमचंदजी नाहटा, आनरेरी मजिस्ट्रेट सौ० पारसरानी मेहता और कुमारी सुमन जैन द्वारा महाराज श्री के जीवनी का वृत्तान्त देते हुए भूसावल में सन् १६५३ में हुए चातुर्मास की पुनः स्मृति दिलाई गई। महाराज सा० के गुण-गान किये गये एवं शान्ति पाठ पूर्वक शोक-सभा विसर्जित हुई।

मंत्री जैन नवयुवक मंडल भूसावल।

(१८)

हैदराबाद-(दक्षिण)
ता० १३-१-६०

श्री स्थानक वासी जैन श्रावक संघ की ओर से शोक-सभा की गई।—

श्री मिश्रीलालजी कटारिया द्वारा प्रेषित।

(१६)

लश्कर-ग्वालियर
ता० १४-१-६०

को श्री वर्धमान स्था० जैन श्रावक संघ की ओर से एक

शोक सभा की गई। जिसमे शोक-प्रस्ताव में कहा गया कि-आपने श्रमण-संघ बनाने में जो महान् योग दिया था, वह चिर काल तक स्वर्णाक्षरों मे अंकित रहेगा। इस समय श्रमण सघ को आप जैसे महान् संतों की अत्यन्त आवश्यकता थी। श्रमण सघ तथा श्रावक सघ आपकी ओर से बहुत आशा रखते थे किन्तु काल ने सब आशाएँ समाप्त करदी।—

श्री टीकमचन्दजी बाफना द्वारा प्रेषित।

(२०)

मैसूर

शोक प्रस्ताव में कहा गया है कि-शास्त्र वेत्ता पं० रत्न उपाध्याय मुनि श्री प्यारचन्दजी के व्याख्यानों का सभी जन-समुदाय पर हृदय स्पर्शी प्रभाव होता था। मुनि श्री का दक्षिण-भारत में धर्म प्रचार का विशेष लक्ष्य था। इत्यादि ॥

जैन श्री संघ–मैसूर

(२१)

शाजापुर

श्री स्थानकवासी जैन श्रावक सघ एवं युवक-सघ की ओर से शोक-सभा का आयोजन किया गया।

—श्री मनोहरलालजी जैन द्वारा प्रेषित

(२२)

चित्तौड़गढ

श्री श्रावक संघ श्री जैन धर्म प्रचारक संघ, श्री चतुर्थ जैन वृद्धाश्रम, आदि की ओर से शोक-सभा की गई। जिसमें

श्रद्धांजलि रूप से व्यक्त किया कि उपाध्यायजी श्री श्री संघ एकता के अग्रदूत प्रखर-वक्ता शास्त्रज्ञ एवं साहित्य सेवी थे। आपने अनेक ग्रन्थों की रचना की आप प्रभावशाली एवं महान् उपकारी सन्त थे। उपाध्याय श्रीजी भी चतुर्थ जैन वृद्धाश्रम के प्राण थे। विधि ने एक कर्मठ पथ प्रदर्शक को हमारे बीच से उठाकर हमको अन्धकार के गर्त में डाल दिया है। इत्यादि।

— श्री हरकलालजी सुरपरिया– अध्यक्ष
—श्री शान्तिलालजी माहर– मन्त्री
—श्री चम्पालालजी बम्ब– व्यवस्थापक

(२३)

चित्तौड़
ता० ११-१-६०

श्री संघ की ओर से एक शोक सभा हुई। जिसमें उपाध्यायजी म० सा० के प्रति भावमय भक्ति व्यक्त की गई।

—श्री कुंदनलालजी द्वारा प्रेषित

(२४)

बोहारम्
ता० ४—१—६०

दोपहर में १॥ बजे उपाध्यायजी म० सा० के स्वर्गवास के समाचार तार द्वारा प्राप्त हुए। तत्काल सदर बाजार बन्द होगये और स्थानक में शोक सभा हुई। जिसमें स्वर्गस्थ आत्मा को चिर शान्ति की कामना की गई।

—श्री सुगनचन्दजी माहर द्वारा प्राप्त

(२५)

नाथद्वारा
ता० १३-१-६०

श्री संघ की ओर से रात्रि के आठ बजे नोहरे में एक विशाल शोक-सभा हुई। शोक प्रस्ताव पास किया गया, जिसमें भाव भीनी भक्ति प्रदर्शित करते हुए उल्लेख किया गया कि समूचा स्थानकवासी समाज आपका चिर-ऋणी रहेगा। आपके निधन से समाज में एक कुशल संगठनकर्ता, साहित्य-निर्माता और योग्य मनीषी की कमी हुई है।

—मन्त्री द्वारा प्राप्त

(२६)

नीमच

स्थानीय श्री संघ की ओर से महिलाओं एवं पुरुषों की एक शोक सभा हुई। शोक प्रदर्शित किया गया और दो मिनिट का मौन रक्खा गया।

—मन्त्री द्वारा प्राप्त

(२७)

रामपुरा
ता० ९-१-६०

तार प्राप्त होते ही शोक छा गया, श्री संघ ने अपना कारो-बार बन्द रक्खा, १२ बजे स्थानक में शोक सभा हुई। शोक-प्रस्ताव में अंकित किया गया कि-मुनि श्री हमारी समाज के गौरवरूप, श्रमण संघ के स्तम्भरूप, व स्व० श्री दिवाकरजी महाराज सा० के सन्तों के आधारभूत थे। उपाध्यायजी म० सा० का तप, त्याग व साहित्य सेवा आदर्श थी।

(१८)

मनासा

बाजार बन्द रहा। श्री संघ की ओर से शोक सभा की गई। शोक-प्रस्ताव में कहा गया कि—आप महान् विद्वान् व बड़े गुण ग्राही साधु थे। आपके निधन से स्थानकवासी समाज में एक अमूल्य रत्न की कमी हो गई।

—श्री भँवरलालजी रूपावत द्वारा प्राप्त।

(२६)

संजीत
ता० ३-२-६०

बाजार बन्द रक्खा गया। विधवा सहायक फण्ड के लिये ४२ इकट्ठे किये गये। शोक सभा की गई। शोक-प्रस्ताव में कहा गया कि महाराज सा० के स्वर्गवास से श्रमण संघ ने एक रत्न को खो दिया है।

—श्री सोभागमलजी द्वारा प्रेषित

(२०)

बड़ी सादड़ी—

स्थानक न बन्द रहा। २०१) का चन्दा हुआ। जिससे कबूतरों को मक्की और गायों को घास डाला गया। गरीबों को भोजन कराया गया और वस्त्र बांटे गये। कुत्तों को रोटियां डाली गई। श्री संघ की ओर से शोक सभा की गई।

—श्री मनोहरलालजी द्वारा प्राप्त

(३१) भाटखेड़ी
ता० ६-१-६०

श्री सघ की ओर से शोक सभा हुई, जिसमें भाटखेड़ी, मनासा, मह्ागढ़, सावण, जमून्या, अरेर, पडदा आदि गावों के श्रावक बन्धु सम्मिलित हुए, और श्रद्धाञ्जलि व्यक्त की गई। विशेष वक्तव्य पहले दिया जा चुका है। बाजार बंद रहा।

—श्री संघ द्वारा प्राप्त

(३२) रायपुर
ता० १३-१-६०

श्री संघ की ओर से शोक सभा की गई। जिसमें "एक महान् श्रमण" के रूप में श्रद्धाञ्जलि प्रदान की गई।

—प्रेषक-श्री जौहरीलालजी

(३३) करमाला
ता० ८-१-६०

श्री सघ की ओर से एक शोक सभा की गई, शोक प्रस्ताव पास हुआ। स्वर्गीय आत्मा के लिये अखण्ड शान्ति की कामना की गई।

—प्रेषक-श्री धनराजजी कटारिया

(३४) सैलाना, (३५) सिंधनूर, (३६) बरमावल, (३७) भोपालगंज और (३८) पीपल खूटा (३९) गगापुर (४०) लिंगशूर छावणि इत्यादि अनेकानेक कस्बों में एव नगरों में स्वर्गीय उपाध्यायजी महा० सा० के स्वर्गवास के दुखद समाचार पहुँचते ही बाजार बद हो गये एव शोक सभाएँ की गई। जिनमें महा० सा० के गुणानुवाद किये गये तथा शोक-प्रस्ताव पास किये गये।

—सपादक द्वारा सकलित।

व्यक्तिगत-शोक-पत्र

(१) बम्बई शा० भोगीलाल फरागजी कु० ता० २० १ ६०
(२) रतलाम कुशालचन्द पन्नालाल ललवानी ता० १४ १ ६०
(३) इन्दौर श्री राजमलजी जैन ता० ९ १ ६०
(४) " श्री भंवरलालजी धाकड़ ता० २०-१ ६०
(५) मलगांव श्री मथमलजी लुणवत ता० १४-१ ६०
(६) मूसावल श्री फकीरचन्दजी जैन ता० १४ १ ६०
(७) " श्री केवलचन्दजी छलाणी ता० १६ १ ६०
(८) " श्री इन्द्रचन्दजी जैन ता० १८-१ ६०
(९) भरतपुर श्री हरिनारायणजी ता० १०-१ ६०
(१०) छोटी सादड़ी रतनलाल संघवी ता० ९ १-६०
(११) चित्तौड़गढ़ श्री पन्नालालजी बम्ब ता० ९ १ ६०
(१२) मनासा श्री भंवरलालजी दुगारद ता० ९ ६०

(१३) बरनाला वैद्य श्री अमरचन्द्रजी जैन
(१४) ईलकल श्री धनराजजी कटारिया ता० १४-१-६०
(१५) बालोतरा श्री मिट्ठालालजी बाफना ता० १५-१-६०
(१६) करमाला श्री मोहनलालजी
(१७) मलेश्वरम् श्री भंवरीलालजी ता० १५-१ ६०
(१८) करमाला श्री चम्पालालजी बोरा ता० १५-१ ६०
(१९) गंगापुर श्री अमरचन्दजी इन्दरमलजी ता० १७ १ ६०
आपने १०१) श्री वृद्धाश्रम चित्तौड़गढ़ को भेजे। धन्यवाद।
(२०) बम्बई श्री कचल चेन ता० १८-१-६०
(२१) " के एम गाधी ता० १० १ ६०
(२२) बीकानेर श्री सतीदासजी तातेड़ ता० ११-१-६०
(२३) अहमदाबाद श्री मोहनलालजी मास्टर ता० १३ १-६०
(२४) मद्रास श्री गजराजजी मूथा माघवदी २
(२५) आकोला शाह हिमतलाल ता० १६-१ ६०
(२६) " श्री हीरालालजी दीपचन्दजी ता० १६ १-६०
(२७) भोपालगज श्री सोहनसिंहजी ता० १३-१-६०
(२८) धार श्री चम्पालालजी
(२९) मन्दसौर श्री गुलाबचन्दजी ता० १८-१-६०
(३०) नारायणगढ़ श्री ओंकारलालजी ता० १६-१-६०
(३१) निम्बाहेडा श्री कचरमलजी घीसालालजी लोढ़ा ता० १५ १-६०
(३२) माडल श्री सूरजमलजी शंकरलालजी जैन ता० १५-१-६०
(३३) नाथद्वारा श्री कन्हैयालालजी सुराणा ता० २०-१-६०
(३४) करमाला शाह बुधमलजी मुलतानचन्दजी ता० १५-१-६०
(३५) इगतपुरी श्रीघेवरचन्दजी कुन्दनमलजी छाजेड़ ता० १२-१-६०
(३६) भाटखेड़ी श्री नोंदरामजी दौलतरामजी बम्ब ता० १३-१-६०

(२७) बड़गांव पं० सिद्धरामजी रा० १२-१ ६०
(२८) बैंगलोर-(मुख्य बाजार) श्री चन्दनमलजी सा० मकरेचा ने उपाध्याय श्री जी की स्मृति में एक हजार रुपया शुभ कार्यों में लगाने के लिये गजेन्द्रगढ़ में जाहिर किया। धन्यवाद।

इन पत्रों में स्वर्गीय उपाध्यायजी महाराज सा० के प्रति श्रद्धा भक्ति और प्रेम सम्बन्धी भावनाएँ व्यक्त की गई हैं। उनके गुणानुवाद गाये गये हैं। उनकी श्री श्रमण-संघ के प्रति रही हुई संगठन भावना पर एवं उनके ज्ञान-दर्शन चारित्र पर भाव मय विचार व्यक्त किये गये हैं। किसी २ पत्र में उपाध्यायजी महा० सा० के उग्र विहार पर एवं तज्जनित जागृति पर हार्दिक विचार प्रकट किये गये हैं। यों भिन्न २ रीति से उपाध्यायजी म० सा० के चरण-कमलों में श्रद्धालु भक्तों ने अपनी पुष्पाञ्जलि सश्रद्धा समर्पित की है। विस्तार-भय से ज्यों के त्यों नहीं उद्धृत किये जा सके हैं—इसके लिये क्षमा करें।

—संपादक

उपाध्याय श्री प्यारचन्दजी म० सा० की जीवन-रेखा

:o:

(ले०—श्री उदय मुनिजी महा० सा० सिद्धान्त-शास्त्री)

(१) माताजी का नाम-श्री मानवती कुंवर बाई।
(२) पिताजी का नाम-श्री पूनमचन्दजी सा०
(३) गोत्र— ओसवाल—चोथरा
(४) जन्म-संवत्— विक्रमीय १९५२
(५) जन्म स्थान— रतलाम (मालवा-मध्य प्रदेश)
(६) जन्म-नाम— श्री प्यारचन्दजी
(७) गुरुदेव-नाम— जैन दिवाकर प्रसिद्ध वक्ता प० रत्न श्री चौथमलजी महा० सा०
(८) दीक्षा स्थान— वीर भूमि चित्तौडगढ़
(९) दीक्षा-सम्वत्— विक्रमीय १९६९ फाल्गुण शुक्ला पचमी
(१०) चातुर्मास-सख्या- सैंतालीस

(११) पदवियाँ— गणी उपाध्याय श्रमण-संघीय सहमन्त्री मध्य भारत मंत्री श्रमण संघीय उपाध्याय।

(१२) भाषा ज्ञान— हिन्दी, गुजराती प्राकृत, संस्कृत, मराठी और कन्नड़ यों छह भाषाओं के ज्ञाता थे।

(१३) साहित्य-रचना— सम्पादन दशांग कल्पसूत्र प्राकृत व्याकरण जैन जगत के उज्ज्वल तारे जैन जगत की महिलाएँ मृगापुत्र विहार पत्र आदि।

(१४) संस्थाओं पर उपकार— गुरुकुल चित्तौड़गढ़ रतलाम नागौर के छात्रावास कोटा संस्था दिवाकर दिव्य ज्योति कार्यालय ब्यावर सिवनूर जैन पाठशाला और स्व-धर्मी-सहायता फण्ड-रायपुर।

(१५) सर्व प्रथम श्रमण संघ-निर्माण— ब्यावर में पूज्य श्री आनन्द ऋषिजी महा० सा० के आचार्यत्व में संवत् २००६ के चैत्र कृष्णा पक्ष में पांच संप्रदायों का एकीकरण का परम पुनीत कार्य संपन्न किया।

(१६) अखिल भारतीय वर्धमान श्रमण संघ हेतु प्रयत्न— संवत् २००९ के वैशाख सुदी ३ पर संपन्न साधु-सम्मेलन की सफलतार्थ सादड़ी (मारवाड़) में प्रमुख और अग्र-गण्य भाग लिया।

(१७) विहार-क्षेत्र— दिल्ली यु०पी० राजस्थान, मेवाड़ मालवा मध्य-प्रदेश बरार खानदेश, बम्बई

गुजरात सौराष्ट्र, महाराष्ट्र, प्रदेश, और कर्णाटक प्रान्त आदि २

(१८) संथारा— प्रथम सागारी और पश्चात् यावज्जीवन, संवत २०१६ के पौप शुक्ला दशमी शुक्रवार को दिन के ६½ से ६¾ बजे तक।

(१६) स्वर्गवास-स्थान- गजेन्द्रगढ-(मैसूर स्टेट)

(२०) स्वर्गवास तिथि- पौप शुक्ला दशमी शुक्रवार संवत् २०१६ के दिन को ६¾ बजे

(२१) रथ यात्रा— लगभग बीस हजार जितनी जन-संख्या सम्मिलित थी, जिसमे अनेक स्थानों के श्री संघों के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

(२२) शिष्य वर्ग—
(१) श्री मन्नालालजी म० सा० सेवा भावी।
(२) श्री वक्तावरमलजी म० सा० तपस्वी (स्वर्गवासी)
(३) श्री गणेश मुनिजी म० सा० व्याख्यानी
(४) श्री पन्नालालजी म० सा० तपस्वी।
(५) श्री उदय मुनिजी महा० सा० शास्त्री।